भारतीय रेल

नवम्बर 2023

मूल्य ₹ 20

स्वच्छता ही सेवा

14 मिनट में

त्वरित गति सफाई योजना

वंदे भारत एक्सप्रेस

का टर्न अराउंड टाइम घटा









AAL®

Autometers Alliance Ltd

Energy & Efficiency / Safety & Reliability

POWERING THE **RAIL TRANSPORT** EFFICIENTLY AND INTELLIGENTLY



DATA ACQUISITION & CONTROL DEVICE

Onboard Measurement Devices



Tachograph System for Electric, Diesel Locomotives, EMU, MEMU & DMU



Active Speed Sensor for Electric Locomotives



Opto Electronic Pulse Generator for Electric, Diesel Locomotives, EMU, MEMU & DMU



Hotel Load Current Sensor for Electric Locomotives



Primary Current Sensor for Electric Locomotives



Aspiration Smoke Detector for Coaches

Onboard Control Devices



Driver Display Unit LCD Displays for Electric Locomotives



Vigilance Control Device for Electric Locomotives



Fire Detector Equipment for Electric Locomotives



Diagnostics Terminal LCD Displays for Electric Locomotives

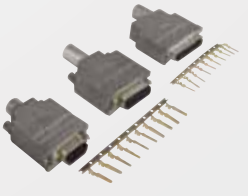


Event Recorder for Electric, Diesel Locomotives & EMUs

Electrical Connectors



Circular Connectors for Onboard & Stationary Traction



D Type Connectors for Onboard & Stationary Traction

mktre@autometers.com | C-63, Sector-57, Noida - 201 307 (U.P.) India

ISO 9001:2015 I ISO 14001:2015 I ISO 45001:2018

भारतीय रेल

रेल मंत्रालय की एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

आरंभ: अगस्त-1960 | वर्ष: 64 | अंक: 04 | राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित पत्रिका | नवम्बर-2023 | मूल्य: ₹20

संपादक मंडल

श्रीमती जया वर्मा सिन्हा
अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड

सुश्री अंजलि गोयल
सदस्य (वित्त), रेलवे बोर्ड

श्री मिलिन्द के देऊस्कर
सचिव, रेलवे बोर्ड

श्री शिवाजी मारुती सुतार
निदेशक, सूचना एवं प्रचार

संपादक
योगेश अवस्थी

संपादकीय कार्यालय
संपादक, भारतीय रेल,
कमरा नं. 411, रेल भवन,
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001
editorbhartiyarailrb@gmail.com
editorbhartiyarail@gmail.com

विज्ञापन व सदस्यता हेतु संपर्क
ललित कुमार धनकड़
व्यापार प्रबंधक
कमरा नं. 310, रेल भवन
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001
टेलीफोन: 011-47845378, 47845089
bmpr310rb@gmail.com

आवरण
14 मिनट में त्वरित गति से
वंदे भारत ट्रेन की सफाई

फॉलो करें
Twitter :
@bhartiyarailrb

वार्षिक सदस्यता शुल्क
(ऑफलाइन)
सर्वसाधारण -₹250
रेलकर्मियों के लिए -₹200

विदेश में
सी-मेल द्वारा -₹1,250
एयर-मेल द्वारा -₹2,500

एक प्रति-₹20
वार्षिक विशेषांक-₹70

इस पत्रिका में छपी हर सामग्री का सम्बन्ध, जब तक विशेषत: स्पष्ट न लिखा जाए, किसी सरकारी सूत्र से न समझा जाए।

© भारतीय रेल

5 **माननीय प्रधानमंत्री ने तेलंगाना में विभिन्न रेल परियोजनाओं** का शिलान्यास और लोकार्पण किया

5 **माननीय प्रधानमंत्री ने चित्तौड़गढ़ से विभिन्न रेल** परियोजनाएँ राष्ट्र को समर्पित कीं

6 **माननीय प्रधानमंत्री ने निज़ामाबाद, तेलंगाना में किया विभिन्न** रेल अवसंरचना परियोजनाओं को राष्ट्र को समर्पित

6 **माननीय प्रधानमंत्री ने छत्तीसगढ़ के जगदलपुर रेलवे स्टेशन** के पुनर्विकास कार्य की आधारशिला रखी

7 **माननीय प्रधानमंत्री ने जोधपुर में दिखाई रुणिचा एक्सप्रेस** और नई हेरिटेज ट्रेन को हरी झंडी

7 **माननीय प्रधानमंत्री ने मध्य प्रदेश की विभिन्न रेल** परियोजनाएँ राष्ट्र को समर्पित कीं

8 **माननीय प्रधानमंत्री ने महाराष्ट्र के शिरडी में लगभग ₹7,500** करोड़ की अनेक विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखी

9 **रेल मंत्री ने जम्मू और कश्मीर के उपराज्यपाल, असम और त्रिपुरा के** मुख्यमंत्रियों के साथ नई रेलगाड़ियों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया

11 **वंदे भारत हेतु '14 मिनट में त्वरित गति से सफाई' योजना प्रारंभ**

14 **दक्षिण पूर्व रेलवे के तीन स्टेशनों पर वंदे भारत सफाई** योजना '14 मिनट में त्वरित गति से सफाई' का शुभारंभ

15 **रेल मंत्रालय ने विशेष स्वच्छता अभियान 3.0** के दौरान अनेक उपलब्धियाँ हासिल कीं

16 **19वें एशियाई खेलों में भारत के 107 पदकों में भारतीय रेल** के खिलाड़ियों ने 22 पदकों का योगदान दिया

22 **भारतीय रेल के सार्वजनिक उपक्रम, राइट्स लिमिटेड** और इरकॉन को मिला नवरत्न का दर्जा

29 **गुजरात के आणंद के पास हाई-स्पीड रेल ट्रैक स्लैब** विनिर्माण सुविधा शुरु

31 **एनएचएसआरसीएल द्वारा मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल** कॉरिडोर का पहला स्टील ब्रिज बन कर तैयार

32 **भारतीय रेल ने जारी की अखिल भारतीय रेल समय-सारणी**

33 **ऑपरेशन नन्हें फरिश्ते आरपीएफ ने सितम्बर में बचाए 895 बच्चे**

35 **रेलों के अंचल से**

42 **खेलों में भारतीय रेल**

47 **प्रगति रिपोर्ट**

57 **स्टेशनों का पुनर्विकास**

62 **तेज और शानदार वंदे भारत एक्सप्रेस** — श्री मैनफ्रेड ऑस्टर

64 **सौर ऊर्जा-भारतीय रेल में अवलोकन व परिदृश्य** — श्रीमती ज्योति भास्कर, श्री दिनेश कुमार

69 **रेल भवन की रोचक जानकारी** — श्री विमलेश चन्द्र

72 **झाँसी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और रानी लक्ष्मीबाई** — श्री सुरेन्द्र अग्निहोत्री

संपादकीय



स्वच्छता के नए आयाम स्थापति करती : भारतीय रेल

तेज गति तथा अत्याधुनिक विश्वस्तरीय यात्री सुविधाओं के साथ-साथ भारतीय रेल स्वच्छता के मामले में भी उच्च मानक स्थापित कर रही है। भारतीय रेल के स्टेशनों तथा ट्रेनों में बड़ी संख्या में लोगों का आवागमन होता है, ऐसे में स्वच्छता बनाए रखना अपने आप में चुनौती होती है, लेकिन योजनाबद्ध तथा जवाबदेही सुनिश्चित करती नीति के कारण आज हमें स्वच्छता का यह स्तर नजर आ रहा है। स्वच्छता बनाए रखने में हमारे यात्रियों का सहयोग भी सराहनीय है। हाल ही में रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने दिल्ली कैंट रेलवे स्टेशन पर आयोजित एक कार्यक्रम में सभी वंदे भारत एक्सप्रेस के लिए '14 मिनट की चमत्कारी सफाई' योजना का प्रारंभ करवाया जो अपने आप में अनूठा प्रयोग है।

14 मिनट की चमत्कारी सफाई योजना में अनुशासन और सटीकता के साथ कोच की सफाई शामिल है। तेजी से सफाई करने वाले इस अभियान से वंदे भारत ट्रेनों के फिर-से-तैयार होने (टर्न-अराउंड) के समय में कमी आयेगी। इस प्रक्रिया में कोचों के आंतरिक और बाहरी हिस्सों की सूखी और गीली सफाई के लिए कोचों में कर्मचारियों की तैनाती तथा स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए कचरा बैग और कचरे के उपयुक्त डिस्पोजेबल को इकट्ठा करना शामिल है।

साफ-सुथरी रेल बनी रहे इसके लिए ट्रेनों तथा स्टेशनों पर निश्चित समय पर सफाई की जा रही है। ट्रेनों के चलने के दौरान कोच शौचालयों, गलियारों और यात्री डिब्बों की सफाई के लिए 1100 से अधिक जोड़ी लंबी दूरी की मेल-एक्सप्रेस ट्रेनों में 'ऑन बोर्ड हाउसकीपिंग सर्विस' प्रदान की गई है। जिसमें यात्रा के दौरान भी समय-समय पर कर्मी सफाई करते रहते हैं। लगभग 196 कोचिंग डिपो में पेशेवर एजेंसियों के माध्यम से दोनों सिरों पर कोचों की मशीनीकृत सफाई की जा रही है। उच्च दबाव वाले जेट क्लीनर, फ्लोर स्क्रबर, गीले और सूखे वैक्यूम क्लीनर, हैंड हेल्ड बफिंग मशीन आदि जैसी मशीनें इस उद्देश्य के लिए लगाई गई हैं।

भारतीय रेल ने हर वर्ष की तरह ही इस वर्ष भी स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया, जिसका प्रारंभ अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्रीमती जया वर्मा सिन्हा ने किया था। रेल मंत्री ने 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान के तहत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'एक तारीख एक घंटा एक साथ' के आह्वान के तहत पहली अक्टूबर, 2023 को गुड़गांव रेलवे स्टेशन पर 'स्वच्छता के लिए श्रमदान' कार्यक्रम में भाग लिया।

31 अक्टूबर, 2023 तक चले इस विशेष अभियान को 3.0 नाम दिया गया। इस अभियान में स्वच्छता का पालन और लंबित मामलों के निस्तारण का कार्य तेज गति से किया गया। स्वच्छता अभियान के तीसरे सप्ताह में 11,748 स्वच्छता अभियान चलाए गए। इस दौरान कार्यालयों और कार्य स्थलों में बेकार सामग्री के निपटारे पर विशेष ध्यान दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप 4.68 लाख वर्ग फुट स्थान को अन्य उपयोग हेतु मुक्त किया गया है तथा लगभग 15.15 करोड़ रुपये का राजस्व भी अर्जित किया गया।

एक समय था, जब ट्रेनों में मानव अपशिष्ट एक समस्या बनी हुई थी। यात्री कोच से मानव अपशिष्ट पटरियों पर न गिरे इस उद्देश्य से भारतीय रेल ने युद्ध स्तर पर कार्य करते हुए सभी कोचों में बायो टॉयलेट लगा दिए हैं। इसके अलावा, भारतीय रेल द्वारा प्रीमियम रेकों के नव निर्मित एसी एलएचबी सवारी डिब्बों में बायो वैक्यूम शौचालय लगाए जा रहे हैं। इसमें पानी की आवश्यकता काफी कम होती है, जिससे स्वच्छता के साथ-साथ पर्यावरण का संरक्षण भी हो रहा है।

हाल ही में हांगझू, चीन में आयोजित 19वें एशियाई खेल, 2022 में भारतीय दल ने अपनी शानदार उपलब्धि हासिल की। इस दल में भारतीय रेल के कुल 98 सदस्य थे, जिसमें 90 खिलाड़ी, 07 कोच और डिप्टी शेफ डी मिशन के रूप में सुश्री डोला बनर्जी शामिल थीं। एशियाई खेलों में भारत के 107 पदकों में भारतीय रेल के खिलाड़ियों ने 22 पदकों का योगदान दिया है।

एशियाई खेलों में भाग लेने वाले और पदक जीतने वाले खिलाड़ियों के अनुपात के नजरिये से देखें तो गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष पदक तालिका में भारतीय रेल का योगदान 58 प्रतिशत बढ़ा है। इस शानदार प्रदर्शन के लिए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने इन खिलाड़ियों को बधाई दी।

आपको हमारा यह अंक कैसा लगा, हमें जरूर बताएँ।

माननीय प्रधानमंत्री ने तेलंगाना में विभिन्न रेल परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया

माननीय प्रधानमंत्री ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से हैदराबाद (काचीगुडा) - रायचूर ट्रेन सेवा को हरी झंडी दिखाई



तेलंगाना से ₹ 13,500 करोड़ से अधिक की लागत वाली विभिन्न विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 1 अक्टूबर, 2023 को महबूबनगर, तेलंगाना में ₹13,500 करोड़ से अधिक की विभिन्न विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया। कार्यक्रम के दौरान, प्रधानमंत्री ने '37 किलोमीटर लम्बी जक्लैर - कृष्णा नई रेलवे लाइन' का लोकार्पण किया। ₹500 करोड़ से अधिक की लागत से निर्मित, नयी रेल लाइन पहली बार नारायणपेट जिले के पिछड़े क्षेत्रों को रेल सुविधा से जोड़ती है। प्रधानमंत्री ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कृष्णा स्टेशन से हैदराबाद (काचीगुडा) - रायचूर - हैदराबाद (काचीगुडा) ट्रेन सेवा को भी हरी झंडी दिखाई। ट्रेन सेवा तेलंगाना के हैदराबाद, रंगारेड्डी, महबूबनगर और नारायणपेट जिलों को कर्नाटक के रायचूर जिले से जोड़ेगी।

इस अवसर पर तेलंगाना की राज्यपाल सुश्री तमिलिसाई सुंदरराजन, केंद्रीय मंत्री श्री जी किशन रेड्डी, संसद सदस्य श्री बंदी संजय कुमार तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

माननीय प्रधानमंत्री ने चित्तौड़गढ़ से विभिन्न रेल परियोजनाएँ राष्ट्र को समर्पित कीं

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिनांक 2 अक्टूबर, 2023 को राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में आयोजित एक कार्यक्रम में चित्तौड़गढ़-नीमच रेलवे लाइन और कोटा-चित्तौड़गढ़ विद्युतीकृत रेलवे लाइन के दोहरीकरण से जुड़ी परियोजनाएँ राष्ट्र को समर्पित कीं। इन परियोजनाओं पर ₹650 करोड़ से अधिक की लागत आई है। इससे क्षेत्र में रेल बुनियादी ढाँचा सुदृढ़ होगा और राजस्थान में ऐतिहासिक स्थलों पर पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। इसके अतिरिक्त माननीय प्रधानमंत्री ने सवाई माधोपुर में रेलवे ओवर ब्रिज (आरओबी) को दो लेन से चार लेन तक बनाने की आधारशिला रखी। इस परियोजना से वाहनों की आवाजाही सुगम होगी।



चित्तौड़गढ़ में आयोजित कार्यक्रम में विभिन्न रेल परियोजनाएँ राष्ट्र को समर्पित करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री ने निजामाबाद, तेलंगाना में किया विभिन्न रेल अवसंरचना परियोजनाओं को राष्ट्र को समर्पित

माननीय प्रधानमंत्री ने सिद्दीपेट-सिकंदराबाद-सिद्दीपेट ट्रेन सेवा को झंडी दिखाकर रवाना किया

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिनांक 3 अक्टूबर, 2023 को निजामाबाद, तेलंगाना में मनोहराबाद और सिद्दीपेट को जोड़ने वाली नई रेलवे लाइन और ध र्माबाद-मनोहराबाद तथा महबूबनगर-कुरनूल के बीच विद्युतीकरण परियोजना सहित विभिन्न रेल परियोजनाओं का लोकार्पण किया। 76 कि.मी. लंबी मनोहराबाद - सिद्दीपेट रेल लाइन से क्षेत्र में, विशेष रूप से मेडक और सिद्दीपेट जिलों में सामाजिक - आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। धर्माबाद-मनोहराबाद और महबूबनगर-कुरनूल के बीच विद्युतीकरण से राज्य में परिवहन संपर्क बढ़ेगा और साथ ही दोनों ट्रेनों की औसत गति भी बढ़ेगी। उन्होंने कहा, 'भारतीय रेल सभी रेलवे लाइनों के 100 प्रतिशत विद्युतीकरण के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रही है।' मनोहराबाद और सिद्दीपेट के बीच नया रेल लिंक व्यापार और उद्योग को बढ़ावा देगा।



तेलंगाना में रेल परियोजनाओं का उद्घाटन करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी। मंच पर साथ हैं तेलंगाना के राज्यपाल डॉ. तमिलिसाई सुंदरराजन, केंद्रीय मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी

इस अवसर पर श्री मोदी ने सिद्दीपेट-सिकंदराबाद- सिद्दीपेट ट्रेन सेवा को भी झंडी दिखाकर रवाना किया।

माननीय प्रधानमंत्री ने छत्तीसगढ़ के जगदलपुर रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास कार्य की आधारशिला रखी

माननीय प्रधानमंत्री ने तारोकी-रायपुर डेमू ट्रेन सेवा को हरी झंडी दिखाई



छत्तीसगढ़ में कई रेल व सड़क परियोजनाओं की आधारशिला रखने के बाद तारोकी-रायपुर डेमू ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी। साथ में हैं छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्री बिश्वभूषण हरिचंदन और सांसद श्री मोहन मंडावी

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिनांक 3 अक्टूबर, 2023 को छत्तीसगढ़ के जगदलपुर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान कई रेल परियोजनाओं का शिलान्यास किया गया और राष्ट्र को समर्पित की गईं। प्रधानमंत्री ने अंतागढ़ और तारोकी के बीच एक नई रेल लाइन और जगदलपुर और दंतेवाड़ा के बीच एक रेल लाइन दोहरीकरण परियोजना राष्ट्र को समर्पित की। तथा बोरीडांड-सूरजपुर रेल लाइन दोहरीकरण परियोजना और अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत जगदलपुर स्टेशन के पुनर्विकास की आधारशिला रखी। प्रधानमंत्री ने तारोकी-रायपुर डेमू ट्रेन सेवा को भी झंडी दिखाई। इन रेल परियोजनाओं से राज्य के आदिवासी क्षेत्रों में कनेक्टिविटी में सुधार होगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ ने रेलवे ट्रैक के 100 फीसदी विद्युतीकरण का काम पूरा कर लिया है। राज्य में वंदे भारत ट्रेन भी चल रही है। अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत छत्तीसगढ़ के 30 से अधिक स्टेशनों का उन्नयन किया जा रहा है। जिनमें से 7 स्टेशनों के पुनर्विकास का शिलान्यास पहले ही हो चुका है। प्रधानमंत्री ने कहा कि बिलासपुर, रायपुर और दुर्ग स्टेशन के साथ, अब जगदलपुर स्टेशन को भी इस सूची में जोड़ा गया है।

माननीय प्रधानमंत्री ने जोधपुर में दिखाई रुणिचा एक्सप्रेस और नई हेरिटेज ट्रेन को हरी झंडी

माननीय प्रधानमंत्री ने किया 145 किमी लंबी डेगाना-राय का बाग रेल लाइन और 58 किमी लंबी डेगाना-कुचामन सिटी रेल लाइन के दोहरीकरण के कार्य को राष्ट्र को समर्पित



राजस्थान में विभिन्न रेल परियोजनाओं की आधारशिला रखते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी। इस अवसर पर राजस्थान के राज्यपाल श्री कलराज मिश्र, केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत और कैलाश चौधरी के साथ-साथ अन्य अतिथिगण उपस्थित थे

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिनांक 5 अक्टूबर, 2023 को राजस्थान के जोधपुर में आयोजित कार्यक्रम में 145 कि. मी. लंबी डेगाना-राय का बाग और 58 कि.मी. लंबी डेगाना-कुचामन सिटी रेल लाइनों के दोहरीकरण सहित दो अन्य रेल परियोजनाओं को राष्ट्र को समर्पित किया। श्री मोदी ने राजस्थान में दो नई ट्रेन सेवाओं-जैसलमेर को दिल्ली से जोड़ने वाली रुणिचा एक्सप्रेस और मारवाड़ जंक्शन को खम्बली घाट से जोड़ने वाली एक नई हेरिटेज ट्रेन को हरी झंडी भी दिखाई। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि जल्द ही वंदे भारत एक्सप्रेस भी शुरू हो जाएगी।

उन्होंने कहा कि इस वर्ष राजस्थान में रेलवे के लिए लगभग ₹9,500 करोड़ का बजट आवंटित किया गया है। पिछले 9 साल में 3,700 कि.मी. से अधिक लाइनों का विद्युतीकरण किया गया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत राजस्थान में 80 से ज्यादा रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास किया जा रहा है।

माननीय प्रधानमंत्री ने मध्य प्रदेश की विभिन्न रेल परियोजनाएँ राष्ट्र को समर्पित कीं



जबलपुर, मध्य प्रदेश से ₹1,850 करोड़ से अधिक की रेल परियोजनाओं का शिलान्यास करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिनांक 5 अक्टूबर, 2023 को मध्य प्रदेश के जबलपुर में आयोजित कार्यक्रम में ₹1,850 करोड़ से अधिक की रेल परियोजनाएँ राष्ट्र को समर्पित कीं। इनमें कटनी-विजयसोटा (102 किमी) और मारवासग्राम-सिंगरौली (78.50 किमी) को जोड़ने वाली रेल लाइनों का दोहरीकरण शामिल है। ये दोनों परियोजनाएँ कटनी-सिंगरौली खंड को जोड़ने वाली रेल लाइन के दोहरीकरण की परियोजना का हिस्सा हैं। इन परियोजनाओं से मध्य प्रदेश में रेल अवसंरचना में सुधार होगा, जिससे राज्य में व्यापार और पर्यटन को लाभ होगा।

माननीय प्रधानमंत्री ने महाराष्ट्र के शिरडी में लगभग ₹7,500 करोड़ की अनेक विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखी और राष्ट्र को समर्पित कीं



माननीय प्रधान मंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ने जलगांव को भुसावल से जोड़ने वाली विद्युतीकृत रेलवे लाइन को राष्ट्र को समर्पित किया। इस अवसर पर महाराष्ट्र के राज्यपाल, श्री रमेश बैस, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री, श्री एकनाथ शिंदे और महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री, श्री देवेंद्र फड़नवीस और श्री अजीत पवार भी उपस्थित थे।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिनांक 26 अक्टूबर, 2023 को महाराष्ट्र के शिरडी, अहमदनगर में स्वास्थ्य, रेल, सड़क, तेल और गैस जैसे क्षेत्रों में लगभग ₹7,500 करोड़ की अनेक विकास परियोजनाओं का उद्घाटन किया, उन्हें राष्ट्र को समर्पित किया। इन विकास परियोजनाओं में कुर्दुवाड़ी–लातूर रोड रेलवे खंड (186 किमी.) का विद्युतीकरण; जलगाँव को भुसावल से जोड़ने वाली तीसरी और चौथी रेलवे लाइन (24.46 किमी) शामिल हैं। इससे पहले दिन में, श्री मोदी ने शिरडी के श्री साईबाबा समाधि मंदिर में पूजा और दर्शन किए और निलवंडे बांध का जल पूजन किया।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने मुंबई और शिरडी को जोड़ने वाली वंदे भारत ट्रेन को हरी झंडी दिखाने का भी जिक्र किया और इस बात पर प्रकाश डाला कि महाराष्ट्र में रेलवे का नेटवर्क लगातार बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि जलगाँव और भुसावल के बीच तीसरी और चौथी रेलवे लाइन शुरू होने से मुंबई–हावड़ा रेल मार्ग पर आवाजाही आसान हो जाएगी। इस अवसर पर अन्य लोगों के अलावा महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री रमेश बैस, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री एकनाथ शिंदे और महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र फड़णवीस और श्री अजीत पवार उपस्थित थे।





रेल मंत्री ने जम्मू और कश्मीर के उपराज्यपाल, असम और त्रिपुरा के मुख्यमंत्रियों के साथ नई रेलगाड़ियों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया



विभिन्न ट्रेनों को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, इस अवसर पर विभिन्न स्टेशनों पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों और आम जनता का दृश्य।

केन्द्रीय रेल, संचार, इलेक्ट्रानिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री, श्री अश्विनी वैष्णव ने जम्मू और कश्मीर के उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा, असम के मुख्यमंत्री श्री हिमंता बिस्वा सरमा, त्रिपुरा के मुख्यमंत्री प्रो. (डॉ.) माणिक साहा के साथ दिनांक 19 अक्टूबर, 2023 को वीडियो कन्फ्रेंसिंग के जरिये सप्ताह में तीन दिन चलने वाली ट्रेन नंबर 15617/15618 दुल्बचेर्रा-गुवाहाटी रेलगाड़ी, ट्रेन नंबर 07688/07687 अगरतला-सबरूम डेमू ट्रेन, ट्रेन नंबर 12514/12515 गुवाहाटी-सिकंदराबाद एक्सप्रेस को सिल्चर (असम) तक बढ़ाने और ट्रेन नंबर 12519/12520 कामाख्या-लोकमान्य तिलक एक्सप्रेस को अगरतला (त्रिपुरा) तक विस्तार को हरी झंडी दिखाई। जम्मू और कश्मीर में बड़गाम-बनिहाल रेलगाड़ी के लिए नये विस्टाडोम डिब्बों को भी हरी झंडी दिखाई गई। कार्यक्रम के दौरान अनेक गणमान्य लोग वीडियो कन्फ्रेंसिंग के जरिये जुड़े हुये थे।

श्री वैष्णव ने इस अवसर पर कहा, ''पिछले नौ वर्ष के दौरान, उत्तर-पूर्व के राज्यों और जम्मू-कश्मीर में काफी बदलाव देखा गया है और यह बदलाव जमीन पर स्पष्ट देखा जा सकता है। प्रधानमंत्री ने 60 से अधिक बार उत्तर-पूर्व राज्यों की यात्रा की है जो कि उनसे पहले रहे भारत के प्रधानमंत्रियों की यात्राओं से अधिक है। धारा 370 हटने के बाद से जम्मू और कश्मीर के विकास में तेजी आई है। हाल ही में जी20 की बैठकें जम्मू और कश्मीर राज्य में हुईं। इन दोनों क्षेत्रों में रेलवे की भी कई विकास परियोजनाएं चल रहीं हैं। रेलवे ने उत्तर-पूर्व क्षेत्र के लिए ₹10,269 करोड़ का वार्षिक बजट आवंटित किया है, जबकि इससे पहले यह ₹2,122 करोड़ के आसपास था। उत्तर-पूर्व राज्यों में रेलवे की विभिन्न परियोजनाएं तेजी से आगे बढ़ रहीं हैं। उत्तर-पूर्व के लिए दो वंदे भारत ट्रेन चलाने की भी योजना है। जम्मू और कश्मीर में चेनाब पुल, अंजी पुल, सुरंगों का विकास कार्य कुछ हिस्सों को छोड़कर पूरा हो चुका है। रेलवे उत्तर-पूर्व राज्यों में व्यापक बदलाव के लिए काम कर रही है।

जम्मू और कश्मीर के उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा ने इस अवसर पर कहा, ''बनिहाल और बड़गाम के बीच विस्टाडोम कोच लगाना रेलवे की ओर से इस केंद्र शासित प्रदेश के विकास की दिशा में बड़ा कदम उठाया गया है। अत्याधुनिक डिज़ाइन वाले विस्टाडोम कोच से बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकेगा।'' उन्होंने कहा कि हाल के समय में पर्यटन को काफी बढ़ावा मिला है और अब नये रेल रेलवे डिब्बों से क्षेत्र के विकास को और प्रोत्साहन मिलेगा।

त्रिपुरा के मुख्यमंत्री प्रो. (डॉ.) माणिक साहा ने कहा, ''राज्य में रेल संपर्क को




असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्वा सरमा ने गुवाहाटी - दुल्लाबचेरा - गुवाहाटी एक्सप्रेस को गुवाहाटी स्टेशन से हरी झंडी दिखाकर रवाना की

बढ़ाने के लिए हम प्रधानमंत्री और रेल मंत्री के आभारी हैं। इससे दूर दराज इलाकों में पहुँचना आसान होगा और राज्य में व्यापार और पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।''

असम के मुख्यमंत्री, श्री हिमंता बिस्वा सरमा ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा, ''प्रधानमंत्री ने पद संभालने के बाद से ही जम्मू और कश्मीर और उत्तर पूर्व के राज्यों के विकास पर जोर दिया है। यह एक महत्त्वपूर्ण दिन है जब असम में एक ट्रेन को आगे बढ़ाकर बराक घाटी तक तक पहुँचाया गया है, एक अन्य ट्रेन को अगरतला तक बढ़ाया जा रहा है, एक ट्रेन सूदुर दुल्बचेर्रा के लिए शुरू की जा रही है। मैं इस पहल के लिए प्रधानमंत्री और रेल मंत्री का धन्यवाद करता हूँ।''

ट्रेन नंबर 12514/12515 गुवाहाटी-सिकंदराबाद एक्सप्रेस (साप्ताहिक) को सिल्चर (असम) तक विस्तार देने से बराक वैली (सिल्चर) और सिकंदराबाद के बीच सीधा रेल संपर्क उपलब्ध हो जायेगा। इससे निचले असम और बराक वैली के आसपास के क्षेत्रों के लोगों को लाभ होगा।

सप्ताह में तीन दिन चलने वाली ट्रेन नंबर 15617/15618 दुल्बचेर्रा-गुवाहाटी (गुवाहाटी से-सोम, बुध, शनि और दुल्बचेर्रा से-मंगल, बृहस्पति और रविवार) के चलने से दुल्बचेर्रा के सुदूर इलाके और गुवाहाटी के बीच सीधा रेल संपर्क स्थापित होगा और इससे दुल्बचेर्रा के छात्रों, व्यवसायियों और व्यापारियों को फायदा होगा।

ट्रेन नंबर 12519/12520 कामाख्या-लोकमान्य तिलक एक्सप्रेस (साप्ताहिक) को अगरतला (त्रिपुरा) तक विस्तार दिए जाने से त्रिपुरा की राजधानी और मुंबई के बीच सीधी रेल सेवा उपलब्ध हो जायेगी। इससे क्षेत्र के लोगों को, व्यापारियों और इलाज के लिए मुंबई जाने वाले त्रिपुरा के लोगों को लाभ मिलेगा।

ट्रेन नंबर 07688/07687 अगरतला-सबरूम डेमू ट्रेन की शुरुआत से राज्य के दूरदराज इलाकों में रहने वाले लागों को लाभ होगा और यह राज्य की राजधानी अगरतला तक सीधे रेल संपर्क उपलब्ध करायेगी। इससे राज्य में पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा।

विस्टाडोम कोच के बारे में : कश्मीर के मनमोहक परिदृश्य लंबे समय से प्राकृतिक सुंदरता को पसंद करने वाले दुनिया भर के पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र रहे हैं। सभी मौसमों में कश्मीर घाटी में यात्रियों की बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए और उन्हें एक नया अनुभव देने के लिए भारतीय रेल कश्मीर क्षेत्र में विस्टाडोम सेवाओं की शुरुआत कर एक नये रोमांचक सफर की शुरुआत कर रही है। भारतीय रेल का बनिहाल-बारामूला खंड पीर-पंजाल हिमालय पर्वतमाला और कश्मीर घाटी में अपनी शानदार यात्रा के लिए प्रसिद्ध है।

बैठने की व्यवस्था और शेड्यूल : विस्टाडोम कोच एक विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया रेलवे कैरिज है। इससे यात्रियों को आसपास के परिदृश्य का मनोरम नजारा देखने को मिलेगा। एक कोच में 40 यात्रियों के बैठने की व्यवस्था है। यह चौड़ी खिड़कियों, घूमने वाली कुर्सियों और कांच की छत से सुसज्जित है, जो यात्रियों को सुरम्य परिवेश की अनोखी छटा दिखाने के साथ-साथ एक नया अनुभव देने का काम करेगी।

विस्टाडोम कोच को 04688/04687 बडगाम-बनिहाल-बडगाम ट्रेन में जोड़ा जाना है। कोच को रणनीतिक रूप से ट्रेन के बीच में रखा जायेगा। इससे यात्रियों को प्राकृतिक दृश्य देखने का अधिक से अधिक अवसर मिल जायेगा। यह ट्रेन सुबह बडगाम से बनिहाल तक के सुरम्य मार्ग को पार करेगी, जो बडगाम से सुबह 09:10 बजे प्रस्थान करेगी। मार्ग में, यह श्रीनगर, अवंतीपोरा, अनंतनाग और काजीगुंड में रुकेगी और प्रातः 11:05 बजे बनिहाल पहुँचेगी। बनिहाल से वापसी यात्रा सायं 04:50 बजे शुरू होगी और सायं 06:35 बजे बडगाम स्टेशन पहुँचेगी। इस समय सारणी को पर्यटन स्थलों की यात्रा करने वाले पर्यटकों की प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है।



वंदे भारत ट्रेनों के लिए '14 मिनट में त्वरित गति से सफाई' योजना प्रारंभ

रेल मंत्री ने किया गुड़गाँव रेलवे स्टेशन पर 'स्वच्छता के लिए श्रमदान'



गुड़गाँव स्टेशन पर स्वच्छता के श्रमदान में भाग लेते हुए केंद्रीय रेल, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

केंद्रीय रेल, संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'एक तारीख एक घंटा एक साथ' के आह्वान से प्रेरणा लेते हुए दिनांक 1 अक्टूबर, 2023 को हरियाणा के गुड़गाँव रेलवे स्टेशन पर 'स्वच्छता के लिए श्रमदान' में भाग लिया। श्री वैष्णव ने रेल पटरी और स्टेशन परिसर की सफाई में हिस्सा लिया। गाँधी जयंती से पूर्व आयोजित सफाई अभियान में रेलवे बोर्ड और उत्तर रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी भाग लिया।

इसके बाद, रेल मंत्री गुड़गाँव रेलवे स्टेशन पर ट्रेन संख्या 20977 अजमेर-दिल्ली कैंट वंदे भारत एक्सप्रेस में दिल्ली कैंट तक के लिए सवार हुए। उन्होंने ट्रेन में साफ - सफाई के स्तर का निरीक्षण किया और यात्रियों से बातचीत की। दिल्ली कैंट स्टेशन पर केंद्रीय मंत्री के समक्ष 'स्वच्छ वंदे वीरों' द्वारा वंदे भारत एक्सप्रेस की '14 मिनट में त्वरित गति से सफाई' का प्रदर्शन किया गया। इसके साथ ही उन्होंने देश भर में सभी वंदे भारत एक्सप्रेस सेवाओं के लिए सफाई प्रक्रिया की शुरुआत की।

14 मिनट में त्वरित गति से सफाई योजनाः इस योजना में अनुशासन और सटीकता के साथ कोच की सफाई शामिल है। तेजी से सफाई करने वाले अभियान से वंदे भारत ट्रेनों के फिर-से-तैयार होने (टर्न-अराउंड) के समय में कमी आयेगी। इस प्रक्रिया में कोचों के आंतरिक और बाहरी हिस्सों की सूखी और गीली सफाई के लिए कोचों में कर्मचारियों की तैनाती तथा स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए कचरा बैग और कचरे के उपयुक्त डिस्पोज़ल को इकट्ठा करना शामिल है। '14 मिनट में त्वरित गति से सफाई' योजना के लॉन्च के बाद मीडिया को सम्बोधित करते हुए रेल मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी हमेशा हमें जनता तक सेवाओं को प्रदान करने में सुधार के लिए नए तरीके व उपाय खोजने के लिए प्रेरित करते हैं। श्री वैष्णव ने कहा, हमने इस 'स्वच्छता के नए संकल्प' के साथ एक नई प्रक्रिया शुरू की है, जो वंदे भारत एक्सप्रेस के लिए फिर-से-तैयार (टर्नअराउंड) होने के समय में कमी सुनिश्चित करेगी। उन्होंने आगे कहा कि यह प्रक्रिया वंदे भारत एक्सप्रेस के साथ शुरू की गई है और इसे धीरे-धीरे आगे बढ़ाया जाएगा, ताकि पूरे भारतीय रेल में स्वच्छता का प्रसार सुनिश्चित किया जा सके।

प्रत्येक वर्ष की तरह, इस साल भी रेल मंत्रालय ने दिनांक 15 सितम्बर, 2023 से 2 अक्टूबर, 2023 तक 'स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा' (एसएचएस) मनाया और इस अभियान के सफल कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है, जिसका उद्देश्य अधिक हरित और अधिक पर्यावरण-अनुकूल रेलवे प्रणाली को बढ़ावा देना तथा 'स्वच्छ भारत' सुनिश्चित करना है। इस वर्ष, एसएचएस अभियान के पहले 15 दिनों के दौरान, 2.19 लाख से अधिक लोगों ने लगभग 2050 गतिविधियों में भाग लिया है और 'स्वच्छता' के लिए 6,85,883 मानव-घंटे समर्पित किए हैं।

पहल की कुछ प्रमुख विशेषताओं में रेलवे परिसर से लगभग 105 टन प्लास्टिक हटाना और विभिन्न रेलवे प्रतिष्ठानों से लगभग 1085 टन स्क्रैप का संग्रह करना शामिल हैं। रेलवे पटरी के आसपास के क्षेत्र को खाली कराने के लिए एक विशेष अभियान चलाया गया। इस पहल के तहत भारतीय रेल द्वारा रेल पटरी की कुल 12,700 कि.मी. की सफाई की गई।



'स्वच्छता के लिए श्रमदान' कार्यक्रम में भाग लेने आए बच्चों के साथ बातचीत कर उनका उत्साह बढ़ाते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव



14 मिनट में त्वरित

गति से सफाई के कारण वंदे भारत एक्सप्रेस का टर्न अराउंड टाइम घटा

















दिल्ली कैंट रेलवे स्टेशन पर 14 मिनट में त्वरित गति से सफाई योजना के तहत वंदे भारत एक्सप्रेस की सफाई करने वाले वंदे वीरों का उत्साह वर्धन करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

दक्षिण पूर्व रेलवे के तीन स्टेशनों पर वंदे भारत सफाई योजना '14 मिनट में त्वरित गति से सफाई' का शुभारंभ



रांची स्टेशन पर '14 मिनट में त्वरित गति से सफाई' योजना के तहत पटना-रांची वंदे भारत एक्सप्रेस के कोच की सफाई करते हुए कर्मचारी

दिनांक 1 अक्टूबर, 2023 को स्वच्छता ही सेवा सफाई अभियान के एक भाग के रूप में, वंदे भारत एक्सप्रेस के रेक की सफाई के लिए भारतीय रेल द्वारा '14 मिनट में त्वरित गति से सफाई' नामक एक नई योजना शुरू की गई है। यह सुपर-फास्ट स्वच्छता अभियान दिनांक 1 अक्टूबर, 2023 को दक्षिण पूर्व रेलवे के तीन स्टेशनों अर्थात् हावड़ा, रांची और राउरकेला में शुरू किया गया। वंदे भारत ट्रेनें एक क्रांतिकारी सफाई प्रक्रिया का गवाह बनेंगी, जिसका उद्देश्य दक्षता को अनुकूलित करना और टर्नअराउंड समय को कम करना है। अपनी शानदार सेवाओं के लिए जानी जाने वाली इन प्रीमियम ट्रेनों को अब 14 मिनट के उल्लेखनीय समय के भीतर साफ किया जाएगा और अगली यात्रा के लिए तैयार किया जाएगा।

इस '14 मिनट में त्वरित गति से सफाई' योजना में, सफाई मैन्युअल रूप से की जाएगी, जिसके लिए कर्मचारियों को बड़े पैमाने पर प्रशिक्षित किया गया है। रेलवे बोर्ड ने सभी जोन और मंडलों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है कि सभी यात्रियों के उतरने के बाद ही ट्रेनों की सफाई शुरू हो। सफाई कर्मचारी कोच के विभिन्न हिस्सों से कचरा एकत्र करके प्रक्रिया शुरू करते हैं। फिर कोच के अंदर ड्राई मॉपिंग शुरू हो जाती है और खिड़की के शीशे बाहर से साफ किए जाते हैं। स्नैक्स टेबल और सीटों पर एक छोर से दूसरे छोर तक डस्टिंग की जाती है। बाद में कोच के अंदर गीला पोछा लगाया जाता है। इस बीच, शौचालय, दर्पण और द्वार क्षेत्रों को साफ किया जाता है और प्रसाधन सामग्री को फिर से भरा जाता है। अंत में, सफाई कर्मचारी एकत्र किए गए कचरे को लेते हैं और उन्हें निर्दिष्ट स्थानों पर निपटाते हैं।

यह योजना यह सुनिश्चित करेगी कि यात्री कम समय में एक स्वच्छ ट्रेन में चढ़ सकें।

- 20898 रांची-हावड़ा वंदे भारत हावड़ा स्टेशन पहुँची और रिकॉर्ड 14 मिनट में कोचों की साफ सफाई की गयी। मंडल रेल प्रबंधक, खड़गपुर ने हावड़ा स्टेशन न्यू कॉम्प्लेक्स में पूरी सफाई प्रक्रिया की निगरानी की।
- 22349 पटना-रांची वंदे भारत रांची पहुँची और रिकॉर्ड 14 मिनट में कोचों की साफ सफाई की गयी। मंडल रेल प्रबंधक, रांची ने रांची स्टेशन पर पूरी सफाई प्रक्रिया की निगरानी की।
- 20836 पुरी-राउरकेला वंदे भारत एक्सप्रेस राउरकेला पहुँची और रिकॉर्ड 14 मिनट में कोचों की साफ सफाई की गयी। मंडल रेल प्रबंधक, चक्रधरपुर ने राउरकेला स्टेशन पर पूरी सफाई प्रक्रिया की निगरानी की।



राउरकेला स्टेशन पर '14 मिनट में त्वरित गति से सफाई' योजना के तहत पुरी-राउरकेला वंदे भारत एक्सप्रेस की सफाई करते हुए कर्मचारी

रेल मंत्रालय ने विशेष स्वच्छता अभियान 3.0 के दौरान अनेक उपलब्धियाँ हासिल कीं

रेल मंत्रालय ने जोनल मुख्यालयों, मंडल कार्यालयों, उत्पादन इकाइयों, आरडीएसओ, प्रशिक्षण संस्थानों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और 7,000 स्टेशन समेत देश भर में विस्तारित संपूर्ण भारतीय रेल पर पूरे उत्साह और उल्लास के साथ विशेष अभियान 3.0 चलाया गया। रेलवे ने दिनांक 31 अक्टूबर, 2023 तक 10,722 स्वच्छता अभियान आयोजित करने का लक्ष्य रखा था।

इस अभियान के दौरान कार्यालयों एवं कार्यस्थलों पर स्क्रैप डिस्पोजल पर विशेष ध्यान दिया गया तथा 3,18504 वर्ग फुट स्थान खाली कराने का लक्ष्य रखा गया। इन लक्ष्यों को अर्जित करने के लिए, 13



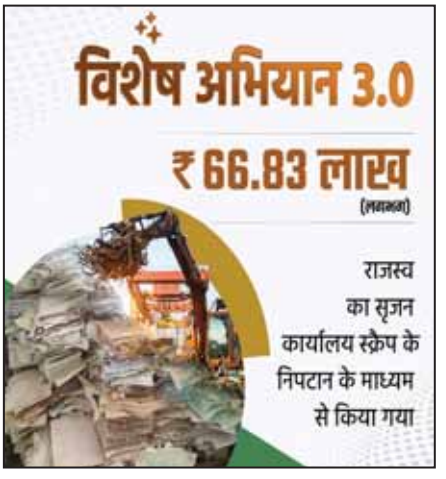




अक्टूबर, 2023 तक 5,297 से अधिक स्वच्छता अभियान चलाए गए थे। अभियान के दौरान 1.02 लाख से अधिक जन शिकायतों का समाधान किया गया। इस अभियान के दौरान, कार्यालयों और कार्यस्थलों में स्क्रैप निपटान पर विशेष ध्यान दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप 3,97,619 वर्ग फुट स्थान खाली किया गया और कार्यालय स्क्रैप के निपटान से लगभग ₹66.83 लाख राजस्व सृजित हुआ था। रिकॉर्डिंग और छंटनी के उद्देश्य से 51,954 से अधिक फाइलों की समीक्षा की गई है।







भारतीय दल ने हांगझू, चीन में आयोजित 19वें एशियाई खेल



ऐतिहासिक **107** पदक अपने नाम किए

19वें एशियाई खेलों में भारत के 107 पदकों में भारतीय रेल के खिलाड़ियों ने 22 पदकों का योगदान दिया



रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने सुश्री डोला बनर्जी, वरिष्ठ खेल अधिकारी, पूर्वी रेलवे और भारतीय दल के डिप्टी शेफ डी मिशन और सहायक खेल अधिकारी, ईस्ट कोस्ट रेलवे और स्वर्ण पदक विजेता भारतीय पुरुष हॉकी टीम के सदस्य श्री अमित रोहिदास से मुलाकात की।

रेल, संचार, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने पूर्वी रेलवे की वरिष्ठ खेल अधिकारी और 19वें एशियाई खेलों में भाग लेने वाले भारतीय दल की डिप्टी शेफ डी मिशन सुश्री डोला बनर्जी और सहायक खेल अधिकारी, ईस्ट कोस्ट रेलवे और स्वर्ण पदक विजेता भारतीय पुरुष हॉकी टीम के सदस्य श्री अमित रोहिदास से 10 अक्टूबर, 2023 को रेल भवन, नई दिल्ली में मुलाकात की।

रेल मंत्री ने हांगझू, चीन में आयोजित 19वें एशियाई खेल, 2022 में भारतीय दल की शानदार उपलब्धि के लिए उन्हें बधाई दी। भारतीय रेल के कुल 98 सदस्यों ने, जिसमें 90 खिलाड़ी, 07 कोच और डिप्टी शेफ डी मिशन के रूप में सुश्री डोला बनर्जी शामिल हैं, ने एशियाई खेलों में भाग लिया। इनमें से 39 खिलाड़ियों ने कुल 43 व्यक्तिगत और टीम खेल पदक जीते हैं। एशियाई खेलों में भारत के 107 पदकों में भारतीय रेल के खिलाड़ियों ने 22 पदकों का योगदान दिया है। 18वें एशियाई खेलों, 2018 में भारत द्वारा जीते गए 69 पदकों में भारतीय रेल के खिलाड़ियों के 09 पदकों के योगदान के विपरीत, 19वें एशियाई खेलों में भारत द्वारा जीते गए 107 पदकों में से उनका योगदान 22 है। ऐसे में भारतीय पदक तालिका में भारतीय रेल के खिलाड़ियों का योगदान 58 प्रतिशत बढ़ गया है।





चीन के हांगझू में आयोजित एशियाई खेलों में 50-एम राइफल 3पी स्पर्धा (शूटिंग) में स्वर्ण पदक जीतनेवाली तीन सदस्यीय टीम में से दो भारतीय रेल के खिलाड़ी थे-स्वप्निल कुसाले और अखिल शेरोन।



भारतीय रेल की एथलीट पारुल चौधरी ने चीन के हांगझू में आयोजित एशियाई खेलों में 5,000 मीटर में स्वर्ण पदक जीता।



भारतीय पुरुष रिले टीम ने चीन के हांगझू में आयोजित एशियाई खेलों में 4x400 मीटर रिले स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता। इस विजयी टीम के सदस्य राजेश रमेश भारतीय रेल से हैं।



भारतीय रेल की ज्योति याराजी ने चीन के हांगझू में आयोजित एशियाई खेलों में 100 मीटर बाधा दौड़ में रजत पदक जीता।

भारतीय रेल के अजय कुमार सरोज ने चीन के हांगझू में आयोजित एशियाई खेलों में 1,500 मीटर में रजत पदक जीता।





भारतीय रेल की पारुल चौधरी और प्रीति ने हांगझू, चीन में एशियाई खेलों में 3000 मीटर स्टीपलचेज स्पर्धा में क्रमशः रजत और कांस्य पदक जीते।

भारतीय रेल की सुतीर्था मुखर्जी ने चीन के हांगझू में एशियाई खेल में महिला युगल (टेबल टेनिस) में कांस्य पदक हासिल किया।





भारतीय रिले टीम ने चीन के हांगझू में आयोजित एशियाई खेलों में 4X400 मीटर मिश्रित रिले दौड़ में रजत पदक जीता। इस टीम के दो सदस्य विथ्यारामराज और राजेश रमेश भारतीय रेल से हैं।

भारतीय बैडमिंटन टीम ने चीन के हांगझू में एशियाई खेलों में रजत पदक जीता। इस टीम के दो सदस्य मिथुन मंजूनाथ और साई प्रतीक भारतीय रेल से हैं।





भारतीय रेल के विथ्यारामराज ने चीन के हांगझू में आयोजित एशियाई खेलों में 400 मीटर बाधा दौड़ में कांस्य पदक जीता।



चीन के हांगझू में आयोजित एशियाई खेलों में भाला फेंक में स्वर्ण पदक जीता। (ये स्पोर्ट्स पेज पर भी है)



भारतीय रेल के ग्रीको-रोमन पहलवान सुनील कुमार ने चीन के हांगझू में एशियाई खेलों में कांस्य पदक जीता।

एशियाई खेलों में भारतीय महिला कबड्डी टीम ने स्वर्ण पदक जीता। इस टीम की सदस्य रितुनेगी और पूजा भारतीय रेल की गौरवान्वित सदस्य हैं।





भारतीय पुरुष कबड्डी टीम ने हांगझू में एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीता। नितिन रावल, सुनील, परवेश, नितेश और कोच संजीव कुमार भारतीय रेल परिवार के सदस्य हैं।

भारतीय महिला हॉकी टीम ने एशियाई खेलों में कांस्य पदक हासिल किया। इस भारतीय टीम के 11 खिलाड़ी भारतीय रेल परिवार के सदस्य हैं।



खेलों में भारतीय रेल पेज नंबर 42 पर जारी

भारतीय रेल के सार्वजनिक उपक्रम, राइट्स लिमिटेड और इरकॉन को मिला नवरत्न का दर्जा

रेल मंत्रालय के तहत इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड (आईआरसीओएन) और राइट्स लिमिटेड (राइट्स), दोनों ऐसे केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम (सीपीएसई) हैं, जिन्हें केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों (सीपीएसई) में क्रमशः 15वें और 16वें नवरत्न के रूप में घोषित किया गया है। उन्हें यह दर्जा वित्त मंत्रालय ने दिनांक 13 अक्टूबर, 2023 को दिया है। अपने निगमन के 50वें वर्ष में प्रवेश कर रही राइट्स लिमिटेड भारत में एक अग्रणी परिवहन अवसंरचना परामर्श और इंजीनियरिंग फर्म है। यह परिवहन, रेलवे, रोलिंग स्टॉक के निर्यात, राजमार्ग, हवाई अड्डे, महानगर, शहरी इंजीनियरिंग व निरंतरता, बंदरगाह व जलमार्ग और ऊर्जा प्रबंधन के विभिन्न क्षेत्रों में सेवाएँ प्रदान करती है।



राइट्स और इरकॉन को नवरत्न का दर्जा दिए जाने के अवसर पर रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, साथ में नजर आ रहे हैं श्री ब्रिजेश कुमार गुप्ता अपर सदस्य/सिविल इंजीनियरी एवं सीएमडी/इरकॉन (अतिरिक्त प्रभार)

नवरत्न का दर्जा मिलने से राइट्स को अपने ब्रांड को आगे बढ़ाने, वैश्विक बाजार में अधिक प्रभावी ढंग से प्रतिस्पर्धा करने और विकास के लिए नए मोर्चे पर अधिक दमखम से आगे बढ़ने में मदद मिलेगी।

47वें वर्षों में इरकॉन की मुख्य क्षमता रेलवे, राजमार्ग और एक्स्ट्रा हाई टेंशन सबस्टेशन इंजीनियरिंग और निर्माण में है। कंपनी ने रेलवे निर्माण के क्षेत्रों में संचालित परियोजनाओं को क्रियान्वित किया है, जिसमें गिट्टी रहित ट्रैक, विद्युतीकरण, सुरंग निर्माण, सिग्नल और दूरसंचार के साथ-साथ लोकोमोटिव को पट्टे पर देना, सड़कों, राजमार्गों, वाणिज्यिक, औद्योगिक और आवासीय भवनों व परिसरों, हवाई अड्डे के रनवे, हैंगर, मेट्रो और मास रैपिड ट्रांजिट सिस्टम आदि का निर्माण शामिल है। इरकॉन का भारत और अन्य देशों के कई राज्यों में व्यापक संचालन है। कंपनी ने वित्तीय वर्ष 2022-23 में ₹10,750 करोड़ का समेकित वार्षिक कारोबार और ₹765 करोड़ का कर पश्चात् लाभ दर्ज किया है।

'नवरत्न' का दर्जा दिए जाने से, कंपनियों को बाजार की विश्वसनीयता बढ़ाने और बड़े आकार की पीपीपी परियोजनाएँ शुरू करने में लाभ होगा।



सांसद ने वेरावल-बान्द्रा एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर ठहराव का शुभारंभ किया

रेल मंत्रालय के आदेशानुसार ट्रेन संख्या 19218/19217 वेरावल–बान्द्रा दैनिक एक्सप्रेस ट्रेन का पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल के मालीया हाटीना स्टेशन पर प्रायोगिक तौर पर ठहराव शुरू हो गया है। सांसद जूनागढ़ (लोकसभा) श्री राजेशभाई चुडासमा ने विधायक–माँगरोल, श्री भगवानभाई करगठिया की उपस्थिति में दिनांक 14 अक्टूबर, 2023 को मालीया हाटीना रेलवे स्टेशन से ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर ठहराव का शुभारंभ किया।



एलएचबी कोचों के साथ गुवाहाटी-बीकानेर एक्सप्रेस का परिचालन



यात्रियों की सुरक्षा और आरामदायक यात्रा को बेहतर बनाने के लिए, ट्रेन संख्या 15634/15633 (गुवाहाटी–बीकानेर जंक्शन–गुवाहाटी) साप्ताहिक एक्सप्रेस के कोचों को आधुनिक एलएचबी (लिंक हॉफमैन बुश) कोचों में बदल दिया गया है, जो अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित हैं। असम सरकार के परिवहन, उत्पाद शुल्क और मत्स्य पालन मंत्री श्री परिमल शुक्लबैद्य ने 30 सितंबर, 2023 को गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पर एलएचबी रेक वाली इस ट्रेन को हरी झंडी दिखाई।

पान्डुया स्टेशन पर यूटीएस-सह-पीआरएस काउंटर का उद्घाटन

यात्री सुविधा बढ़ाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम के रूप में, सांसद श्रीमती लॉकेट चटर्जी द्वारा पूर्व रेलवे के पान्डुया स्टेशन पर दिनांक 1 सितम्बर, 2023 को एक यूटीएस–सह–पीआरएस काउंटर का उद्घाटन किया गया। यह एकीकृत काउंटर यात्रियों को एक ही छत के नीचे अनारक्षित टिकट प्रणाली (यूटीएस) और यात्री आरक्षण प्रणाली (पीआरएस) दोनों सेवाओं की सुविधा प्रदान करता है।



दुर्गापुर स्टेशन पर दो नए एस्केलेटर का उद्घाटन और पानागढ़ स्टेशन पर पूर्वांचल एक्सप्रेस के नए स्टॉपेज की शुरुआत

सांसद श्री एस.एस. अहलूवालिया ने श्री लक्ष्मण चंद्र घोरुई, विधायक की उपस्थिति में दुर्गापुर स्टेशन पर दो नवनिर्मित एस्केलेटर का उद्घाटन किया। सांसद ने 7 सितम्बर, 2023 को नए स्टॉपेज-पानागढ़ स्टेशन से 15047/15048 कोलकाता-गोरखपुर-कोलकाता पूर्वांचल एक्सप्रेस को भी हरी झंडी दिखाई। इस अवसर पर पूर्व रेलवे के मंडल रेल प्रबंधक आसनसोल श्री चेतन नंद सिंह भी उपस्थित थे।



उत्तर बंगा एक्सप्रेस को कुमेदपुर जंक्शन पर नए ठहराव के साथ हरी झंडी दिखाई गई



श्री खगेन मुर्मू, सांसद (लोकसभा) ने 14 सितंबर, 2023 को पश्चिम बंगाल के कुमेदपुर जंक्शन पर नए ठहराव के साथ ट्रेन संख्या 13148/13147 (बामनहाट-सियालदह-बामनहाट) उत्तर बंगा एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई।

डालखोला में नए ठहराव के साथ तिस्ता तोरसा को हरी झंडी दिखाई गई

सांसद देबाश्री चौधरी (लोकसभा) ने 15 सितंबर, 2023 को डालखोला स्टेशन पर नए ठहराव के साथ ट्रेन संख्या 13142/13141 न्यू अलीपुरद्वार-सियालदह-न्यू अलीपुरद्वार तीस्ता तोरसा एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई।



कंचनजंघा एक्सप्रेस का न्यू मैनागुड़ी स्टेशन और हाटेबाजारे एक्सप्रेस का एकलाखी स्टेशन पर ठहराव का सुभारंभ



रेल यात्रियों की सुविधा के लिए, ट्रेन संख्या 13173 (सियालदह-अगरतला) कंचनजंघा एक्सप्रेस को 6 अक्टूबर, 2023 से और ट्रेन संख्या 13174 (अगरतला-सियालदह) कंचनजंघा एक्सप्रेस को 7 अक्टूबर, 2023 से न्यू मैनागुड़ी स्टेशन पर दो मिनट का अतिरिक्त ठहराव प्रदान किया गया है। साथ ही, 7 अक्टूबर, 2023 से ट्रेन संख्या 13163/13164 (सियालदह-सहरसा-सियालदह) हाटेबाजारे एक्सप्रेस का ठहराव एकलाखी स्टेशन पर प्रदान किया गया है। दिनांक 6 अक्टूबर, 2023 को डॉ. जयंत कुमार राय, सांसद (लोकसभा) ने न्यू मैनागुड़ी स्टेशन, पश्चिम बंगाल में नए ठहराव के साथ कंचनजंघा एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई। एक अन्य कार्यक्रम में, 7 अक्टूबर, 2023 को श्री खगेन मुर्मु, सांसद (लोकसभा) ने एकलाखी स्टेशन पर नए ठहराव के साथ हाटेबाजारे एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई।

सांसद द्वारा इंदौर सिवनी एक्सप्रेस के ठहराव का शुभारंभ

यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए रतलाम मंडल के कालीसिंध स्टेशन पर ट्रेन संख्या 19343 इंदौर-सिवनी एक्सप्रेस 19344 छिंदवाड़ा-इंदौर एक्सप्रेस का प्रायोगिक ठहराव स्वीकृत किया गया था। दिनांक 7 अक्टूबर, 2023 को सांसद देवास श्री महेन्द्र सिंह सोलंकी द्वारा अन्य गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में ट्रेन संख्या 19343 इंदौर सिवनी पंचवेली एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर ठहराव का शुभारंभ किया गया।



न्यू माल जंक्शन पर दो एक्सप्रेस ट्रेनों का हुआ ठहराव



दिनांक 8 अक्टूबर, 2023 को डॉ. जयंत कुमार राय, सांसद (लोकसभा) ने पश्चिम बंगाल के न्यू माल जंक्शन स्टेशन पर नए ठहराव के साथ ट्रेन संख्या 19306 (कामाख्या-डॉ. अंबेडकर नगर) एक्सप्रेस और ट्रेन संख्या 15622 (आनंद विहार-कामाख्या) एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाई। इस अवसर पर मंडल के वरिष्ठ रेल अधिकारी और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

श्योपुर कलाँ स्टेशन भवन पुनर्विकास कार्य का शिलान्यास



श्योपुर क्षेत्र के विकास के क्रम में दिनांक 5 अक्टूबर, 2023 को केन्द्रीय मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर के द्वारा 'अमृत भारत स्टेशन योजना' के तहत महाप्रबंधक उत्तर मध्य रेलवे श्री सतीश कुमार एवं मंडल रेल प्रबंधक झाँसी श्री दीपक कुमार सिन्हा की उपस्थिति में श्योपुर कलां रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास की आधारशिला रखी गयी।

'अमृत भारत स्टेशन स्कीम' के अंतर्गत प्रथम चरण में उत्तर मध्य रेलवे के कुल 16 स्टेशन पुनर्विकसित किए जाने हेतु चयनित किए गए हैं जिसमें श्योपुरकलां स्टेशन के अतिरिक्त बांदा, मुरैना, महोबा, चित्रकूट धाम कर्वी, दतिया, ललितपुर, उरई, पुखरायां, घाटमपुर, भिंड, हरपालपुर, टीकमगढ़, छतरपुर ओरछा एवं डबरा सम्मिलित हैं।

सांसद ने हरी झंडी दिखाकर राजकोट-दिल्ली सराय रोहिल्ला एक्सप्रेस में एलएचबी रेक के परिचालन का किया शुभारंभ

सांसद श्री मोहनभाई कुंडारिया तथा सांसद श्री रामभाई मोकरिया ने राजकोट स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में ट्रेन नं 20913-14 राजकोट-दिल्ली सराय रोहिल्ला एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर नव परिवर्तित एलएचबी रेक के परिचालन का शुभारम्भ किया। इस समारोह में राजकोट की महापौर श्रीमती नयनाबेन पेढडीया, विधायक डॉ. दर्शिता शाह, राजकोट के डेप्युटी महापौर श्री नरेंद्रसिंह जाडेजा, राजकोट मंडल सहित अन्य गणमान्य लोग भी उपस्थित थे।



रेल पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोए

रेल मंत्रालय द्वारा विगत 65 वर्षों से भी अधिक समय से प्रकाशित मासिक पत्रिकाओं



भारतीय रेल
(हिन्दी)

की सदस्यता अब
ऑनलाइन
भी उपलब्ध

विज़िट करें



Indian Railways
(English)

www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home

दरें एवं शर्तें लागू

प्रतापनगर व डभोई में दो दिवसीय 'स्टेशन महोत्सव' का आयोजन



पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल द्वारा प्रतापनगर एवं डभोई स्टेशनों पर 'स्टेशन महोत्सव' का शुभारंभ किया गया। प्रतापनगर स्टेशन पर नैरोगेज समय की धरोहरों को देखकर स्कूली बच्चों व नागरिकों में खासा उत्साह एवं उमंग देखी गई।

वडोदरा से सांसद श्रीमती रंजनबेन भट्ट ने प्रतापनगर में आयोजित प्रदर्शनी का फीता काटकर शुभारंभ किया। मंडल रेल प्रबंधक श्री जीतेंद्र सिंह ने उन्हें ऐतिहासिक महत्त्व की विरासत व धरोहर के रूप में रखी गई वस्तुओं एंव डिजिटल माध्यम से दिखाई जा रही जानकारी को विस्तार से समझाया।

तत्कालीन महाराजा गायकवाड़ की दूरदर्शिता एवं त्वरित इन नैरोगेज लाइनों की स्थापना संभव हुई। यह वडोदरा शहर की रेलवे की धरोहर है जिस पर हमें गौरांवन्वित होना चाहिए। स्कूली बच्चों से चर्चा के दौरान सांसद ने उन्हें गंभीरता पूर्वक एवं पूरी लगन से इन धरोहरों के इतिहास को जानने, समझने एवं उसे अपने लेखन शैली से यादगार बनाने की अपील भी की।

इसी प्रकार डभोई स्टेशन पर भी स्टेशन महोत्सव के दौरान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। साथ ही रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री सुनील बिश्नोई ने बताया कि डभोई व प्रतापनगर के आयोजन में स्कूली बच्चों में उत्साह देखा गया। तीन सौ से अधिक स्कूली बच्चों ने इस प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्रीमती मंजू मीना के अनुसार भावी पीढ़ी को अपनी धरोहर से रूबरू कराना हमारा मुख्य ध्येय हैं। इसके लिए कई ऐतिहासिक महत्त्व की चीजें अवलोकनार्थ रखी गईं, जो विशेष आकर्षण की केंद्र बिंदु थीं।

- गायकवाड़ बरोड़ा स्टेट रेलवे का इतिहास।
- बैलों से खींची गई नैरोगेज ट्रेन का इतिहास।
- पुराने समय की टिकट डेटिंग मशीन, वी व एम शेप के निप्पर व उनकी उपयोगिता।
- पुराने समय में अजमेर भेजे जाने वाले नकदी के लिए लेदर कैश बैग, ट्रेन को सिग्नल देने के लिए लैंप, गेट लैंप।
- स्माल साइज मेटल बेल व गायकवाड़ बरोड़ा स्टेट रेलवे का लोगो।
- प्राचीन ताले व मुहरें जो 150 वर्ष पुरानी हैं। जम्बुसर-प्रतापनगर रेलखंड पर ट्रेन में टिकट जारी करने हेतु गार्ड द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली टिकट ट्यूब व पुराने गत्ते वाली टिकटें।
- पीतल की टिकट बारी जो गायकवाड़ स्टेट के समय की है।
- प्रतापनगर स्टेशन के सामने रेलवे हेरिटेज पार्क, रोलिंग स्टॉक पार्क तथा रेलवे हेरिटेज संग्रहालय जहाँ 1936 का रोड रोलर, 1882 की हाथ से चलने वाली क्रेन, नेरोगेज व् ब्रोडगेज को क्रॉस करनेवाला डायमंड क्रॉसिंग, इंजिन व कोच को घुमाने वाली टर्न टेबल, नैरोगेज ट्रेन के आकर्षक व्हील, हाथ से चलने वाला जनरेटर, भारतीय रेल के लोगो, ट्रेन चलाने के लिए ब्लॉक मशीनें, पुरानी वॉल क्लॉक इत्यादि कई धरोहर आपका इंतजार कर रही हैं।

भारतीय रेल
पत्रिका अब
राष्ट्रीय रेल संग्रहालय
चाणक्यपुरी, नई दिल्ली में भी उपलब्ध है

माननीय प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव का बरेका भ्रमण



दिनांक 29 अक्टूबर, 2023 को प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव श्री पी. के. मिश्रा ने बनारस रेल इंजन कारखाना का दौरा किया और बरेका के विभिन्न शॉपों जैस लोको फ्रेम शॉप, हार्नेस शॉप, लोको असेम्बली शॉप, लोको टेस्ट शॉप का भ्रमण किया एवं रेल इंजन उत्पादन से सम्बन्धित कार्यों का अवलोकन किया। साथ ही, उन्होंने लोको ड्राइवर कैब का भी निरीक्षण किया। इस दौरान महाप्रबंधक श्री बासुदेव पांडा ने श्री मिश्रा को लोको उत्पादन गतिविधियों, निर्माण सुविधाओं, बरेका में चल रही परियोजनाओं के साथ ही उत्पादन प्रक्रिया एवं तकनीकी विषयों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

महानिदेशक, मानव संसाधन रेलवे बोर्ड का बरेका दौरा

महानिदेशक, मानव संसाधन रेलवे बोर्ड श्री मोहित सिन्हा ने दिनांक 30 सितम्बर, 2023 को बनारस रेल इंजन कारखाना का दौरा किया। इस अवसर पर उन्होंने बरेका की विभिन्न कार्यशालाओं जैसे लोको फ्रेम शॉप, लोको असेम्बली शॉप, लोको टेस्ट शॉप गए, जहाँ पर उन्होंने विद्युत रेल इंजनों के उत्पादन से सम्बन्धित कार्यों का अवलोकन किया। इस दौरान मुख्य विद्युत इंजीनियर, लोको श्री अरूण शर्मा ने उत्पादन गतिविधियों, निर्माण सुविधाओं, बरेका में चल रही परियोजनाओं के साथ ही उत्पादन



प्रक्रिया एवं अन्य तकनीकी विषयों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। महानिदेशक, मानव संसाधन श्री मोहित सिन्हा ने महाप्रबंधक श्री बासुदेव पांडा के साथ-साथ प्रमुख मुख्य विभागाध्यक्षों के साथ भी बैठक की।

महानिदेशक संरक्षा, रेलवे बोर्ड का आरडीएसओ दौरा



महानिदेशक संरक्षा, रेलवे बोर्ड, श्री ब्रज मोहन अग्रवाल ने दिनांक 6 अक्टूबर, 2023 को आरडीएसओ का दौरा किया। इस अवसर पर आरडीएसओ की हाल की उपलब्धियों और वर्तमान में चल रही परियोजनाओं को कवर करते हुए एक विस्तृत प्रस्तुति दी गई एवं महत्त्वपूर्ण सुरक्षा मदों से सम्बन्धित चर्चा भी की गई।

अपने दौरे के दौरान श्री अग्रवाल ने आरडीएसओ द्वारा चल रही संरक्षा परियोजनाओं की समीक्षा कर अपने बहुमूल्य सुझाव दिए। श्री अग्रवाल ने आरडीएसओ की एम एंड सी लैब, टी.एम. लैब, सिग्नल लैब, एयर ब्रेक लैब, एवं फटीग टेस्टिंग लैब का निरीक्षण भी किया। श्री अजय कुमार राणा, महानिदेशक, आरडीएसओ ने महानिदेशक संरक्षा, रेलवे बोर्ड को धन्यवाद किया।

गुजरात के आणंद के पास हाई-स्पीड रेल ट्रैक स्लैब विनिर्माण सुविधा शुरु



मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल कॉरिडोर के लिए गिट्टी रहित ट्रैक (Ballastless track) कार्यों के निर्माण के लिए आवश्यक ट्रैक स्लैब के उत्पादन के लिए एक नई ट्रैक स्लैब विनिर्माण सुविधा (टीएसएमएफ) गुजरात राज्य में आणंद के पास शुरू की गई है।

यह सुविधा एक लाख वर्ग मीटर के क्षेत्र में फैली हुई है और इसमें एमएएचएसआर परियोजना के लिए 45,000 प्रीकास्ट ट्रैक स्लैब (Precast track slab) के उत्पादन के लिए अत्याधुनिक तकनीक मौजूद है। पूरी सुविधा का निर्माण सिविल कार्य की शुरुआत से आठ महीने के भीतर किया गया है। सुविधा में 60 उच्च परिशुद्धता वाले सांचे (Moulds) खरीदे और स्थापित किए गए हैं जो प्रति दिन 60 ट्रैक स्लैब का उत्पादन कर सकते हैं। प्रति ट्रैक लगभग 200 कि.मी. ट्रैक स्लैब की आवश्यकता होती है। पटरियों की निर्बाध स्थापना की सुविधा के लिए यहाँ पर कुल 9,000 ट्रैक-स्लैब संग्रहीत (slab stacking) किए जा सकते हैं।

ट्रैक स्लैब विनिर्माण सुविधा कंक्रीट वितरण प्रणाली के साथ पूरी तरह से स्वचालित है। स्लैब के उत्पादन में सहायता करने के लिए विभिन्न सहायक सुविधाएँ हैं जैसे पूरी तरह से स्वचालित रीबार प्रसंस्करण मशीनें (automated rebar processing machines), पिंजरे निर्माण के लिए रीबार यार्ड (Rebar yard for cage fabrication), आरओ प्लांट, बॉयलर प्लांट, क्योरिंग पौंड (curing pond), इलेक्ट्रिक ओवरहेड ट्रैवलिंग (ईओटी) क्रेन (Electric overhead travelling crane), गैन्ट्री क्रेन (Gantry crane) आदि। प्रोडक्शन शेड, रीबार शेड, स्टोर जैसी प्रमुख सुविधाओं पर ईओटी और गैन्ट्री ट्रैक स्लैब घटकों की मशीनीकृत हैंडलिंग सुनिश्चित करती है। उत्पादन शुरू होने से पहले एक प्रशिक्षण और प्रमाणन पाठ्यक्रम आयोजित किया गया था, जिसमें जापानी विशेषज्ञों (जापान से टीएंडसी एजेंसी जेएआरटीएस के माध्यम से जुटाए गए) ने जापान में अपनाई जाने वाली तकनीक के आधार पर भारतीय इंजीनियरों को प्रशिक्षण दिया। गुजरात में एमएएचएसआर कॉरिडोर के 236 किमी के ट्रैक स्लैब निर्माण के लिए गुजरात में सूरत जिले के पास किम गाँव में एक और ट्रैक स्लैब विनिर्माण सुविधा बनाई जा रही है।

एनएचएसआरसीएल के बारे में

नेशनल हाई-स्पीड रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एनएचएसआरसीएल) को भारत में हाई स्पीड रेल कॉरिडोर के वित्त, निर्माण, रख-रखाव और प्रबंधन के उद्देश्य से 12 फरवरी, 2016 को कंपनी अधिनियम, 2013 के तहत निगमित किया गया था। कंपनी को रेल मंत्रालय और दो राज्य सरकारों, गुजरात सरकार और महाराष्ट्र सरकार, के माध्यम से केंद्र सरकार द्वारा इक्विटी भागीदारी के साथ संयुक्त क्षेत्र में 'विशेष प्रयोजन वाहन' के रूप में तैयार किया गया है।



मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल कॉरिडोर पहले माउंटेन टनल का निर्माण कार्य पूर्ण



दिनांक 1 अक्टूबर, 2023 को नेशनल हाई स्पीड रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल कॉरिडोर परियोजना के लिए माउंटेन टनल का निर्माण पूरा किया गया। यह पहली माउंटेन टनल है, जिसका निर्माण 10 महीने में पूरा किया गया है।

यह माउंटेन टनल, गुजरात के वलसाड जिले के उमरगाँव तालुका के जारोली गाँव से लगभग 1 कि.मी. दूर स्थित है। टनल संरचना में टनल, टनल पोर्टल और टनल एन्ट्रेंस हुड जैसी अन्य कनेक्टिंग संरचनाएं शामिल हैं।

टनल का निर्माण न्यू ऑस्ट्रियन टनलिंग मेथड (NATM) द्वारा किया जा रहा है, जिसमें निम्नलिखित प्रक्रिया शामिल है:

1. सुरंग के मुख पर ड्रिल छेद का अंकन
2. छिद्रों की ड्रिलिंग
2. विस्फोटकों का चार्ज करना
3. नियंत्रित ब्लास्टिंग
4. गंदगी हटाना (चट्टान के टुकड़े नष्ट करना)
5. प्रत्येक विस्फोट के बाद

माउंटेन टनल की मुख्य विशेषताएँ

- सुरंग की कुल लंबाई : 350 मीटर
- सुरंग का व्यास : 12.6 मीटर
- सुरंग की ऊँचाई : 10.25 मीटर
- सुरंग का आकार : सिंगल ट्यूब हॉर्स-शू आकार
- ट्रैक की संख्या : 2 ट्रैक

एमएएचएसआर कॉरिडोर में सात पर्वतीय सुरंगें होंगी, जिनका निर्माण NATM विधि का उपयोग करके किया जाएगा।

भारतीय रेल
पत्रिका की सदस्यता एवं प्राप्ति हेतु
संपर्क करें 011-47845089
सोमवार से शुक्रवार (सुबह 10 से 1 एवं दोपहर 2 से 5 बजे तक) bmpr310rb@gmail.com, irbrhelp@gmail.com

एनएचएसआरसीएल द्वारा मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल कॉरिडोर का पहला स्टील ब्रिज बन कर तैयार



एनएचएसआरसीएल द्वारा मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल कॉरिडोर के लिए गुजरात के सूरत शहर में नेशनल हाईवे-53 पर पहले स्टील ब्रिज का निर्माण पूरा कर लिया गया है। एमएएचएसआर कॉरिडोर पर, यह 28 स्टील ब्रिज में से पहला स्टील निर्मित ब्रिज है। इन स्टील ब्रिज के निर्माण में लगभग 70,000 मीट्रिक टन निर्दिष्ट (specified) स्टील का उपयोग होने का अनुमान है। इस स्टील ब्रिज स्पैन की लंबाई 60 मीटर 'सिंपली सपोर्टेड' (simply supported) से लेकर 130+100 मीटर 'कंटीन्यूअस स्पैन' (continuous span) तक होती है।

जापानी विशेषज्ञता के साथ, भारत मेक-इन-इंडिया विज़न के तहत बुनियादी ढाँचे के निर्माण के लिए अपनी स्वदेशी तकनीकी और भौतिक क्षमताओं का तेजी से उपयोग कर रहा है। एचएसआर के लिए स्टील ब्रिज ऐसे उदाहरणों में से एक है। नेशनल हाइवेज, एक्सप्रेस-वे और रेलवे लाइनों को पार करने के लिए स्टील ब्रिज सबसे उपयुक्त माने जाते हैं। वहीं दूसरी ओर, 40 से 45 मीटर तक के प्री-स्ट्रेस्ड (pre-stressed) कंक्रीट ब्रिज, नदी पुलों सहित अधिकांश वर्गों के लिए उपयुक्त होते हैं। भारत के पास 100 से 160 कि.मी. प्रति घंटे के बीच चलने वाली भारी ढुलाई और अर्ध-उच्च गति (semi high-speed) वाली ट्रेनों के लिए स्टील ब्रिज बनाने की विशेषज्ञता है। इसके अलावा, यह पहली बार है, कि 320 कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली शिंकानसेन बुलेट ट्रेन को सपोर्ट करने वाला स्टील का ब्रिज बनाया और सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया।

राजधानी दिल्ली के पास हापुड़ जिले की कार्यशाला में तैयार होने के बाद (जो ब्रिज की साइट से लगभग 1,200 कि.मी. दूर है), स्टील स्ट्रक्चर जिसमें लगभग 700 टुकड़े और 673 मीट्रिक टन स्टील शामिल हैं, को ट्रेलरों पर ब्रिज निर्माण साइट तक ले जाया गया। साइट पर 12 से 14 मीटर ऊँचे स्टील ब्रिज को 10 से 12 मीटर ऊंचे खंभों के ऊपर स्टेजिंग पर रखा गया। इसके बाद लगभग 200 मीट्रिक टन वजन की लॉन्चिंग नोज को मुख्य ब्रिज असेंबली (main bridge assembly) के साथ जोड़ा गया है। बड़े पैमाने पर देख-रेख और विशेषज्ञता के साथ, नेशनल हाईवे पर पूर्ण यातायात ब्लॉक के तहत विशेष रूप से डिज़ाइन की गई पुलिंग व्यवस्था (pulling arrangement) से ब्रिज असेंबली को उसके इच्छित विस्तार तक खींचा गया।

स्टील के प्रत्येक उत्पादन बैच का मैन्युफैक्चरिंग परिसर में अल्ट्रासोनिक परीक्षण (Ultrasonic Testing) द्वारा परीक्षण किया गया। स्टील ब्रिज का निर्माण जापानी इंजीनियर द्वारा तैयार डिज़ाइन ड्रॉइंग्स के अनुसार कटिंग, ड्रिलिंग, वेल्डिंग और पेंटिंग के उच्च तकनीक और सटीक संचालन द्वारा किया जाता है। कॉन्ट्रैक्टर्स को अंतरराष्ट्रीय वेल्डिंग विशेषज्ञों द्वारा प्रमाणित वेल्डर और पर्यवेक्षकों को नियुक्त करना अनिवार्य है। प्रत्येक कार्यशाला में, वेल्डिंग प्रक्रिया की मॉनिटरिंग, जापानी अंतरराष्ट्रीय वेल्डिंग विशेषज्ञों (International Welding Experts) द्वारा भी की जाती है। निर्मित स्टील स्ट्रक्चर चेक असेंबली प्रक्रिया से गुजरने के बाद, पाँच-परत तकनीक का उपयोग करके पेन्ट किया जाता है। स्टील गर्डर के लिए अपनाई गई पेंटिंग तकनीक भारत में अपनी तरह की पहली तकनीक है। यह जापान रोड एसोसिएशन की 'हैंडबुक फॉर करोशन प्रोटेक्शन ऑफ स्टील रोड ब्रिज' की सी-5 पेंटिंग प्रणाली के अनुरूप है।

टेक्निकल पॉइंट्स

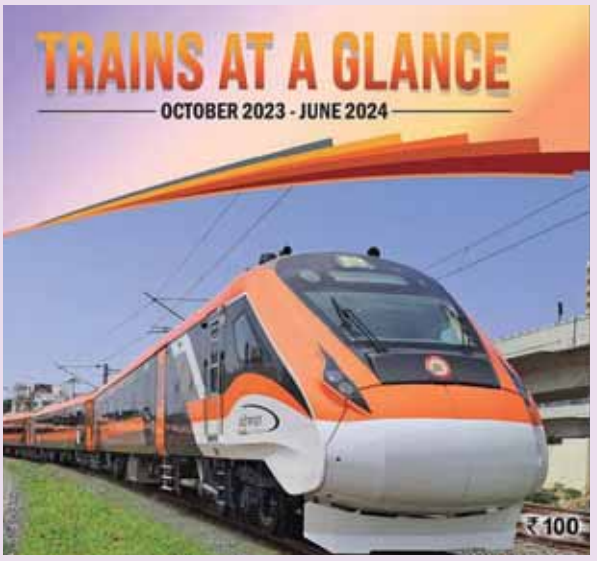
- **मेंन ब्रिज की लंबाई : 70 मीटर**
- **ब्रिज का वजन : 673 मीट्रिक टन**
- **लॉन्चिंग नोज की लंबाई : 38 मीटर**
- **लॉन्चिंग नोज का वजन : 167 मीट्रिक टन**
- **प्रयुक्त स्टील : 673 मीट्रिक टन (मेन ब्रिज)**

भारतीय रेल ने जारी की अखिल भारतीय रेल समय-सारणी

रेल मंत्रालय ने अपनी नई अखिल भारतीय रेल समय सारणी 'ट्रेन्स एट ए ग्लांस (टीएजी)' जारी कर दी है, जो एक अक्टूबर, 2023 से प्रभावी होगी। यह समय सारणी 'ट्रेन्स एट ए ग्लांस' भारतीय रेल की आधिकारिक वेबसाइट **https://indianrailways.gov.in/railwayboard/view_section.jsp?lang=0&id=0,1,304,366,537,2960** पर भी उपलब्ध है।

नई समय-सारिणी की मुख्य विशेषताएँ

- वंदे भारत ट्रेनों की 64 सेवाओं और 70 अन्य ट्रेन सेवाओं को शामिल करना
- अन्य गंतव्यों के लिए मौजूदा 90 सेवाओं का विस्तार
- 12 सेवाओं में वृद्धि
- ट्रेनों की 22 सेवाओं को सुपरफास्ट श्रेणी में जल्द बदला जाना
- 20501/02 अगरतला-आनंद विहार राजधानी का मार्ग बदलकर मालदा, भागलपुर के रास्ते किया जाना
- दक्षिण पूर्व रेलवे में कुछ सेवाओं की समय-सारणी में परिवर्तन, ताकि उनकी समयबद्धता में सुधार किया जा सके



नई समय-सारिणी में वंदे भारत ट्रेनों की 64 सेवाओं और 70 अन्य ट्रेन सेवाओं को शामिल किया गया है, ताकि यात्रियों को आरामदायक और बेहतर यात्रा का अनुभव मिल सके। नई समय-सारिणी को विभिन्न शहरों के बीच कनेक्टिविटी बढ़ाने और यात्रा के समय को कम करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यात्रियों को सलाह दी जाती है कि वे नई समय-सारिणी के अनुसार प्रस्थान और आगमन के समय की जाँच कर लें।

भारतीय रेल ने 2023 की पहली दो तिमाही में 758.20 मीट्रिक टन माल ढुलाई का लक्ष्य हासिल किया



संचयी आधार पर अप्रैल-सितंबर 2023 की अवधि के लिए भारतीय रेल ने 758.20 मीट्रिक टन माल की ढुलाई की, जबकि पिछले वर्ष 736.68 मीट्रिक टन माल की ढुलाई की गई थी, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में लगभग 21.52 मीट्रिक टन की वृद्धि दर्शाता है। रेलवे ने पिछले वर्ष के ₹78,991 रुपये की तुलना में ₹81,697 करोड़ की आय अर्जित की है, जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में लगभग ₹2,706 करोड़ अधिक है। सितंबर 2023 के महीने के दौरान, 123.53 मीट्रिक टन का प्रारंभिक माल ढुलाई का लक्ष्य हासिल किया गया है, जबकि सितंबर 2022 में 115.80 मीट्रिक टन माल की ढुलाई की गई थी। इस प्रकार पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 6.67 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सितंबर 2022 में माल ढुलाई से राजस्व के रूप में ₹12,332.70 करोड़ की आय हुई थी, इसकी तुलना में सितंबर 2023 में ₹12,956.95 करोड़ की आय अर्जित की गई है। इस प्रकार, पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 5.06 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है।

भारतीय रेल ने सितंबर, 2023 के दौरान कोयले में 59.70 मीट्रिक टन, लौह अयस्क में 14.29 मीट्रिक टन, पिग आयरन और तैयार स्टील में 5.78 मीट्रिक टन, सीमेंट (क्लिंकर को छोड़कर) में 6.25 मीट्रिक टन, क्लिंकर में 4.89 मीट्रिक टन, खाद्यान्न में 4.54 मीट्रिक टन, उर्वरक में 4.23 मीट्रिक टन, खनिज तेल में 4.0 मीट्रिक टन, कंटेनरों में 7.28 मीट्रिक टन और शेष अन्य सामान में 10.10 मीट्रिक टन की माल ढुलाई की।

'हंग्री फॉर कार्गो' मंत्र का पालन करते हुए, भारतीय रेल ने व्यापार करने में आसानी के साथ-साथ प्रतिस्पर्धी कीमतों पर सेवा अदायगी में सुधार के लिए निरंतर प्रयास किए। कुशल नीति निर्माण द्वारा समर्थित ग्राहक केंद्रित दृष्टिकोण और व्यवसाय विकास इकाइयों के काम ने रेलवे को इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धि को हासिल करने में मदद की।

ऑपरेशन नन्हें फरिश्ते
आरपीएफ ने सितम्बर में बचाए 895 बच्चे

रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) के पास रेलवे संपत्ति, यात्री क्षेत्रों और यात्रियों की सुरक्षा की जिम्मेदारी है। यात्रियों को सुरक्षित, संरक्षित और आरामदायक यात्रा अनुभव प्रदान करने के लिए बल चौबीसों घंटे काम कर रहा है। यह भारतीय रेल को अपने ग्राहकों को सुरक्षित माल परिवहन सेवा प्रदान करने में मदद करता है। आरपीएफ ने निवारक सुरक्षा उपाय करके और रेलवे संपत्ति के खिलाफ अपराध होने पर उनका पता लगाने के प्रयास करके देश भर में फैली रेलवे की विशाल संपत्ति की सुरक्षा की जिम्मेदारी का बखूबी निर्वहन किया है।



सितम्बर 2023 माह के दौरान आरपीएफ की उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

बच्चों का बचाव और ऑपरेशन नन्हें फरिश्ते : अनेक कारणों से अपने परिवार से बिछुड़े/गुमशुदा बच्चों को उनके परिवार से मिलाने में आरपीएफ एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस सम्बन्ध में, भारतीय रेल पर ऑपरेशन 'नन्हे फरिश्ते' शुरू किया गया था और इस अभियान के तहत सितम्बर–2023 में भारतीय रेल के संपर्क में आए 895 से अधिक बच्चों (लड़के–573 और लड़की–322) को देखभाल और सुरक्षा की आवश्यकता थी उन्हें छुड़ाया गया और उनके परिवारों को सौंपने से पहले सम्बन्धित अधिकारियों को सौंप दिया गया।

मानव तस्करी और ऑपरेशन एएएचटी : मानव तस्करों की हानिकर योजनाओं का प्रभावी मुकाबला करने के लिए, आरपीएफ की मानव तस्करी विरोधी इकाइयां भारतीय रेल पर पोस्ट स्तर (थाना स्तर) पर कार्यरत हैं। ये एएचटीयू मानव तस्करी को रोकने में शामिल एजेंसियों और गैर सरकारी संगठनों के साथ नियमित संपर्क में हैं और तस्करी के शिकार बच्चों को बचाने में उनकी सहायता कर रहे हैं। सितम्बर 2023 के दौरान 14 तस्करों की गिरफ्तारी के साथ 29 लोगों को तस्करों के चंगुल से बचाया गया।

ऑपरेशन 'जीवन रक्षा' : आरपीएफ की सतर्कता और त्वरित कार्रवाई के कारण, ऑपरेशन 'जीवन रक्षा' के अंतर्गत सितम्बर 2023 के महीने में टीम आरपीएफ ने 265 यात्रियों की प्लेटफॉर्मों और रेलवे ट्रैक पर ट्रेन से कटने से जान बचाई।

महिला सुरक्षा : महिला यात्रियों की रक्षा और सुरक्षा भारतीय रेल की एक महत्त्वपूर्ण चिंता रही है। इस सम्बन्ध में, लंबी दूरी की ट्रेनों में महिला यात्रियों, विशेषकर अकेले यात्रा करने वाली या अपराध की चपेट में आने वाली महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करने के लिए 'मेरी सहेली' पहल शुरू की गई है। इस पहल के तहत, 231 मेरी सहेली टीमों ने सितम्बर 2023 के महीने के दौरान 13,071 ट्रेनों में सफर किया और 4,21,198 महिला यात्रियों को सुरक्षा आश्वासन प्रदान किया।

इसके अलावा, आरपीएफ ने सितम्बर 2023 के दौरान महिलाओं के लिए आरक्षित डिब्बों में यात्रा करने वाले 6,033 व्यक्तियों के खिलाफ कार्रवाई की।

दलालों के विरुद्ध कार्रवाई एवं ऑपरेशन 'उपलब्ध' : इस सम्बन्ध में माह सितम्बर 2023 के दौरान 405 दलालों को गिरफ्तार कर लिया गया और उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की गई और ₹36.43 लाख मूल्य के भविष्य के टिकट जब्त किए गये।

ऑपरेशन 'नार्कोस' : सितम्बर–2023 महीने के दौरान, ₹2.65 करोड़ मूल्य की एनडीपीएस की जब्ती के साथ 70 लोगों को गिरफ्तार किया गया और गिरफ्तार अपराधियों को आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए सशक्त एजेंसियों को सौंप दिया गया है।

आपातकालीन प्रतिक्रिया और ऑपरेशन 'यात्री सुरक्षा' : संकट में फंसे यात्रियों की सुरक्षा सम्बन्धी शिकायतों के निवारण और तत्काल सहायता के लिए, यात्री रेल मदद पोर्टल पर या हेल्पलाइन नंबर 139 (आपातकालीन प्रतिक्रिया सहायता प्रणाली संख्या 112 के साथ एकीकृत) के माध्यम से शिकायत कर सकते हैं। सितम्बर–2023 माह के दौरान 28,000 से अधिक शिकायतें प्राप्त हुईं और उनके समाधान के लिए उचित आवश्यक कार्रवाई की गई।

मोजाम्बिक रेलवे के प्रतिनिधि मंडल का बरेका दौरा

मेसर्स राइट्स के अधिकारियों के साथ मोजाम्बिक रेलवे के प्रतिनिधिमंडल ने बनारस रेल इंजन कारखाना में उपलब्ध निर्माण सुविधाओं को देखने के लिए दिनांक 29 सितम्बर, 2023 को बरेका का दौरा किया। मोजाम्बिक के 4 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल में श्री कार्लोस स्मेल मैम्बो, एक्वीसटल हेजी इब्रैमो, मिलिऑन फेनिज कुना चेंजला एवं इनेसिओ फ्लोर कुम्बाला सम्मिलित थे। प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख मुख्य विद्युत इंजीनियर श्री एस.के. श्रीवास्तव के साथ बैठक हुई। प्रतिनिधि मंडल ने बरेका कार्यशाला की विभिन्न शॉपों जैसे न्यू ब्लॉक शॉप, इंजन टेस्ट



शॉप, लोको अस्सेंबली शॉप आदि का दौरा किया। कारखाना भ्रमण के दौरान प्रतिनिधिमंडल को लोकोमोटिव निर्माण के विभिन्न चरणों से अवगत कराया गया। प्रतिनिधिमंडल को बरेका में उपलब्ध अत्याधुनिक विनिर्माण सुविधाओं को भी दिखाया गया। प्रतिनिधिमंडल बरेका में उपलब्ध डिज़ाइन क्षमताओं और निर्माण सुविधाओं से काफी प्रभावित दिखे।

लोको पायलट को सचेत करने वाले बहादुर लड़के को रेल प्रशासन ने किया पुरस्कृत



मालदा में 12 वर्षीय एक लड़के ने अपनी लाल शर्ट लहराकर तेज रफ्तार वाली एक यात्री ट्रेन के लोको पायलट को सतर्क करते हुए बारिश से क्षतिग्रस्त रेल पटरी के हिस्से को पार करने से रोका और अपनी बहादुरी का परिचय दिया। दिनांक 21 सितंबर, 2023 को भालुका रोड यार्ड पर ट्रैक और अन्य कार्यों का रखरखाव कार्य हो रहा था। एक स्थान पर जहाँ बारिश से मिट्टी और कंकड़-पत्थर बह गए थे। निकटवर्ती गाँव के एक प्रवासी श्रमिक का पुत्र मुरसलीन शेख यार्ड में कार्यरत रेल कर्मचारियों के साथ ही मौजूद था। रेल पटरियों के नीचे बारिश से क्षतिग्रस्त हिस्से को देखने पर, उक्त लड़के ने उस समय समझदारी से काम लिया और ड्यूटी पर मौजूद अन्य रेल कर्मचारियों के साथ-साथ अपनी लाल शर्ट लहराते हुए पास आ रही यात्री ट्रेन के लोको पायलट को सतर्क किया। पू. सी. रेल प्रशासन ने 25 सितंबर, 2023 को उस बहादुर लड़के को उसकी वीरता के लिए एक प्रमाणपत्र और नकद राशि से पुरस्कृत किया। मालदा उत्तर के सांसद खगेन मुर्मु के साथ कटिहार के मंडल रेल प्रबंधक श्री सुरेंद्र कुमार उक्त लड़के के घर पहुँचे एवं उसे पुरस्कृत करते हुए उसके प्रयास की सराहना की।

बरेका 'रेल मंत्री राजभाषा शील्ड' से सम्मानित

राजभाषा हिन्दी के प्रयोग प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रेल मंत्रालय द्वारा बनारस रेल इंजन कारखाना को हिन्दी का सर्वाधिक एवं उत्कृष्ट प्रयोग करने के लिए रेल मंत्री राजभाषा शील्ड प्रदान की गई। इसके साथ ही बरेका के वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी डॉ. संजय कुमार सिंह के कहानी संग्रह 'आखिरी टुकड़ा' के लिए प्रेमचंद पुरस्कार योजना के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दिनांक 27 सितम्बर, 2023 को रेल भवन में आयोजित समारोह में श्री मोहित सिन्हा, महानिदेशक, मानव संसाधन, रेलवे बोर्ड ने डॉ. संजय कुमार सिंह को रेल मंत्री राजभाषा शील्ड एवं प्रेमचंद पुरस्कार प्रदान किया। इस अवसर पर निदेशक (राजभाषा) एवं रेलवे बोर्ड के अनेक अधिकारियों सहित विभिन्न रेलवे से पधारे अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।



चिरेका ने वित्त वर्ष 2023-24 में निर्मित 300वें रेल इंजन को किया रवाना



सर्वाधिक विद्युत रेलइंजन उत्पादन का विश्व कीर्तिमान रचने वाली भारतीय रेल की सहायक उत्पादन इकाई चित्तरंजन रेलइंजन कारखाना (चिरेका) ने चालू वित्तीय वर्ष 2023-24 में प्रथम छः माह में रिकॉर्ड 300वां रेलइंजन उत्पादन कर एक ऐतिहासिक सफलता हासिल की है। यह उपलब्धि किसी भी वित्तीय वर्ष के कार्य दिवसों की तुलना में सबसे अच्छी है। 30 सितम्बर, 2023 को चिरेका उत्पादित 300वां रेलइंजन (डब्लूएजी 9एचसी 38,189, को राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित किया गया। शॉप 19 के टेस्ट शेड से 300वें रेलइंजन को श्री पी आर दास, एसएसई द्वारा श्री देबी प्रसाद दास, महाप्रबंधक चिरेका के उपस्थिति में रवाना किया गया। इस मौके पर चिरेका के सभी विभागों के प्रधान अध्यक्ष, वरिष्ठ अधिकारी, पर्यवेक्षक सहित कर्मचारी गण उपस्थित थे।



आप सबका **भारतीय रेल** के साथ अटूट रिश्ता है

भारतीय रेल के साथ आप अपने संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, गीत, लेख आदि हिन्दी में हमें भेज सकते हैं। पसंद आने पर रचनाओं को हम रेल मंत्रालय की आधिकारिक मासिक पत्रिका

भारतीय रेल

में प्रकाशित करेंगे

ई-मेल editorbhartiyarailrb@gmail.com

चयनित सामग्री/लेख की जानकारी ई-मेल द्वारा दी जाएगी,
प्रकाशित रचनाओं के लिए रेल मंत्रालय द्वारा निर्धारित मानदेय भी दिया जाएगा

बरेका में मानसिक स्वास्थ्य जागरुकता कार्यशाला का आयोजन



दिनांक 5 अक्टूबर, 2023 को विश्व मानसिक स्वास्थ्य सप्ताह के अवसर पर बरेका के प्राविधिक प्रशिक्षण केन्द्र, ऑडिटोरियम हॉल में मानसिक स्वास्थ्य जागरुकता पर कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ बरेका महाप्रबंधक श्री बासुदेव पांडा ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर प्रमुख मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. देवेश कुमार ने बताया कि भारत में मानसिक बीमारियॉं काफी तेजी से बढ़ रही हैं और लगभग 15 प्रतिशत की आबादी इस बीमारी से किसी न किसी रूप में ग्रस्त है। वर्तमान में औद्योगिक सेट-अप में ये बीमारियॉं डिप्रेशन, अवसाद स्ट्रेस, तनाव तथा अवसादग्रस्त चिन्ता के रूप में प्रारम्भ होती हैं एवं कालांतर में गंभीर बीमारियों का रूप धारण कर लेती हैं। मानसिक बीमारियों का प्रतिशत भारतीय कारपोरेट कर्मचारियों में काफी अधिक 42.5 प्रतिशत तक रिपोर्ट की गयी है, जबकि उत्पादन सेक्टर में यह 14.25 प्रतिशत है। जो चिंतनीय है। भारत में मानसिक बीमारियों को गंभीरता से नहीं लिया जाता है तथा इसी कारण से इसके अत्यधिक दुष्प्रभाव प्रकट हो रहे हैं, जिसके लिए जन-जागरुकता की अधिक आवश्यकता है।

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर बरेका में आयोजित जन-जागरुकता कार्यक्रम के लिए वाराणसी के देवा इंस्टीच्यूट के निदेशक एवं मानसिक रोग विशेषज्ञ चिकित्सक डॉ. वेणुगोपाल झावर द्वारा बरेका औद्योगिक संस्थान में कार्यरत कर्मियों के लिए मानसिक स्वास्थ्य एवं सम्बन्धित मुद्दों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया इस अवसर पर डॉ. अमरेश श्रीवास्तव, पूर्व प्रोफेसर, मनोचिकित्सक व प्रसिद्ध शोधकर्ता एवं लेखक, ओंटारियो इंस्टीट्यूट फॉर स्टडीज इन एजुकेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो, कनाडा ने भी अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया, ताकि मानसिक बीमारियों में हो रही वृद्धि की रोकथाम की जा सके। इस वर्ष मानसिक स्वास्थ्य सप्ताह के थीम मानसिक स्वास्थ्य एक सार्वत्रिक मानव अधिकार है, 'मेंटल हेल्थ इज ए यूनिवर्सल ह्यूमन राइट' पर विस्तृत चर्चा की गई तथा कार्यक्रम में उपस्थित श्रोतागणों के प्रश्नों व शंकाओं का समाधान किया गया। इस कार्यक्रम में बरेका के अधिकारी कर्मचारीगण तथा चिकित्सालय के पैरामेडिकल स्टाफ सहित लगभग 350 लोग सम्मिलित हुए।

अंतरराष्ट्रीय रेल उपकरण प्रदर्शनी 2023 में बनारस रेल इंजन कारखाना द्वारा प्रदर्शित रनिंग लोको मॉडल बना आकर्षण का केंद्र

भारतीय उद्योग परिसंघ द्वारा अंतरराष्ट्रीय रेल उपकरण प्रदर्शनी 12 से 14 अक्टूबर, 2023 तक प्रगति मैदान नई दिल्ली में लगाई गई। भारतीय रेल ने अब तक का सबसे बड़ा मंडप स्थापित किया, जिसने इस क्षेत्र में भारत की ताकत, क्षमताओं और इसके विस्तार और आधुनिकीकरण योजनाओं के लिए भारतीय रेल की भविष्य की आवश्यकताओं को प्रदर्शित किया।

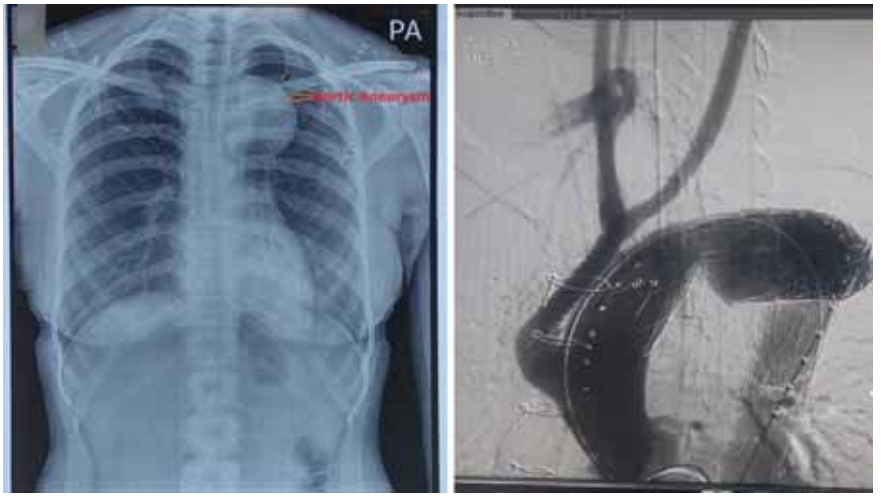
बनारस रेल इंजन कारखाना मण्डप को मुख्य गुणता आश्वासन प्रबंधक श्री प्रवीण कुमार की देख रेख में लगाया गया। बरेका के जनसंपर्क अधिकारी राजेश कुमार ने रेल प्रदर्शनी से सम्बंधित थीम व अन्य प्रदर्शन सामग्री की विस्तृत जानकारी



उपस्थित आगंतुकों के समक्ष प्रस्तुत की, जिसमें विभिन्न प्रदर्शित रेल लोको मॉडल तथा बरेका की रेल इंजन निर्यात क्षमता, वर्तमान उपलब्धियाँ को इंफोग्राफिक के माध्यम से दर्शाया गया था। इस प्रदर्शनी में विभिन्न प्रकार के डीजल एवं विद्युत रेल लोको मॉडल को सुंदरतम ढंग से दर्शाया गया था, जो आकर्षण का केंद्र बना।

पश्चिम रेलवे के जगजीवन राम अस्पताल ने पहली जटिल कार्डियोवैस्कुलर इंटरवेंशनल प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूर्ण

मुंबई सेंट्रल स्थित पश्चिम रेलवे के जगजीवन राम अस्पताल (जेआरएच) ने चिकित्सा विशेषज्ञता के क्षेत्र में एक और उपलब्धि हासिल की है। जगजीवन राम अस्पताल के कार्डियोवैस्कुलर विभाग द्वारा अपनी पहली अत्यधिक जटिल कार्डियोवैस्कुलर इंटरवेंशनल प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूर्ण की गई, जो दुनिया भर में की जाने वाली सबसे दुर्लभ प्रक्रियाओं में से एक है और भारतीय रेल में भी पहली बार की गई है। यह प्रक्रिया एक 32 वर्षीय महिला पर की गई।



पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री सुमित ठाकुर के अनुसार एक 32 वर्षीय मरीज को पिछले 6 महीनों से सीने में दर्द और हार्ट फेल्योर की शिकायत थी। गहन जाँच करने पर पाया गया कि मरीज एक दुर्लभ और जानलेवा बीमारी से पीड़ित था, जहाँ उसका एओर्टा 61 मिमी X 72 मिमी के आकार तक फैल गया था, जिससे एओर्टा के थोरैसिक सेगमेंट में फैलाव (थोरैसिक एओर्टा एन्यूरिज्म) हो गया था, जो फटने की स्थिति में था। एओर्टा के आर्क के सभी तीन बड़े वेसेल शामिल थे, जो मस्तिष्क और दोनों ऊपरी अंगों में रक्त परिसंचरण के लगभग पूरी तरह से खतरे में पड़ने की स्थिति का संकेत दे रहे थे। मरीज की गंभीर और जानलेवा नैदानिक स्थिति को देखते हुए कार्डियोलॉजिस्ट, कार्डियक सर्जन, इंटरवेंशनल रेडियोलॉजिस्ट और कार्डियक एनेस्थेसियोलॉजिस्ट के बीच एक आपात बैठक की गई तथा एक जोखिम भरी, दुर्लभ एवं जटिल हाइब्रिड (सर्जिकल और पर्क्यूटेनियस) प्रक्रिया की योजना बनाई गई। प्रक्रियाएं सफलतापूर्वक पूरी की गईं।

यह प्रक्रिया पश्चिम रेलवे की प्रमुख मुख्य चिकित्सा निदेशक डॉ. हफीजुन्निसा और जगजीवन राम अस्पताल की चिकित्सा निदेशक डॉ. ममता शर्मा के कुशल मार्गदर्शन में की गई।

आरेडिका में मोजाम्बिक के प्रतिनिधि मंडल का दौरा



आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना, रायबरेली में बने रेल डिब्बों का विदेश में निर्यात हो रहा है। इसी हेतु दिनांक 25 सितम्बर, 2023 को अफ्रीकी देश मोजाम्बिक के एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मंडल ने आरेडिका का दौरा किया। इसी परिप्रेक्ष्य में, सीएफएम मोजाम्बिक रेलवे के श्री कारलोस इस्माइल मैम्बों के नेतृत्व में 4 अधिकारियों का प्रतिनिधि मंडल, जिसमें श्री अकीतल हैगी इब्राइमो, श्री मिलिओन फेनियास कूना चंगला, श्री इंसियो फ्लोर कुबांना शामिल हैं ने आरेडिका का निरीक्षण किया एवं सीएफएम मोजांम्बिक रेलवे को जाने वाले 10 कोचों का निरीक्षण कर कोचों को मोजांम्बिक भेजने के लिए क्लीयरेन्स दिया।

महाप्रबंधक श्री प्रशान्त कुमार मिश्रा ने बताया कि हम मोजाम्बिक रेलवे की आवश्यकतानुसार कोच बनाने के लिए सक्षम हैं। हम पर्यटकों के लिए ऐसे कोच भी बना सकते हैं, जिनमें बैठे यात्री आराम से बाहर के दृश्यों का अवलोकन कर सकते हैं। आरेडिका के बने कोच मोजाम्बिक रेलवे की पटरियों पर 2022 से ही दौड़ रहे हैं हमने मोजाम्बिक के लिए 90 कोचों की आपूर्ति की है और वे अपना बेहतर काम कर रहे हैं।

रेल भवन में मनाया गया हिन्दी पखवाड़ा-2023



हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर रेल भवन में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में भाग लेते प्रतिभागीगण

रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) में दिनांक 14 से 27 सितंबर, 2023 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान बोर्ड कार्यालय में अधिकारियों/कर्मचारियों में हिंदी के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से, विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें बोर्ड कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार, पखवाड़े का शुभारंभ 14 सितम्बर, 2023 को अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में प्रतिभागिता करके किया गया। यह सम्मेलन राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा दिनांक 14-15 सितंबर, 2023 को पुणे में आयोजित किया गया था।

बोर्ड कार्यालय में 14 सितंबर, 2023 को माननीय गृह मंत्री एवं रेल मंत्री के 'हिंदी संदेश' का वाचन किया गया। इसी दिन 'ऑनलाइन पटलों (प्लेटफॉर्मों) पर हिंदी के बढ़ते कदम' और आज के जमाने में साहित्य पढ़ने-सुनने की आवश्यकता' विषय पर 'हिंदी निबंध प्रतियोगिता' तथा 18 सितंबर, 2023 को 'हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया।

19 सितंबर, 2023 को 'हिंदी वाक् प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया जिसमें "देश के विकास में अंग्रेजी बाधक और भारतीय भाषाएँ सहायक हैं'' कथन के समर्थन और विरोध में प्रतिभागियों ने अपने सशक्त विचार रखे।

20 सितंबर, 2023 को पूर्वाहन में श्री नरेश कुमार, उपनिदेशक, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली, ने "कार्यालयीन अनुवाद की समस्याएं और समाधान" के सम्बन्ध में श्रोताओं को महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। तत्पश्चात, निदेशक (राजभाषा), डॉ. बरूण कुमार ने 'शुद्ध हिंदी कैसे लिखे' नामक विषय पर अपना व्याख्यान दिया।

22 सितंबर, 2023 को रेल भवन के सम्मेलन कक्ष में कविवर रामधारी सिंह 'दिनकर' एवं राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी की संयुक्त जयंती एवं उनके साहित्य से सम्बन्धित प्रदर्शनी लगाई गई। इस अवसर पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित श्रीमती अल्पना मिश्र, प्रोफेसर (हिंदी विभाग), दिल्ली विश्वविद्यालय ने श्री मैथिलीशरण गुप्त तथा निदेशक (राजभाषा) ने कविवर रामधारी सिंह 'दिनकर' जी के जीवन एवं कृतित्व पर अपने विचार व्यक्त किए।

25 सितंबर, 2023 को 'संगोष्ठी' का आयोजन किया गया जिसमें श्री आलोक श्रीवास्तव, महाप्रबंधक, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन, नोएडा ने 'ऊर्जा के क्षेत्र में वैश्विक परिदृश्य और भारत' पर व्याख्यान दिया इसके बाद डॉ. अतुल गुप्ता, मुख्य चिकित्सक, उत्तर रेलवे केंद्रीय चिकित्सालय, नई दिल्ली ने "हमारी जीवन शैली और स्वास्थ्य प्रबंधन" विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बहुत ही उपयोगी जानकारी दी।

26 सितंबर, 2023 को बोर्ड कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए 'अंताक्षरी प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया, जिसमें हिंदी शब्द ज्ञान को बढ़ावा देने के साथ-साथ हिंदी गानों के माध्यम से हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ाने का उल्लेखनीय प्रयास किया गया।

27 सितंबर, 2023 को पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह का आयोजन किया गया इसका आरंभ रेलवे बोर्ड के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा एक संगीत कार्यक्रम की प्रस्तुति के साथ हुआ। इसमें आकर्षक गीतों, बांसुरीवादन एवं तबले की संगत ने श्रोताओं का मन मोह लिया।

तत्पश्चात, हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं रेलवे बोर्ड की विभिन्न पुरस्कार योजनाओं जैसे प्रेमचंद पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार, लाल बहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक लेखन पुरस्कार, रेल मंत्री राजभाषा शील्ड/ट्रॉफी एवं चल वैजयंती पुरस्कार योजना तथा राजभाषा व्यक्तिगत नकद पुरस्कार योजना के पुरस्कार विजेताओं को महानिदेशक (मानव संसाधन) द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।



वाक् प्रतियोगिता में अपने विचारों को रखते प्रतिभागीगण

युवाओं की पहली पसंद बनती वंदे भारत ट्रेन



अपनी तेज रफ्तार, विश्वस्तरीय सुविधाओं और यात्रा समय में कमी के कारण यह सेमी हाई स्पीड ट्रेन इस मौजूदा त्योहारी सीजन के दौरान अपने परिवार के पास जाने वाले यात्रियों की पसंदीदा ट्रेन बन गई है। यही कारण है कि उत्तर रेलवे की इन रेलगाड़ियों में यात्रियों के लिए सीटों की बुकिंग लगभग पूरी रहती है। अपनी रफ्तार, आरामदेह सफर एवं किफायती किराये के साथ, वंदे भारत वर्तमान में भारत के युवाओं की पसंदीदा ट्रेन बन गई है क्योंकि 25 से 34 वर्ष की आयु वर्ग के युवा वंदे भारत से यात्रा करना पसंद कर रहे हैं और उन्हें सस्ती दरों पर बेहतर सुविधाएं भी मिल रही हैं।

उत्तर रेलवे वर्तमान में नई दिल्ली से देहरादून, वाराणसी, अंब अंदौरा और कटड़ा मार्ग पर चार वंदे भारत ट्रेनों का संचालन कर रही है। जैसे-जैसे उत्तर रेलवे जोन में वंदे भारत ट्रेनों की संख्या बढ़ा रहा हैं, यह व्यावसायिक रूप से महत्त्वपूर्ण राज्यों और शहरों को आपस में जोड़ रही है और यात्रा समय में कमी आने, यातायात की कोई चिंता ना होने एवं यात्रियों के बजट के भीतर रेलयात्रा की सस्ती दरों के कारण 25-34 और 35-49 वर्ष के आयु वर्ग का कामकाजी समुदाय इन ट्रेनों को अपने दैनिक आवागमन के लिए पसंद करते हैं। वाराणसी और कटड़ा जैसे कई सांस्कृतिक और धार्मिक रूप से महत्त्वपूर्ण शहर उन यात्रियों के बीच बेहद लोकप्रिय हैं, जो अब हमारी उत्तर रेलवे जोन की नई दिल्ली वंदे भारत एक्सप्रेस और श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा एक्सप्रेस से यात्रा कर रहे हैं।

केवल युवा ही नहीं, अपितु 60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के वरिष्ठ नागरिक भी वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनों से यात्रा करने के लिए उत्साहित हैं क्योंकि ट्रेनों में उपलब्ध विश्वस्तरीय सुविधाओं के कारण इनमें आरामदेह यात्रा का अनुभव मिलता है। वाराणसी और कटड़ा वंदे भारत वरिष्ठ नागरिकों के लिए तीर्थाटन और पर्यटन का अनूठा संगम प्रदान कर रही हैं। ये रेलगाड़ियाँ वाराणसी के सुप्रसिद्ध काशी विश्वनाथ और काल भैरव जैसे विश्व प्रसिद्ध मंदिरों और सारनाथ जैसे स्थलों के लिए सुविधाजनक यात्रा प्रदान कर रही हैं तथा श्री माता वैष्णों देवी कटड़ा व रघुनाथ मंदिर व पटनी टॉप और जम्मू जैसे मशहूर पर्यटक स्थलों के लिए आसान पहुँच प्रदान कर रही हैं।

इसी प्रकार से वर्तमान में पश्चिम रेलवे पर चार वंदे भारत ट्रेनें अर्थात मुंबई-गांधीनगर केपिटल, अहमदाबाद-जामनगर, अहमदाबाद (साबरमती)-जोधपुर और इंदौर-भोपाल-नागपुर चल रही हैं। वंदे भारत ट्रेनों ने रेल यात्रा को एक नया आयाम प्रदान किया है और यात्रियों के बीच जल्द लोकप्रिय हो गई है। यात्रियों ने अन्य ट्रेनों की तुलना में वंदे भारत ट्रेनों के आरामदायक यात्रा का स्तर, आलीशान आंतरिक सज्जा, परोसे जाने वाले विभिन्न प्रकार के स्वस्थ और स्वादिष्ट भोजन तथा कम यात्रा समय की सराहना की है। उन्होंने वंदे भारत ट्रेनों की यात्रा को विमान से यात्रा के बराबर बताया है, जिसमें चेक-इन की कम परेशानी और अधिक किफायती मूल्य निर्धारण शामिल है।

पश्चिम रेलवे की मुंबई-गांधीनगर केपिटल वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन देश की तीसरी वंदे भारत एक्सप्रेस थी, जिसे 30 सितंबर, 2022 को शुरू किया गया था। यह राज्य की राजधानियों मुंबई और गुजरात को जोड़ती है तथा मार्ग में सात जिलों को कवर करते हुए बोरीवली, वापी, सूरत, वडोदरा और अहमदाबाद स्टेशनों पर रुकती है। 130% से अधिक की औसत ऑक्यूपेंसी के साथ यह ट्रेन यात्रियों के बीच शीघ्र लोकप्रिय हो गई है। इस ट्रेन की माँग सभी आयु वर्गों के बीच बहुत अधिक है, विशेषकर 31 से 45 वर्ष के आयु वर्ग के यात्रियों की संख्या 33% से अधिक है, इसके बाद 46 से 60 वर्ष के आयु वर्ग के यात्री हैं, जिनकी संख्या 25% से अधिक है, जबकि 15 से 30 वर्ष की आयु वर्ग के यात्रियों की संख्या लगभग 24% है। वरिष्ठ नागरिक लगभग 14% हैं। साथ ही, इस ट्रेन से यात्रा में आसानी के कारण महिला यात्री वंदे भारत ट्रेनों को सबसे अधिक प्राथमिकता दे रही हैं। इसी तरह, पश्चिम रेलवे की अहमदाबाद-जामनगर, अहमदाबाद (साबरमती)-जोधपुर और इंदौर-नागपुर वंदे भारत ट्रेनों को भी 25 से 45 वर्ष की आयु वर्ग के युवाओं, व्यापारिक यात्रियों, पर्यटकों से अच्छा प्रतिसाद मिल रहा है। ये वंदे भारत ट्रेनें ट्रेन यात्रा के आनंद के साथ वायुयानों की तरह तेज, आरामदायक और स्टाइलिश यात्रा का अनूठा अनुभव प्रदान करती हैं, जिसके कारण इसकी ऑक्यूपेंसी बहुत अधिक है।

भारतीय
पत्रिका की ऑनलाइन सदस्यता

STEP 1

ऑनलाइन सदस्यता हेतु **www.irctc.co.in** पर जाएं।

इस पेज के **विज्ञापन** (Promotions) पर जाएं।

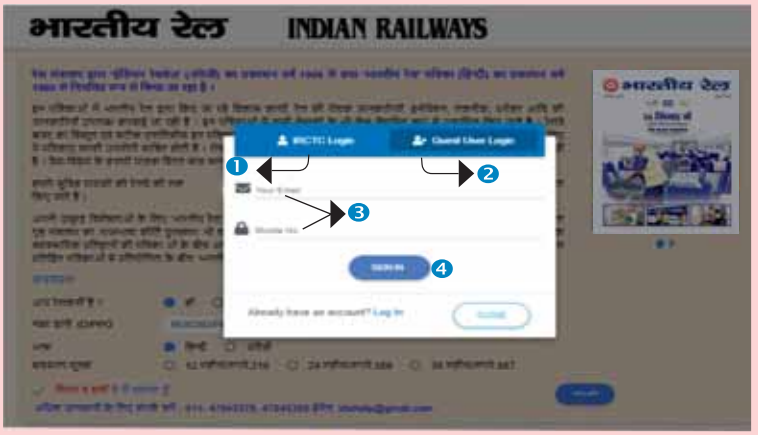
आप सीधे
www.irctctourism.com/ IRBRmag/#/home/hn
पर भी जा सकते हैं।



❸ **'भारतीय रेल पत्रिका'** पर क्लिक करें।

STEP 3

❶ इस बॉक्स में यदि आप के पास आईआरसीटीसी का लॉग-इन, पासवर्ड है तो उसका उपयोग करें।

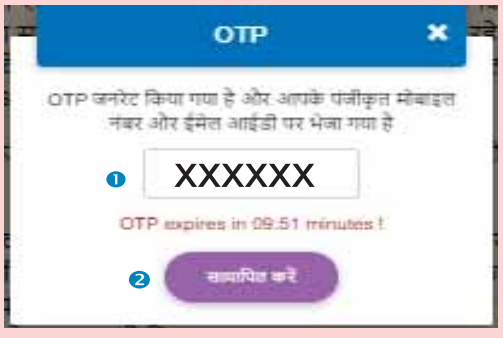


❷ लॉग-इन आईडी नहीं है तो गेस्ट लॉग-इन पर क्लिक करें।

❸ उसमें अपना ई-मेल तथा मोबाइल नंबर दर्ज करें।

❹ सबमिट बटन दबाएँ।

STEP 5



❶ आपके पंजीकृत मोबाइल एवं ई-मेल पर आए ओटीपी को बॉक्स में दर्ज करें एवं

❷ सत्यापित करें

STEP 6



❶ पेमेंट मोड (कार्ड, नेट बैंकिंग, यूपीआई, वॉलेट, इंटरनेशनल कार्ड तथा आईपे) एवं

❷ पेमेंट गेट-वे का ऑप्शन पसंद करें

❸ मेक पेमेंट का बटन दबाएं

रेल
प्राप्त करने की सरल प्रक्रिया

STEP 2

1. यदि आप रेलकर्मी हैं तो 'हां' पर या रेलकर्मी नहीं हैं तो 'नहीं' पर क्लिक करें।
2. यदी 'हां' तो बॉक्स में अपना आरयूआईडी/ आईडी/पीपीओ नंबर तथा एक आधिकारिक आईडी की स्कैन कॉपी अपलोड करें।
3. 'भारतीय रेल' पत्रिका के लिए 'हिंदी' को और 'इंडियन रेलवेज' पत्रिका के लिए 'अंग्रेजी' में क्लिक करें।
4. एक, दो या तीन यानि जितने साल की सदस्यता चाहते हैं, उस बिन्दु पर क्लिक करें।



6. सबमिट (जमा) का बटन दबाएं।

5. नियम व शर्तों पर क्लिक करें तथा उसे ध्यान से पढ़ लें। यदि सहमत हों तो बॉक्स में टिक मार्क करें।

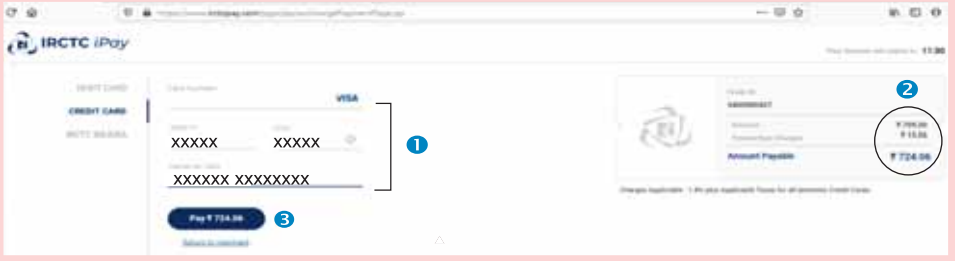
STEP 4

1. अपना पूरा पता पिन कोड के साथ दर्ज करें



2. सबमिट बटन दबाएँ।

STEP 7



1. पेमेंट मोड की डीटेल भरें
2. पेमेंट एमाउंट की जानकारी देखें।
3. संतुष्ट होने पर ही 'पे' बटन को दबाएं।

➲ बैंक ओटीपी की प्रक्रिया पूर्ण होने पर पेमेंट सक्सेस फुल का मैसेज स्क्रीन पर दिखाई देगा।

कृपया ध्यान दें

- पेमेंट के समय नियमानुसार ट्रांजेक्शन शुल्क लगते हैं, कृपया पेमेंट करते समय देख लें।
- पेमेंट की प्रक्रिया पूर्ण होने पर आपको सदस्यता संबंधित जानकारी का एस.एम.एस. तथा मेल प्राप्त होगा।
- पेमेंट प्राप्त होते ही निर्धारित माह से आपको पत्रिका प्राप्त होनी शुरू हो जाएगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - 011- 47845378, 47845380 ईमेल: irbrhelp@gmail.com

उत्तर मध्य रेलवे के अधिकारी श्री सर्वेश द्विवेदी बने आयरमैन

उत्तर मध्य रेलवे, मुख्यालय प्रयागराज के अधिकारी श्री सर्वेश द्विवेदी ने इस रेलवे से पहले आयरनमैन बनकर उत्तर मध्य रेलवे को गौरवान्वित किया। श्री सर्वेश 2009 बैच के आई.आर.एस.एस. अधिकारी हैं और वर्तमान में उप मुख्य सामग्री प्रबंधक/ यांत्रिक के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने दिनांक 8 अक्टूबर, 2023 को आयरनमैन गोवा 70.3 ट्रायथलॉन में भाग लिया। इस अंतरराष्ट्रीय ट्रायथलॉन को बिना ब्रेक के 8.30 घंटे के भीतर पूरा करने वाली सबसे कठिन सहनशक्ति चुनौती में से एक माना जाता है। इस आयोजन में 1.9 किमी तैराकी कोर्स, 90 किमी साइकिलिंग कोर्स और 21.1 किमी रन कोर्स शामिल हैं। प्रत्येक कोर्स का अपना कट-ऑफ टाइम होता है। यदि कोई आवंटित कट-ऑफ समय के भीतर दिए गये कोर्स को पूरा नहीं करता है, तो प्रतिभागी को अयोग्य घोषित कर दिया जाएगा। श्री सर्वेश ने पूरी दौड़ 6 घंटे 40 मिनट में पूरी की। यह मुकाम उन्होंने अपने पहले ही प्रयास में हासिल किया है। दुनिया के लगभग 50 देशों के लगभग 1500 ट्राई एथलीटों ने इस आयोजन में





भाग लिया/पंजीकृत किया था और सर्वेश 35-39 वर्ष के आयु वर्ग में 30वीं रैंक (ओवरऑल रैंक 135) पर थे।

पिछले साल कंधे की चोट के कारण वह इसमें हिस्सा नहीं ले सके थे। यह पूछने पर कि प्रशिक्षण के दौरान वह किस चीज के कारण लंबे समय तक चलते रहे, उन्होंने कहा, ''लंबी दूरी की ट्रायथलॉन के लिए प्रशिक्षण एक गोरिल्ला से लड़ने जैसा है, जब आप थके हुए होते हैं तो आप नहीं रुकते, आप तब रुकते हैं जब गोरिल्ला थक जाता है। दूसरे, खुद को फिर से अविष्कार करने और किसी सपने को हासिल करने के लिए संघर्ष करने में कभी देर नहीं होती। सपनों की कोई समाप्ति तिथि नहीं होती, चलते रहो।"

मीरामार (गोवा) समुद्रतट पर तैराकी शुरू हुई। अपने नए चश्मे पर फोगिंग होने के बावजूद (जिसके कारण समुद्र में दिखाई देना कम हो गया), उन्होंने 48 मिनट के भीतर 1.9 किमी की तैराकी पूरी की। सर्वेश ने 90 किमी साइकिलिंग के बाइक कोर्स को ट्रायथलॉन का सबसे अच्छा हिस्सा बताया। 3-लैप बाइक कोर्स राष्ट्रीय राजमार्ग-66 पर सुंदर मांडोवी नदी के किनारे मीरामार सर्कल से शुरू हुआ, जहाँ अगासियम गाँव के दोनों ओर चढ़ाई, आश्चर्यजनक परिदृश्य और हरी-भरी हरियाली काफी आकर्षक थी। रन कोर्स की ऊँचाई 250 मीटर थी और यह गोवा की गर्म और आर्द्र जलवायु में 3-लैप कोर्स था।

उनका कहना है कि जिंदगी उतार-चढ़ाव का रास्ता है और यह आपके सामने हर तरह की परिस्थितियां और चुनौतियां लाती है, लेकिन महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उन परिस्थितियों को कुछ खास बनाया जाए।

इससे पहले,उन्होंने कई उपलब्धियाँ हासिल की हैं और पिछले तीन वर्षों में उन्होंने अनेक हाफ और फुल मैराथन पूरी की हैं।

आई.आर.एस.एस. अधिकारी होने के कारण कार्यालय के फाइलों में लगे रहने बावजूद, 20 साल की उम्र जैसा फिटनेस का अहसास कराने वाले सर्वेश हम सभी के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत हैं।

खेलों में भारतीय रेल

रेलगाड़ियों में महिला सुरक्षा के लिए समर्पित-रेलवे सुरक्षा बल ने दिल्ली हाफ मैराथन–2023 में भाग लिया



महिलाओं के लिए रेलगाड़ियों में सुरक्षित यात्रा को बढ़ावा देने के लिए रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) की 25 सदस्यीय टीम ने दिनांक 15 अक्टूबर, 2023 को दिल्ली में हाफ मैराथन–2023 में भाग लिया। इस दौड़ का उद्देश्य महिलाओं की सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए आरपीएफ की विभिन्न पहलों के बारे में सार्वजनिक जागरुकता सृजन करना था। इस दौरान विशेष रूप से 'मेरी सहेली' पहल पर ध्यान केन्द्रित किया गया।

महिलाओं का सशक्तिकरण, भारत के विकास दृष्टिकोण का एक अपरिहार्य हिस्सा है। माननीय प्रधानमंत्री द्वारा परिकल्पित समृद्ध भारत का लक्ष्य सार्वजनिक स्थानों, विशेष रूप से व्यापक सार्वजनिक परिवहन नेटवर्क में महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने पर निर्भर है। रेलवे, सार्वजनिक परिवहन का प्राथमिक साधन है, इसलिए प्रतिदिन रेलगाड़ियों से यात्रा करने वाली महिलाओं की सुरक्षा हमारे देश के समग्र विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है।

रेल मंत्रालय के अंतर्गत काम करने वाला रेलवे सुरक्षा बल महिला रेल यात्रियों की सुरक्षा बढ़ाने के लिए लगन से कार्यरत हैं। भारत के विशाल रेलवे नेटवर्क पर काम कर रही 'मेरी सहेली' टीमें लंबी दूरी की रेलगाड़ियों में अकेले यात्रा करने वाली अनगिनत महिलाओं को सहायता और सुरक्षा प्रदान कर रही हैं। ट्रेनों और रेलवे परिसरों के भीतर महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए रेलवे सुरक्षा बल की महिला कर्मी, पुरुष कर्मियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करती हैं।

वर्ष 2023 में अब तक आरपीएफ कर्मियों ने चलती ट्रेनों के पास खतरनाक परिस्थितियों से 862 महिलाओं को सुरक्षित बचाकर उल्लेखनीय कार्य किया है। 'ऑपरेशन नन्हे फरिश्ते' के अंतर्गत उन्होंने 2,898 ऐसी अकेली लड़कियों की भी रक्षा की है, जो स्टेशनों और ट्रेनों में संभावित खतरे के दायरे में थीं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने 51 नाबालिग लड़कियों और 6 महिलाओं को मानव तस्करों के चंगुल से बचाया है।

आरपीएफ महिला कर्मियों ने गोपनीयता और गरिमा का सम्मान करते हुए, ट्रेन यात्रा के दौरान प्रसव पीड़ा से गुजर रही 130 माताओं के प्रसव में सहायता की है। 185,000 से अधिक हेल्पलाइन कॉल का जवाब देते हुए, आरपीएफ कर्मियों ने यात्रियों की समस्याओं को हल करने के लिए तेजी से काम किया है। आरपीएफ ने रेलगाड़ियों में निराश्रित, अस्वस्थ और बुजुर्गों से संबद्ध समस्याओं को सुलझाया और दिव्यांग महिलाओं को संकटग्रस्त स्थितियों से निकाला।

आरपीएफ ने जन–जागरुकता बढ़ाने और जन सहयोग हासिल करने के लिए 15 अक्टूबर, 2023 दिल्ली हाफ मैराथन में भाग लिया। इस दौरान देश के विभिन्न हिस्सों से महानिदेशक से लेकर कांस्टेबल तक विभिन्न रैंकों के 25 सदस्यीय दल ने आरपीएफ का प्रतिनिधित्व किया। इस दल में पंजाब, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र की चार महिला आरपीएफ कर्मी भी शामिल थीं, जो आरपीएफ नारीशक्ति का प्रतिनिधित्व कर रही थीं। मैराथन मार्ग के साथ–साथ आरपीएफ कर्मियों ने जनता के साथ मिलकर रेलवे में महिला सुरक्षा को प्रदर्शित करने वाले बैनर और पर्चे वितरित किए। रेल सुरक्षा कर्मियों ने इस कार्य को बढ़ावा देने के लिए सभी हितधारकों से समर्थन माँगा।



दक्षिण पूर्व रेलवे के बॉडीबिल्डर ने एशियन बॉडीबिल्डिंग एवं फिजिक स्पोर्ट्स चैंपियनशिप-2023 में जीता गोल्ड मेडल



दक्षिण पूर्व रेलवे के बॉडीबिल्डर, श्री राजू खान ने 01 से 7 सितंबर, 2023 तक काठमांडू, नेपाल में आयोजित 55वीं एशियाई बॉडीबिल्डिंग और फिजिक स्पोर्ट्स चैंपियनशिप–2023 में 65 किलोग्राम वर्ग में स्वर्ण पदक जीता। इस चैंपियनशिप में 24 देशों ने अलग–अलग भार वर्ग में हिस्सा लिया था। श्री राजू खान ने 65 किलोग्राम वर्ग में भाग लिया और देश के लिए स्वर्ण पदक जीता।

आरेडिका में 81वें अखिल भारतीय रेल मेन्स हॉकी चैंपियनशिप 2023-24 का आयोजन

आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना में दिनांक 5 से 10 अक्टूबर, 2023 तक 81वें अखिल भारतीय रेल मेन्स हॉकी चैंपियनशिप 2023–24 का आयोजन किया गया। जिसमें रेलवे जोन, प्रोडक्शन यूनिटों एवं रेलवे बोर्ड सहित कुल 10 टीमों के 230 खिलाड़ी तथा 20 ऑब्जर्बर, टेक्निकल ऑफिशियल, एथलेटिक फेडरेशन एवं रेलवे बोर्ड स्पोर्ट्स प्रमोशन बोर्ड के पदाधिकारी सहित कुल 250 लोग शामिल हुए तथा 20 मैच खेले गए, जिसमें से 4 टीमें पूर्व तटीय रेलवे भुवनेश्वर, उत्तर रेलवे दिल्ली, मध्य रेलवे बम्बई, पूर्व रेलवे कोलकाता, ने अगले दौर नॉक आउट फेज के लिए क्वालीफाई किया है ये चारों विजेता टीम 13 अक्टूबर, 2023 से सिकंदरावाद में आयोजित होने वाले नॉक आउट फेज में खेलेंगें।



पश्चिम रेलवे के खिलाड़ियों का एशियाई खेलों में शानदार प्रदर्शन



पारुल चौधरी



राजेश्वरी गायकवाड़



नवनीत कौर



शिरीन लिमये



अश्वनी के

हाल ही में चीन के हांगझू में संपन्न हुए 19वें एशियाई खेलों में पश्चिम रेलवे के कई खिलाड़ियों ने भारत का प्रतिनिधित्व किया और अपने शानदार प्रदर्शन से हमें गौरवान्वित किया है। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री सुमित ठाकुर के अनुसार शीर्ष एथलीट सुश्री पारुल चौधरी ने एशियाई खेलों में दो पदक जीते। उन्होंने महिलाओं की 5,000 मीटर स्पर्धा में स्वर्ण पदक और महिलाओं की 3,000 मीटर स्टीपलचेज में रजत पदक जीता। वेस्टर्न रेलवे की सुश्री राजेश्वरी गायकवाड़ एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय महिला क्रिकेट टीम की सदस्य थीं। इसके अलावा, सुश्री नवनीत कौर एशियाई खेलों में कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय महिला हॉकी टीम का हिस्सा थीं। पश्चिम रेलवे को सुश्री शिरीन लिमये के प्रदर्शन पर बेहद गर्व है, जो भारतीय महिला बास्केटबॉल टीम की कप्तान थीं और उन्होंने एशियाई खेलों में क्वार्टर फाइनल तक के सफर में कई जीत हासिल कीं। पश्चिम रेलवे की सुश्री अश्वनी एशियाई खेल 2022 में भाग लेने वाली भारतीय महिला वॉलीबॉल टीम का हिस्सा भी थीं।

13वीं अखिल भारतीय रेल पुरुष एवं महिला तीरंदाजी चैंपियनशिप आयोजित



13वीं अखिल भारतीय रेल (पुरुष और महिला) तीरंदाजी चैंपियनशिप, 2023 का आयोजन पूर्वोत्तर सीमा रेल द्वारा किया गया था। यह चैंपियनशिप 8 अक्टूबर, 2023 को पू. सी. रेल स्पोर्ट्स एसोसिएशन फुटबॉल स्टेडियम पांडू, गुवाहाटी में शुरू हुई। इस खेल स्पर्धा का उद्घाटन 9 अक्टूबर, 2023 को पूर्वोत्तर सीमा रेल के महाप्रबंधक श्री चेतन कुमार श्रीवास्तव ने अन्य रेल अधिकारियों की उपस्थिति में किया।

इस चैंपियनशिप में भारतीय रेल के विभिन्न जोनों और उत्पादन इकाइयों से कुल 11 टीमों ने भाग लिया। प्रतिभागियों में पूर्वोत्तर सीमा रेल, मालीगाँव, पूर्व रेलवे, कोलकाता, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर, दक्षिण पूर्व रेलवे, कोलकाता, दक्षिण मध्य रेलवे, सिकंदराबाद, दक्षिण रेलवे, चेन्नई, पूर्व मध्य रेलवे, हाजीपुर, पूर्वी तट रेलवे, भुवनेश्वर, उत्तर पूर्व रेलवे, गोरखपुर, चितरंजन लोकोमोटिव वर्क्स, रेलवे सुरक्षा बल शामिल थें। इस चैंपियनशिप में भारतीय रेल के 08 शीर्ष रैंकिंग वाले खिलाड़ी और अंतरराष्ट्रीय ख्याति के 05 खिलाड़ी सहित कुल 50 खिलाड़ियों ने भागीदारी की।

पूर्व रेलवे से ओलंपियन, अर्जुन पुरस्कार और पद्मश्री पुरस्कार प्राप्त एल. बोम्बायला देवी, पूर्व रेलवे से ओलंपियन और अर्जुन पुरस्कार प्राप्त मंगल सिंह चांपिया, पूर्व रेलवे से ओलंपियन और अर्जुन पुरस्कार प्राप्त राहुल बनर्जी, चित्तरंजन लोकोमोटिव वर्क्स से ओलंपियन लक्ष्मी रानी माझी और एशियाई खेलों की कांस्य पदक विजेता पूर्व रेलवे की तृषा देब भाग लेने वाले खिलाड़ियों में शामिल थीं।

पश्चिम मध्य रेल, भारत स्काउट्स एवं गाइड्स की छठवीं राज्य रैली प्रतियोगिता का आयोजन

भोपाल में स्थानीय हबीबगंज रेलवे कालोनी स्थित खेल मैदान (स्पोर्ट्स ग्राउंड) में दिनांक 9 से 13 अक्टूबर 2023 तक आयोजित पश्चिम मध्य रेल, भारत स्काउट्स एवं गाइड्स की पाँच दिवसीय छठवीं राज्य रैली प्रतियोगिता का शुभारंभ दिनांक 9 अक्टूबर को मुख्य अतिथि मंडल रेल प्रबंधक श्री देवाशीष त्रिपाठी द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने भारत स्काउट गाइड सेरेमोनियल परेड एवं मार्च पास्ट की सलामी ली। शुभारंभ कार्यक्रम में जबलपुर, भोपाल, कोटा तीनों मंडलों के कैडेट ने एक से बढ़कर एक रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। इस अवसर पर महाप्रबंधक श्री सुधीर कुमार गुप्ता ने सम्बोधित किया।



इस अवसर पर पश्चिम मध्य रेल महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती संध्या गुप्ता, महिला कल्याण संगठन भोपाल मंडल की अध्यक्षा श्रीमती गुंजन त्रिपाठी एवं सदस्याएं, स्काउट्स एवं गाइड्स के राज्य मुख्य आयुक्त एवं वरिष्ठ उप महाप्रबंधक श्री पंकज शर्मा, मंडल रेल प्रबंधक भोपाल श्री देवाशीष त्रिपाठी, जिला मुख्य आयुक्त एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक श्रीमती रश्मि दिवाकर, समस्त विभाग प्रमुख एवं अन्य अधिकारीगण, तीनों मंडलों के स्काउट्स एवं गाइड्स, रोवर्स एवं रेंजर्स, संगठन के समस्त पदाधिकारी, बड़ी संख्या में दर्शकगण एवं मीडिया प्रतिनिधि उपस्थित थे। इस रैली में जबलपुर, कोटा, भोपाल से लगभग 385 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में कोटा मंडल ने ओव्हर ऑल चैंपियन शील्ड जीती। राज्य मुख्य आयुक्त शील्ड सर्वाधिक सेंसेस वाले जबलपुर मंडल को दी गई। प्रतियोगिता में कोटा रेल मंडल ने बाजी मारते हुये सभी 20 प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान लेकर 'ओवर ऑल चैंपियन' शील्ड जीती। भोपाल मंडल को द्वितीय व जबलपुर मंडल को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

तस्वीर दीर्घा



शांत बैकवाटर, लहराते पेड़ और तिरुवनंतपुरम-कासरगोड वंदेभारत एक्सप्रेस-यात्रियों के लिए स्वर्ग।



कासरगोड-तिरुवनंतपुरम सेंट्रल वंदे भारत एक्सप्रेस ज्वलंत नारंगी पोशाक के साथ एक अद्भुत विरोधाभास पेश करते हुए, आकाश और बेकल समुद्र तट के पानी के नीले विस्तार के साथ-साथ एकाकार हो जाती है।

श्रेय : नंदू कृष्णन



ऊटी के लिए ट्रेन सेवा के 115 वर्ष पूरे होने का जश्न मनाया गया। ऊटी के लिए पहली ट्रेन 15 अक्टूबर, 1908 को चली थी।

प्रगति रिपोर्ट

नागपुर-इटारसी तीसरी लाइन (297.05 किमी)



29 सितम्बर, 2023

काम पूरा हो गया है :
प्रमुख पुल–12/37, छोटे पुल–89/382
मिट्टी कार्य–44.48/103 लाख घन मीटर
ओएचई फाउंडेशन: 1066/6666
ओएचई मास्ट निर्माण–970/6060
नागपुर–इटारसी–भोपाल मार्ग पर भीड़ को कम करना और ट्रेन की गतिशीलता बढ़ाना।

पुणे-मिराज खंड का दोहरीकरण (279.05 किमी)





6 अक्टूबर, 2023

कार्य पूर्ण (167.14 कि.मी.):
पुणे–शिंदवणे
अम्बाले–नीरा
आदर्की–लोनंद
पलसी–जरंदेश्वर
सतारा–कोरेगाँव
सांगली–शेनोली
पूरा होने पर, इस मार्ग पर ट्रेनों की गतिशीलता को बढ़ाएगा।

भुज-नलिया गेज रूपांतरण परियोजना



अनुभाग : देशलपार-मोथला
लंबाई : 35.10 किमी
अद्यतन प्रगति :
85% मिट्टी का काम पूरा हो गया
गिट्टी बिस्तर, स्लीपर, और पटरियों की जोड़ी बनाने का कार्य जारी है
यह परियोजना ट्रेन परिचालन को सुव्यवस्थित करेगी और यात्रा के समय को भी कम करेगी।

7 अक्टूबर, 2023

कविसुभाष-बिमान बंदर (ऑरेंज लाइन) कोलकाता के ऋत्विकघटक मेट्रो स्टेशन





प्रगति
जारी कार्य :
कंक्रीटिंग का काम पूरा होने वाला है
एस्केलेटर, लिफ्ट और अन्य सुविधाओं की स्थापना
पूरा होने पर, यह कोलकाता हवाई अड्डे के लिए तेज कनेक्टिविटी प्रदान करेगा।

9 अक्टूबर, 2023

अहमदनगर-बीड-परली (261.25 किमी) नई लाइन



पूर्ण कार्यः
अहमदनगर-आष्टी खंड : 66.18 किमी
प्रमुख पुल : 49/64
छोटे पुल : 249/302
आरओबी : 14/65
आरयूबी : 110/130
मिट्टी कार्य-418/430 लाख घन मीटर

10 अक्टूबर, 2023

ओडिशा में खुर्दा रोड-बलांगीर रेल लाइन परियोजना



यह परियोजना लगातार प्रगति कर रही है, और इसकी पर्याप्त सर्कुलेटिंग एरिया वाली दासपल्ला स्टेशन बिल्डिंग सफलतापूर्वक चालू हो गई है।

11 अक्टूबर, 2023

भटनी–औंड़िहार रेल खंड



दोहरीकरण एवं विद्युतीकरण का कार्य तीव्र गति से जारी है। इसके पूरा होने से रेल खंड पर ट्रेनों का निर्बाध संचालन संभव होगा और लाइन क्षमता में बढ़ोत्तरी होगी।

11 अक्टूबर, 2023

सेंगोट्टई–पुनालूर, तमिलनाडु का विद्युतीकरण (49 किमी)





19 अक्टूबर, 2023

अद्यतन कार्य :
फाउंडेशन कास्टिंग : 100%
मास्ट निर्माण : 98%
वायरिंग : 87%
फायदे :
कोल्लम–चेन्नई के बीच निर्बाध रेल संपर्क
पर्यावरण अनुकूल रेल परिचालन।

बेंगलुरू कैंट रेलवे स्टेशन पर चार और प्लेटफार्मों का विस्तार अपने अंतिम चरण





ट्रेन की गतिशीलता को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। बेंगलुरु में रेल परिवहन विकल्पों का विस्तार करें

20 अक्टूबर, 2023

अहिरन-सुजनीपारा दोहरीकरण परियोजना में पुल क्रमांक 340 का निर्माण कार्य पूर्णता की ओर



मणिग्राम-निमटीटा दोहरीकरण परियोजना के एक भाग के रूप में यह राज्य के दक्षिणी और उत्तरी हिस्से के बीच कनेक्टिविटी में सुधर करेगा, जिससे सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।



24 अक्टूबर, 2023

उत्तराखंड के चुनौतीपूर्ण इलाकों में रेल इन्फ्रा को बढ़ावा देना



लछमोली–मलेथा में ऋषिकेश–कर्णप्रयाग बीजी रेल लिंक परियोजना टनल नं. 9 (2869 मीटर) के रूप में मील का पत्थर हासिल किया। 125 किलोमीटर की यह परियोजना तीर्थ स्थलों और व्यापार केंद्रों तक कनेक्टिविटी में सुधार करेगी।

21 अक्टूबर, 2023

भारत का पहला वर्टिकल लिफ्ट रेलवे सी ब्रिज इंजीनियरिंग के लिहाज से एक आश्चर्यजनक उपलब्धि है



निर्माण कार्य का 92% पूरा हो चुका है, बहुप्रतिष्ठित नया पम्बन रेलवे सी ब्रिज रामेश्वरम द्वीप को मुख्य भूमि से जोड़ेगा।

25 अक्टूबर, 2023

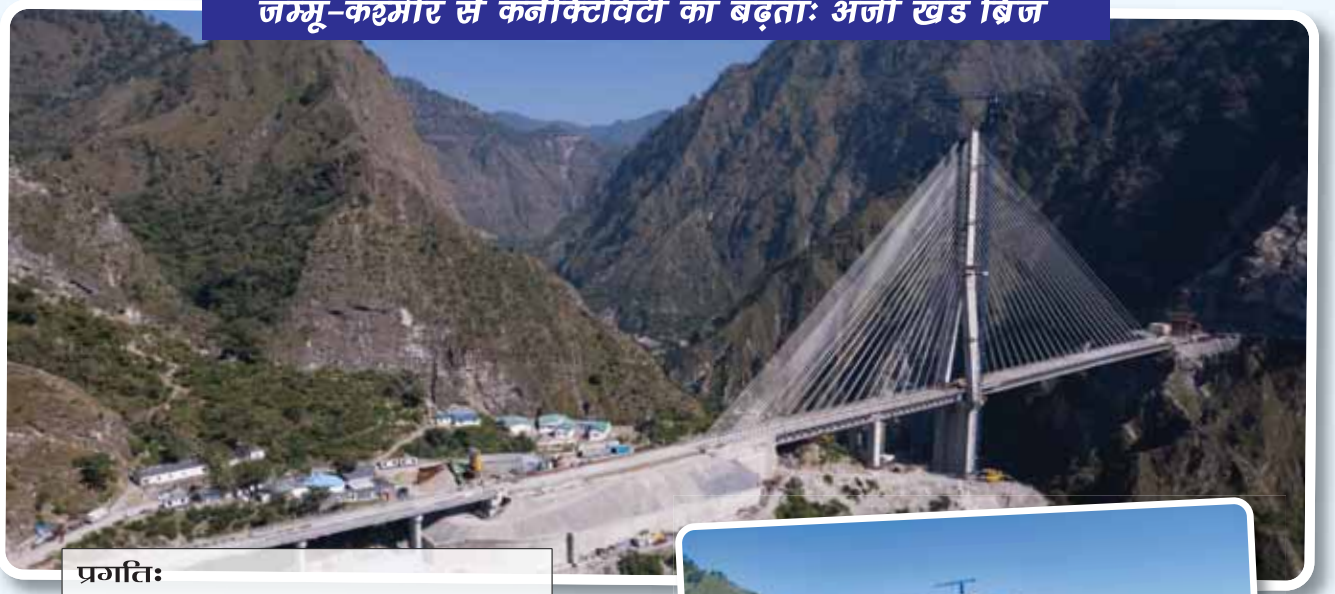
एनएससीबीआई हवाई अड्डे तक सीधी मेट्रो पहुंच में सुधार करने का लक्ष्य



कोलकाता, जय हिंद स्टेशन बिमानबंदर कॉरिडोर के माध्यम से नोआपाड़ा-बारासात और राजारहाट कॉरिडोर के माध्यम से कविसुभास-हवाई अड्डे को जोड़ेगा। स्टेशन का संरचनात्मक कार्य पूरा हो गया है और चालू होने पर, इससे यात्रा सुगम हो जाएगी।

26 अक्टूबर, 2023

जम्मू-कश्मीर से कनेक्टिविटी का बढ़ताः अंजी खंड ब्रिज



प्रगतिः
सहायक वायाडक्ट पूर्ण
केंद्रीय तटबंध पूरा
केबलों की अंतिम स्ट्रेसिंग पूरी हो गई
कश्मीर को शेष भारत से रेल द्वारा जोड़ने वाला भारत का पहला केबल स्टे रेल ब्रिज।



27 अक्टूबर, 2023

विजयवाड़ा स्टेशन पर कोच रेस्तरां लजीज व्यंजन परोसने के लिए





आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा स्टेशन पर स्वादिष्ट भोजन परोसने के लिए एक पुराने कोच को विवेकपूर्ण तरीके से एक नए कोच रेस्तरां में बदल दिया गया है।

रायगढ़ा रेलवे स्टेशन पर ओडिशा का पहला रेल कोच रेस्तरां





अप्रचलित एसी कोच का उपयोग रेस्तरां के रूप में करते हुए स्थानीय लोगों और यात्रियों को स्वादिष्ट भोजन परोसा जा रहा है। यह रेस्तरां संसाधनों के इष्टतम उपयोग की दिशा में भारतीय रेल के प्रयासों की दिशा में एक कदम है।

कोकराझार रेल कोच रेस्तरां



कोकराझार रेलवे स्टेशन के भीतर स्थित असम रेल कोच रेस्तरां में विविध-व्यंजन दावत में पधारिये और संसाधनों के पुनर्चक्रण की सुंदरता को अपनाते हुए स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद लीजिए

आंध्र प्रदेश के अनंतपुर रेलवे स्टेशन ने 20 अक्टूबर, 2023 को स्टेशन महोत्सव मनाया



इस अवसर पर रेल उपयोगकर्ता, जनता, परामर्शदात्री समिति एवं सेवानिवृत्त कर्मचारियों ने अपने अनुभव साझा किये

24 अक्टूबर, 2023

वंदे भारत एक्सप्रेस का स्लीपर संस्करण जल्द ही आ रहा है...



दुर्गापूजा के अवसर पर रौशनी से जगमगाता हावड़ा स्टेशन



स्टेशनों का पुनर्विकास





हरियाणा के अंबाला सिटी रेलवे स्टेशन के लिए व्यापक और उन्नत पुनर्विकास कार्य किया जा रहा है, जिससे यहां अत्याधुनिक सुविधाओं और एक विशाल परिसर का संयोग देखने को मिलेगा।





दिल्ली में नरेला रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास के लिए प्रस्तावित डिजाइन, यात्रा अनुभव को बेहतरीन बनाने के लिए यात्री सुविधा के साथ-साथ भविष्य का दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करता है।





आंध्र प्रदेश के रेपल्ले रेलवे स्टेशन पर पुनर्विकास का काम जोरों पर है। पूरा होने पर, स्टेशन में यात्री आराम और सुविधा को उन्नत करने वाली भरपूर आधुनिक सुविधाएँ होंगी।





'अमृत भारत स्टेशन' योजना के तहत बिहार के मुजफ्फरपुर स्टेशन का पुनर्विकास किया जा रहा है। नए स्टेशन भवन में विश्वस्तरीय यात्री सुविधाओं के साथ स्थानीय कला और संस्कृति का संयोजन देखने को मिलेगा।





गुजरात में सूरत रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास कार्य की वर्तमान स्थिति : जीएसआरटीसी बिल्डिंग का काम शुरू हो गया है, ईस्ट साइड बिल्डिंग का काम चल रहा है। ईआई भवनों का निर्माण कार्य प्रगति पर है, आरपीएफ बैरक का काम पूरा हो गया है हॉस्पिटल और रनिंग रूम का काम शुरू हो गया है।





गुजरात में साबरमती रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास कार्य प्रगति पर पश्चिम विंग स्टेशन भवन में पफुटिंग कंक्रीट कार्य, पूर्वी विंग साइड स्टेशन भवन में स्लैब शटरिंग, प्रस्थान इमारत के लिए खुदाई तथा स्टेशन भवन के लिए रैंप कार्य





'अमृत भारत स्टेशन' योजना के तहत फिरोजपुर मंडल के अंतर्गत आने वाले ढंडारी कलां स्टेशन का पुनर्विकास किया जा रहा है। योजना में सर्कुलेशन एरिया का सुधार एवं सौंदर्यीकरण, नए प्रवेश पोर्च का निर्माण आदि शामिल है।





उत्तर प्रदेश में पनकी धाम रेलवे स्टेशन वर्तमान में अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत पुनर्विकास के दौर से गुजर रहा है। पूरा होने पर, स्टेशन यात्रियों के लिए आधुनिक सुविधाएं और बेहतर पहुंच प्रदान करेगा।





सोलापुर रेलवे स्टेशन, महाराष्ट्र का पुनर्विकास, प्रगति का अद्यतन विवरण : सर्कुलेटिंग क्षेत्र का विस्तार, जल निकासी उन्नयन, प्रतीक्षालय का नवीनीकरण, प्लेटफार्म 4 और 5 की सतह बनाना, 3 मीटर पैदल ऊपरी पुल का विस्तार, पूरा होने पर, यह यात्रियों के आराम और सुविधा को बढ़ाएगा।





लातूर रेलवे स्टेशन, महाराष्ट्र का पुनर्विकास, कार्य प्रगति पर : वेटिंग हॉल का नवीनीकरण, सर्कुलेटिंग एरिया में बाउंड्री वॉल, प्रवेश चरण का निर्माण। इन कार्यों के पूरा होने पर, यह यात्रियों के लिए यात्रा के अनुभव को आसान बना देगा।





आंध्र प्रदेश के तिरूपति रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास तेजी से चल रहा है। यात्री सुविधा को बढ़ाते हुए, इसमें लिफ्ट, एस्केलेटर, पर्याप्त पार्किंग, अलग-अलग आगमन और प्रस्थान, वेटिंग हॉल की सुविधा होगी और इसका लुक आकर्षक सौंदर्य से भरपूर होगा।





उल्लेखनीय यात्री अनुभव के लिए सुविधाओं में तेजी लाने के लिए अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जंक्शन रेलवे स्टेशन पर पुनर्विकास कार्य पूरे जोरों पर है।





उत्तर रेलवे के लखनऊ मंडल के अंतर्गत फूलपुर स्टेशन के पुनर्विकास योजना में एक प्राथमिक प्रवेश द्वार और एक किनारे पर एक द्वितीय प्रवेश द्वार के साथ एक परिसंचरण क्षेत्र का निर्माण, मुख्य और साथ ही दूसरे प्रवेश द्वार पर एक नई इमारत की स्थापना आदि शामिल है।





अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत पंडाबेश्वर रेलवे स्टेशन का कायाकल्प किया जा रहा है। पूरा होने पर यह स्टेशन कई आधुनिक सुविधाओं के साथ यात्रियों के लिए उन्नत सुविधाएँ प्रदान करेगा।





उत्तर प्रदेश में अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत टूण्डला जंक्शन रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास का कार्य जारी है। एयरपोर्ट की तर्ज पर अत्याधुनिक बनेगा टूण्डला जंक्शन रेलवे स्टेशन पर मल्टीपल कॉम्पलेक्स के साथ मिलेगी अन्य यात्री सुविधाएं

तेज और शानदार वंदे भारत एक्सप्रेस

श्री मैनफ्रेड ऑस्टर
कोलकाता में जर्मनी के महावाणिज्यदूत (2020-2023)



सितंबर माह के एक बुधवार की सुबह। बालीगंज से हावड़ा स्टेशन जाते समय, सुबह की पहली किरण के साथ, आबादी के जल्दी उठने वाले लोग पहले से ही अपनी-अपनी राहों में हैं। कुछ आनंद के लिए तो कुछ केवल आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए : यहां सुबह के धावक और वर्कआउट के लिए पैदल चलने वाले लोग भी हैं, और रात के दौरान कोलकाता में अपना माल लाने वाले ट्रकों से माल उतारने वाले दिहाड़ी मजदूर भी हैं। वर्ष 1943 में हुगली नदी पर बने प्रतिष्ठित हावड़ा पुल के करीब फूल बाजार में विक्रेता और खरीदार भी नजर आ रहे हैं।

एक राजनयिक के रूप में यह मेरी आखिरी यात्रा की शुरुआत है, एक छुट्टी जो कुछ हफ्तों बाद मुझे सुगमता से समयपूर्व सेवानिवृत्ति की ओर ले जाएगी। कोलकाता में जर्मनी के महावाणिज्य दूत के रूप में मैंने देश के उत्तर पूर्व के 11 भारतीय राज्यों को कवर किया, बिहार, जो बोधगया के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ बुद्ध को 2,500 साल से भी अधिक समय पहले ज्ञान प्राप्त हुआ था, से लेकर समृद्ध और अपनी गौरवशाली आदिवासी परंपराओं के लिए प्रसिद्ध नागालैंड तक।

लेकिन इस बार मेरी यात्रा मुझे दक्षिण की ओर चेन्नई, महाबलीपुरम् और पांडिचेरी ले जाएगी। यात्रा, सामान्य जीवन की तरह, यथासंभव सतत होनी चाहिए। इसलिए मैं अपने कार्बन डाई ऑक्साइड-फुटप्रिंट को कम रखने के लिए ट्रेन का चयन कर रहा हूँ। रास्ते में पहली मंजिल है ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर। मैं पहले वहां जा चुका हूँ, रात की ट्रेन पकड़कर, जो कोलकाता (हावड़ा) से समुद्रतटीय शहर पुरी के लिए लगभग 22:40 बजे निकलती है और 5:15 बजे भुवनेश्वर पहुँचती है।

हालाँकि, इस बार, दक्षिण-पूर्व रेलवे ने मुझे हाल ही में शुरू की गई 'वंदे भारत एक्सप्रेस' का उपयोग करने के लिए आमंत्रित किया। यह भारत के प्रमुख शहरों को जोड़ने वाली बहुत तेज ट्रेनों का बढ़ता हुआ नेटवर्क है। एक्सप्रेस ट्रेनों की तुलना



में काफी तेज होने के बावजूद, वे जर्मन आईसीई या फ्रेंच टीजीवी जैसी बुलेट ट्रेनों की श्रेणी में नहीं आती हैं। दूसरे शब्दों में, वंदे भारत वर्तमान में लगभग 130 किमी प्रति घंटे की गति से यात्रा करती है, जो पटरियों के अनुकूल होने के बाद 160 किमी प्रति घंटे की गति से दौड़ने की क्षमता रखती है। लेकिन यह मौजूदा पटरियों का उपयोग करती है, जबकि आईसीई या टीजीवी-प्रकार की ट्रेनों के लिए लाइनों को बनाने में तुलनात्मक रूप से काफी अधिक लागत आती है। इसलिए मेरे हिसाब से यह एक बहुत ही उचित समाधान प्रतीत होते हैं। वंदे भारत 5 घंटे और 10 मिनट में भुवनेश्वर की दूरी तय करती है, जो मेरी पिछली यात्राओं की तुलना में 1:20 घंटे कम समय लेती है।

चलिए आगे बढ़ते हैं : रेलवे प्रबंधन द्वारा बहुत गर्मजोशी से स्वागत के बाद हम भारत में बनी चमचमाती नई ट्रेन की ओर चलते हैं, जो पारंपरिक समकक्ष ट्रेनों की तुलना में नई पीढ़ी की विशेषताओं को स्पष्ट रूप से दिखाती है। इसमें सिर्फ दो श्रेणी कॉन्फिगरेशन, एक्जीक्यूटिव और पर्यटक हैं, जबकि अन्य लंबी दूरी की ट्रेनों में छह अलग-अलग प्रकार के कोच हो सकते हैं, जो प्रथम श्रेणी एसी स्लीपर से लेकर गैर-आरक्षित, गैर-वातानुकूलित सीट वाले डिब्बों तक होते हैं।

वंदे भारत के पर्यटक वर्ग में आपको एक पंक्ति में 5 सीटें (3+2) मिलती हैं, जबकि एक्जीक्यूटिव क्लास में एक पंक्ति में एक कुर्सी कम होती है और बहुत अधिक पैर रखने की जगह होती है। सुरुचिपूर्ण लाल सीटों को न केवल आगे बल्कि यात्रा की दिशा के विपरीत और खिड़की की ओर 90 डिग्री पर भी घुमाया जा सकता है-हम जैसे उन लोगों के लिए यह बहुत सुविधाजनक है जो अवकाश के लिए यात्रा करते हैं और रास्ते में पड़ने वाले स्टॉप की हलचल और प्रकृति का पूरी तरह से आनंद लेना चाहते हैं। चार्जिंग आउटलेट के साथ-साथ विमान-शैली की फोल्डिंग टेबल आराम का स्तर बढ़ाती हैं।

सीटी बजती है और ट्रेन प्रस्थान से ठीक एक मिनट पहले दरवाजे बंद होने और स्वचालित रूप से लॉक होने के साथ ही रवाना हो जाती है। अधिकतम गति को ध्यान में रखते हुए ट्रेन यात्रा करेगी, यह एक बहुत ही बुद्धिमतापूर्ण सुरक्षा उपाय है। हालाँकि कुछ यात्रियों के लिए यह एक नया अनुभव हो सकता है क्योंकि ज्यादातर सामान्य रेक आपको तब भी चढ़ने की अनुमति देते हैं जब ट्रेन चलना शुरू हो चुकी होती है (जिसने मुझे पहले ट्रेन छूटने से बचाया था)।

आपके सीट पर बैठने के बाद, ट्रेन के 50 चालक दल के सदस्यों में से एक आपको समाचार पत्र और सुबह की चाय पेश करेगा। कोच बहुत शांत और सहजता से चलते हैं। एयर-कंडीशन को टिकाऊ स्तर पर सेट किया गया है, जिससे एक आरामदायक वातावरण बन गया है-जो मेरी भुवनेश्वर से चेन्नई की आगे की यात्रा के विपरीत है, जिसमें गैर-समायोज्य प्रणाली के कारण बर्फीली हवाओं से बचने के लिए मुझे पूरे दिन कंबल के नीचे छिप कर रहना पड़ा था।

इस बीच हम कोलकाता के बाहरी इलाके से गुजर चुके हैं और अब ट्रेन पूरी तरह से अपने लाभ साबित कर सकती है, क्योंकि डिजिटल डिस्प्ले 129 किमी प्रति घंटा की गति दिखा रहा है, परिदृश्य बाहर की ओर घूम रहा है! लेकिन चाय अभी भी कप में स्थिर है और पत्र लिखना बिना किसी कंपन के आसान बना हुआ है। लिखे हुए की बात करें तो, मुझे यह काफी उल्लेखनीय लगा कि सभी साइनेज, जैसे सीट नंबर, दरवाजे का संचालन आदि ब्रेल लिपि में भी हैं, जिससे दृष्टिबाधितों को उनकी यात्रा में मदद मिल रही है।

यात्रा के आधे रास्ते में गर्म नाश्ता परोसा जाता है, जिसमें तीन शाकाहारी और एक गैर-शाकाहारी विकल्प होता है-एक शाकाहारी के रूप में मेरी खुशी के लिए। यह काफी समृद्ध है, इसमें कुछ ताजे फल भी शामिल हैं और यह आपको आसानी से दिन के दूसरे भाग में ले जाएगा। अतिरिक्त स्नैक्स वाले विक्रेता भी आएंगे, लेकिन सामान्य ट्रेनों की तुलना में बहुत कम, इतने कम कि आप चिढ़े नही।

सभी रेल यात्राओं में एक महत्त्वपूर्ण परीक्षा 'अन्य सुविधाएँ' होती हैं, दूसरे शब्दों में शौचालय। वे स्टेनलेस स्टील सिंक के साथ अच्छी आधुनिक स्थिति में डिज़ाइन किए गए हैं और यात्रा के दौरान कई बार पोछे जाते हैं। इसलिए सहयात्री इनका उपयोग करने से न डरें।

समग्र यात्रा समय में अनावश्यक रूप से जो चीज जुड़ती है वह है रुकने के साथ मिलने वाली प्रतिष्ठा। मुझे फिर से जर्मनी की याद आ रही है जहाँ के मेयर अपनी नगर पालिका में ट्रेनों को रोकने के लिए बहुत उत्सुक रहते हैं। भले ही प्लेटफॉर्म पर रुकने का वास्तविक समय केवल दो मिनट हो, लेकिन रूकने से पहले धीमी गति और फिर उसके चलने के बाद की गति यात्रा के समय में कई मिनट और जोड़ देती है। ऐसे मामलों में कम भी बहुत अधिक होता है।

वाबजूद इसके एक बहुत आरामदायक यात्रा के बाद, हम भुवनेश्वर पहुँचते हैं, जिसे प्राचीन काल में मंदिरों का शहर कहा जाता था। हालाँकि, शहर का आधुनिक हिस्सा किसी और ने नहीं बल्कि एक प्रसिद्ध जर्मन वास्तुकार ओटो कोनिग्सबर्गर द्वारा डिज़ाइन किया गया था, जिन्हें मैं इस छोटे से लेख के जरिए श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

इस उत्तम यात्रा पर मुझे आमंत्रित करने के लिए मैं दक्षिण पूर्व रेलवे के प्रधान मुख्य वाणिज्यिक प्रबंधक श्री सत्यकीनाथ और उनकी टीम को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

आप भी अपनी रेल यात्रा के संस्मरण हमें मेल करें

ईमेल : editorbhartiyarailrb@gmail.com

सौर ऊर्जा - भारतीय रेल में अवलोकन व परिदृश्य

श्रीमती ज्योति भास्कर
निदेशक/ऊर्जा प्रबंधन
आरडीएसओ/लखनऊ

श्री दिनेश कुमार
एसएसई/ऊर्जा प्रबंधन
आरडीएसओ/लखनऊ

सार: नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा स्रोतों का भविष्य है, जो प्रकृति का अनमोल वरदान है। यह ऊर्जा विश्व में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। विश्व को इस ऊर्जा को उपयोग में लाने हेतु सबसे लाभप्रद और कुशल तरीका खोजना होगा।

अब जब हम नवीकरणीय उर्जा के बारे में बात करते हैं, तो हमें पारंपरिक उर्जा से अधिक जीवन-क्षमता के विनिमय के रूप में सौर ऊर्जा पर ध्यान केंन्द्रित करने की आवश्यकता है, क्योंकि इसे स्थापित करना आसान है, सस्ता है व बहुत कम रख-रखाव करने की आवश्यकता है, तथा विश्व स्तर पर स्वीकृति भी प्राप्त है, सौर पैनल शून्य उत्सर्जन के साथ बिजली पैदा करने में सक्षम हैं तथा उत्पन्न बिजली का उपयोग ऊर्जा की माँग को पूरा करने के लिए किया जा सकता है, पारंपरिक ऊर्जा की जरूरतों को पूरी तरह से हरित ऊर्जा से बदला जा सकता है। प्रत्येक किलोवाट हरित ऊर्जा कार्बन फुटप्रिंट को सालाना 3,000 पाउंड तक कम कर सकती है। यहां तक कि एक 5 किलो वॉट का सौर संयंत्र हर साल लगभग 15,000 पाउंड CO_2 बचा सकता है, जिससे हमारे पर्यावरण को ग्लोबल वार्मिंग व अन्य सम्बन्धित समस्याओं से बचाव में बहुत बड़ा योगदान हो सकता है।

इस लेख का उद्देश्य सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना के लिए, ऊर्जा संयंत्र व भारतीय रेल की पहल के बारे में बुनियादी जानकारी प्रदान करना है।

परिचय

सौर ऊर्जा, सूर्य से निकलने वाली प्रकाशमान रोशनी व ऊष्मा है, जिसका उपयोग बिजली उत्पन्न करने हेतु किया जाता है व सौर जल तापन सहित सौर तापीय ऊर्जा व सौर वास्तुकला जैसी कई तकनीकों में उपयोग किया जाता है।

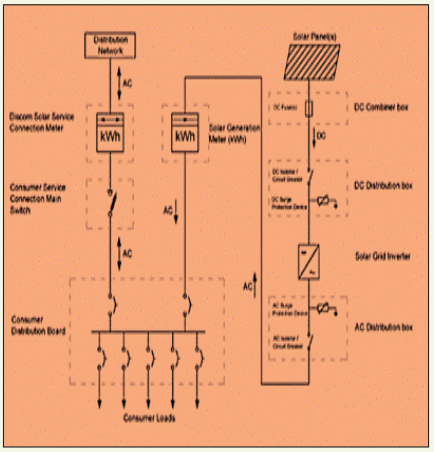
सौर ऊर्जा नवीकरणीय ऊर्जा का एक आवश्यक स्रोत है, इसकी तकनीक को मोटे तौर पर निष्क्रिय सौर या सक्रिय सौर के रूप में चित्रित किया जाता है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि वे सौर ऊर्जा को कैसे ग्रहण और वितरित करते हैं या इसे कैसे सौर ऊर्जा में परिवर्तित करते हैं। सक्रिय सौर तकनीक में ऊर्जा का उपयोग करने के लिए फोटोवोल्टिक प्रणाली, केंद्रित सौर ऊर्जा और सौर जल तापन का उपयोग शामिल है।

निष्क्रिय सौर तकनीक में एक इमारत को सूर्य की ओर उन्मुख करना, अनुकूल तापीय द्रव्यमान या प्रकाश फैलाने वाले सामग्रियों का चयन करना और ऐसी जगहों को डिज़ाइन करना शामिल है जो स्वाभाविक रूप से हवा को प्रसारित करती हैं।

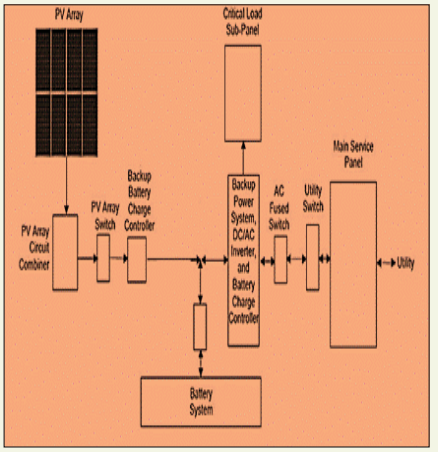
भारत सरकार देश के कार्बन फुटप्रिंट को कम करने पर बहुत जोर दे रही है। इसके अनुसरण में, भारत के माननीय प्रधानमंत्री ने दिनांक 30 जून, 2008 को जलवायु परिवर्तन के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना (एनएपीसीसी) जारी की, एनएपीसीसी मिशन में से एक राष्ट्रीय सौर मिशन है और इसका उद्देश्य भारत के समग्र ऊर्जा मिश्रण में सौर ऊर्जा की हिस्सेदारी बढ़ाना है। तद्नुसार, भारतीय रेल सौर ऊर्जा को काम में लाने को उच्च प्राथमिकता देती है।

सौर ऊर्जा संयंत्र

भारतीय रेल द्वारा सौर ऊर्जा का उपयोग



ग्रिड कनेक्ट सोलर सिस्टम



ऑफ ग्रिड सोलर सिस्टम

करने के लिए देश-भर में विभिन्न प्रकार के सौर संयंत्र स्थापित किए जा रहे हैं। ये सोलर प्लांट अलग-अलग तकनीक के हैं यानी ग्रिड कनेक्टेड सोलर-सिस्टम, बैटरी आधारित सोलर-सिस्टम, हाइब्रिड सोलर-सिस्टम आदि। सौर ऊर्जा संयंत्र में इस्तेमाल होने वाले विभिन्न घटक निम्नलिखित हैं-सोलर फोटोवोल्टिक पैनल, पॉवर कंडीशनिंग यूनिट, ऐरे जंक्शन बॉक्स, माउंटिंग स्ट्रक्चर, बैटरी बैंक, डेटा लॉगर, केबल और अर्थिंग आदि।

आरडीएसओ ने समय-समय पर सौर प्रणाली के सम्बन्ध में विभिन्न तकनीकी परिपत्र जारी किए हैं। ये परिपत्र सौर प्रणाली में उपयोग किए जाने वाले विभिन्न अंशों के डिज़ाइन मापदंड सहित तकनीकी आवश्यकताओं को कवर करते हैं।

जून 2018 में, आरडीएसओ ने पत्र संख्या ईएल/ईएम/0010/11/सोलर प्लांट-एमजी दिनांक 27 जून, 2018 के माध्यम से "रूफटॉप सोलर पॉवर प्लांट" नामक एक पुस्तिका जारी की, इस पुस्तिका का उद्देश्य फोटोवोल्टिक संयंत्र के साथ काम करते समय आवश्यक बुनियादी अवधारणाओं की खोज करना है। पुस्तक में एसपीवी पॉवर जेनरेशन तकनीक, ओवरकरंट के निमित्त सुरक्षा, ओवरवॉल्टेज, लाइटनिंग, डिज़ाइन और घटक चयन, संस्थापन, रख-रखाव और उत्पन्न ऊर्जा के मापन के लिए रणनीति आदि के बारे में विवरण शामिल हैं।

अक्टूबर 2019 में, आरडीएसओ ने पत्र संख्या ईएल/ईएम/0010/12/एमएमएस दिनांक 29 अक्टूबर, 2019 के माध्यम से 'मौजूदा प्लेटफॉर्म शेल्टर्स की छत पर सौर पैनल संस्थापन' के लिए दिशानिर्देश जारी किए। आरडीएसओ के दिशानिर्देश ऊर्जा एवं पर्यावरण प्रबंधन तथा पुल एवं संरचना निदेशालयों द्वारा संयुक्त रूप से जारी किए गए हैं। इसमें मौजूदा प्लेटफॉर्म शेल्टर की छत पर सोलर पैनल की सुरक्षित संस्थापना करना शामिल है।

नवंबर 2019 में, आरडीएसओ ने 'भारतीय रेल में सौर प्रसार के लिए व्यापक योजना' पर एक रिपोर्ट तैयार की और इसे रेलवे बोर्ड को भेजा गया। यह व्यापक रिपोर्ट आरडीएसओ अधिकारियों की एक कोर टीम द्वारा विभिन्न निदेशालयों-ऊर्जा और पर्यावरण प्रबंधन निदेशालय, कर्षण संस्थापन निदेशालय, लोको निदेशालय, पुल एवं संरचना निदेशालय, कार्य निदेशालय द्वारा तैयार की गई थी। टीम ने भारतीय रेल में सौर ऊर्जा के प्रसार हेतु विभिन्न नियमों/तकनीकी समस्याओं की जाँच की है। रिपोर्ट विभिन्न वित्तीय, तकनीकी, व्यापार मॉडल की समस्याओं को सम्बोधित करती है व भारतीय रेल में सौर ऊर्जा को सुचारू रूप से अपनाने के लिए सुझाव देती है।

3. सोलर पीवी सिस्टम साइजिंग

3.1 लोड साइजिंग

सौर पीवी प्रणाली को डिज़ाइन करने में पहला कदम सौर पीवी प्रणाली द्वारा आपूर्ति किए जाने वाले सभी भारों की कुल बिजली और ऊर्जा खपत का पता लगाना है। ये निम्नलिखित है :

3.1.1 प्रति दिन कुल लोड वाट-घंटे की गणना करें

प्रति दिन विभिन्न भारों द्वारा उपभोग किए गए औसत वाट-घंटे का पता लगाएँ। प्रति दिन कुल वाट-घंटे प्राप्त करने के लिए एक साथ सभी भारों के लिए आवश्यक वाट-घंटे जोड़ें, जिसे कुल भार तक पहुँचाया जाना चाहिए।

3.1.2 पीवी मॉड्यूल से प्रतिदिन आवश्यक कुल वाट-घंटे की गणना करें

प्रति दिन कुल वाट-घंटे प्राप्त करने के लिए कुल भार वाट-घंटे प्रति दिन को 1.3 (सिस्टम में सुप्त ऊर्जा) से गुणा करें जो पैनलों द्वारा प्रदान किया जाना चाहिए।

3.2 पीवी मॉड्यूल साइजिंग

पीवी मॉड्यूल के आकार का पता लगाने के लिए, उत्पादित कुल उच्च वाट की जरूरत है। उत्पादित उच्च वाट (डब्ल्यूपी) पीवी मॉड्यूल के आकार और साइट के स्थान की जलवायु पर निर्भर करता है। भारत के लिए, पैनल जनरेशन फैक्टर (पीएफजी) को 4.5 के रूप में लिया जाता है। पीवी मॉड्यूल के आकार का निर्धारण करने के लिए, निम्नानुसार गणना करें:-

3.2.1 पीवी मॉड्यूल हेतु आवश्यक कुल उच्च वॉट रेटिंग की गणना करें

भार को संचालित करने हेतु आवश्यक पीवी पैनल की आवश्यक उच्च वॉट रेटिंग प्राप्त करने के लिए पीवी मॉड्यूल (आइटम 3.1.2 से) से प्रति दिन कुल वाट-घंटे को 4.5 से विभाजित करें

पूर्ण उच्च-वॉट रेटिंग (डब्ल्यूपी) = पीवी मॉड्यूल/ पीजीएफ से उत्पन्न होने के लिए प्रति दिन आवश्यक कुल वाट-घंटे।

3.2.2 सिस्टम के लिए पीवी पैनलों की संख्या की गणना करें

संस्थापित किए जाने वाले पीवी मॉड्यूल के रेटेड आउटपुट वाट-पीक द्वारा आइटम 3.2.1 में प्राप्त उत्तर को विभाजित करें परिणाम के किसी भी आंशिक भाग को अगले उच्चतम पूर्ण संख्या तक बढ़ाएँ और वह आवश्यक पीवी मॉड्यूल की संख्या होगी।

गणना का परिणाम पीवी पैनलों की न्यूनतम संख्या है। यदि अधिक पीवी मॉड्यूल संस्थापित हैं, तो सिस्टम बेहतर प्रदर्शन करेगा और बैटरी लाइफ में सुधार होगा, यदि कम पीवी मॉड्यूल का उपयोग किया जाता है तब सिस्टम बादलों की संघनता में बिल्कुल काम नहीं कर सकेगा और बैटरी लाइफ कम हो जाएगी।

3.3 इन्वर्टर का आकार

सूर्य से प्राप्त ऊर्जा को बैटरी में डायरेक्ट करंट (डीसी) के रूप में संग्रहित किया जाता है। इस संग्रहित ऊर्जा को फिर सौर इनवर्टर की मदद से विद्युत ऊर्जा यानी अल्टरनेटिंग करंट में बदला जाता है। दूसरे शब्दों में, सौर इन्वर्टर परिवर्तनशील डायरेक्ट करंट को अल्टरनेटिव करेंट में परिवर्तित करता है ताकि उसे बिजली की आपूर्ति के रूप में इस्तेमाल किया जा सके।

इन्वर्टर का आकार सोलर पैनल की डीसी रेटिंग पर निर्भर करता है यह एक सामान्य नियम है यह महत्त्वपूर्ण है कि इन्वर्टर का आकार सोलर पैनल सिस्टम की डीसी रेटिंग के समान होना चाहिए। क्योंकि सौर

पैनल कनवर्टर में डीसी विद्युत् को चलाने के लिए इन्वर्टर की क्षमता को विद्युत पर्याप्त होनी चाहिए। इन्वर्टर का आकार सौर पैनलों पर निर्दिष्ट डीसी रेटिंग के समान होना चाहिए। इनवर्टर के लिए आकार की आवश्यकताओं को आम तौर पर शृंखला समूह के साथ उत्पाद शीट पर सूचीबद्ध किया जाता है। इन्वर्टर का आकार कुल भार के कुल वाट से 25–30% बड़ा होना चाहिए। लोड का प्रकार मोटर या कंप्रेसर के मामले में इन्वर्टर का आकार न्यूनतम 3 गुना होना चाहिए।

3.4 बैटरी का आकार

सोलर पीवी सिस्टम में उपयोग करने के लिए जिस प्रकार की बैटरी की संस्तुति की जाती है वह डीप साइकिल बैटरी है। डीप साइकिल बैटरी को विशेष रूप से कम ऊर्जा स्तर पर डिस्चार्ज करने और वर्षों तक दिन-ब-दिन तेजी से रिचार्ज या साइकिल चार्ज और डिस्चार्ज करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। रात और बादलों के समय में उपकरणों को चलाने के लिए पर्याप्त ऊर्जा भंडारण के लिए बैटरी काफी बड़ी होनी चाहिए। बैटरी के आकार की गणना निम्नानुसार की जाती है:

3.4.1 उपकरणों द्वारा प्रतिदिन उपयोग किए जाने वाले कुल वाट-घंटे की गणना करें।

3.4.2 बैटरी हानि के लिए प्रति दिन कुल वाट-घंटे को 0.85 से विभाजित करें।

3.4.3 मद 3.4.2 में प्राप्त उत्तर को डिस्चार्ज की गहराई के लिए 0.6 से विभाजित करें।

3.4.4 मद 3.4.3 में प्राप्त उत्तर को नाममात्र बैटरी वोल्टेज से विभाजित करें।

3.4.5 बैटरी की आवश्यक डीप साइकल एम्पीयर-गैप करें घंटे की क्षमता को प्राप्त करने के लिए मद 3.4.4 में प्राप्त उत्तर को स्वायत्तता के दिनों के साथ गुणा करें (पीवी पैनलों द्वारा उत्पादित कोई शक्ति नहीं होने पर आपको सिस्टम को संचालित करने के लिए दिनों की संख्या की आवश्यकता होती है)।

बैटरी क्षमता (एम्पीयर ऑवर)

उपकरणों द्वारा प्रतिदिन उपयोग किया गया कुल वाट घंटा x स्वायत्तता के दिन की संख्या (0.85x0.6 x नोमिनल बैटरी वोल्टेज)

3.5 सोलर चार्ज कंट्रोलर साइजिंग

सोलर चार्ज कंट्रोलर को आम तौर पर एम्पीयर और वोल्टेज क्षमता के निमित्त रेट किया जाता है। पीवी एरे एवं बैटरी के वोल्टेज से मिलान करने के लिए सोलर चार्ज का चयन करें। सोलर चार्ज कंट्रोलर के पास पीवी एरे से करंट को हैंडल करने की पर्याप्त क्षमता होनी चाहिए।

मानक उद्यम के अनुसार, सौर चार्ज नियंत्रक का आकार पीवी ऐरे के शॉर्ट सर्किट करंट को लेना है तथा इसे 1.3 से गुणा करना है।

सोलर चार्ज कंट्रोलर रेटिंग = पीवी ऐरे का कुल शॉर्ट सर्किट करंट x 1.3

4. भारतीय रेल में संस्थापित सौर ऊर्जा संयंत्रों का विवरण

समय में स्टेशन की सभी विद्युत सम्बन्धी आवश्यकताओं को सौर ऊर्जा से पूर्ण किया जाता है।

- साहिबाबाद रेलवे स्टेशन में प्लेटफॉर्म शेल्टर के रूप में 16 किलोवाट का सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया गया है। यह भारतीय रेल में अपनी तरह की पहली पहल है जहाँ आश्रय के रूप में सौर ऊर्जा संयंत्र को दोगुना किया जा रहा है तथा इसके कारणवश प्लेटफॉर्म शेल्टर और रूफटॉप सौर संयंत्रों की संयुक्त लागत में कमी आयी है व गैर-कर्षण की माँग को पूरा करने के लिए सौर ऊर्जा प्रदान की गई है।
- गुंतकल डिवीजन में दक्षिण मध्य रेलवे के नांद्याल-येरागुंटला सेक्शन को भारत में पहला सोलर सेक्शन घोषित किया गया है तथा इसके सभी स्टेशन सौर पैनलों द्वारा संचालित हैं। सेक्शन के सभी आठ स्टेशनों-मद्दुरु, बनगनपल्ले, कोइलाकुंटला, संजमाला, नोसाम, एस. उप्पलापाडु, जम्मलमदुगु और प्रोद्दुतूर-इन रेलवे स्टेशनों पर विद्युत आपूर्ति करने में सक्षम सौर पैनल सिस्टम प्रदान किया गया है।

क्र.सं.	संयंत्र का प्रकार	अनुप्रयोग	क्षमता
1.	रूफ टॉप	गैर-कर्षण	111 मेगावाट
2.	भूमि आधार	गैर-कर्षण	3 मेगावाट
3.	भूमि आधार	कर्षण	3.7 मेगावाट

स्रोत : 'ग्रीन रेलवे' मार्च 2021 संस्करण

कुछ रोचक तथ्य

- विश्व में पहली बार भारतीय रेल ने बीना में सीधे रेलवे ओवरहेड लाइन को बिजली देने के लिए सौर संयंत्र स्थापित किया।
- भारतीय रेल के पास 20 जीडब्ल्यू भूमि आधारित सौर संयंत्र संस्थापित करने की 51,000 हेक्टेयर की भूमि क्षमता है।
- चेन्नई सेंट्रल रेलवे स्टेशन ने स्टेशन के प्लेटफॉर्म शेल्टरों पर संस्थापित सौर पैनलों द्वारा 100% दैनिक ऊर्जा आवश्यकता के लक्ष्य को पूरा किया है। स्टेशन ने 1.5 मेगावाट की सौर ऊर्जा क्षमता स्थापित की है तथा दिन के
- दक्षिण मध्य रेलवे ने 'ऊर्जा तटस्थ' रेलवे स्टेशनों की अवधारणा को अपनाया है और ऐसा करने वाला पहला भारतीय रेल क्षेत्र बन गया है।
- भारत ने वर्ष 2030 से पहले 'शुद्ध-शून्य कार्बन उत्सर्जन' बनने का लक्ष्य रखा है।

5. सौर ऊर्जा संयंत्र की लागत और भूमि की आवश्यकता

5.1 सौर ऊर्जा संयंत्र की लागत

लगभग, सौर संयंत्र की लागत ₹4.0-5.0 करोड़ प्रति मेगावाट के बीच है। यह ब्रांड से ब्रांड व अंतर्निहित तकनीक में भिन्न



बीना, मध्य प्रदेश में 1.7 मेगावाट सौर परियोजना पॉवरिंग ट्रैक्शन लोड



एमसीएफ, रायबरेली में 3 मेगावाट सौर भूमि आधारित परियोजना





दक्षिण मध्य रेलवे के गुंतकल डिवीजन में नांदयाल-येरगुंटला सेक्शन को भारत में पहला सोलर सेक्शन का दर्जा प्राप्त है

होता है यह राशि 25 वर्षों के लिए स्थापना के साथ-साथ रख-रखाव सहित पूरी लागत है। भूमि-आधारित और छत-आधारित प्रणाली की लागत के बीच मामूली अंतर रहता है, क्योंकि भूमि की लागत कुल लागत का लगभग 5% योगदान करती है।

5.2 भूमि की आवश्यकता

लगभग 1 मेगावाट सौर ऊर्जा संयंत्र को उच्च वाट क्षमता वाले सौर पैनलों की उपलब्धता के साथ 3.5 एकड़ भूमि की आवश्यकता होती है।

उपरोक्त आंकड़े केवल लागत और भूमि की आवश्यकता का एक विस्तृत विचार प्रदान करने के लिए हैं।

5.3 सौर डेटा कैलकुलेटर : आज कल कई वेबसाइटें उपलब्ध हैं जो हमारे इनपुट के अनुसार तुरंत गणना करती हैं तथा हमें विभिन्न डेटा प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, दिए गए क्षेत्र इनपुट के अनुसार गणना करना तथा उस पर स्थापित किए जा सकने वाले सोलर प्लांट की वाट क्षमता, उसकी लागत, बिजली उत्पादन, बचत आदि की गणना करना, ऐसी ही एक वेबसाइट है "solarrooftop.gov.in" यह वेबसाइट न केवल कैलकुलेटर प्रदान करती है बल्कि सौर ऊर्जा को अपनाने की सुविधा के लिए सरकारी दिशानिर्देशों, विनियम आदि के बारे में भी जानकारी देती है।

6. सौर ऊर्जा के लाभ

- सौर ऊर्जा एक स्वच्छ और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है।
- सोलर पैनल एक बार लग जाने के बाद, सौर ऊर्जा का निःशुल्क उत्पादन किया जा सकता है।
- सौर ऊर्जा सदैव के लिए रहेगी जबकि अनुमान है कि दुनिया के तेल भंडार 30 से 40 साल तक ही चलेंगे।
- सौर ऊर्जा से प्रदूषण नहीं होता है।
- सौर सेल ध्वनि प्रदूषण नहीं करते हैं, दूसरी ओर तेल पंप चलाने के लिए प्रयोग की जाने वाली विशाल मशीनें अत्यधिक ध्वनि प्रदूषण करती हैं और इसलिए बहुत अव्यवहारिक हैं।

- सोलर सेल को चालू रखने के लिए बहुत कम रख-रखाव की आवश्यकता होती है सौर सेल में कोई गतिमान पुर्जे नहीं होते हैं जिससे उन्हें वास्तव में नुकसान पहुँचाना असंभव हो जाता है।
- दीर्घावधि में, सौर पैनल द्वारा उत्पादित की जा सकने वाली निर्बाध ऊर्जा की मात्रा के कारण उच्च निवेश का प्रतिफल हो सकता है, यह अनुमान लगाया गया है कि औसत घरों में उनकी ऊर्जा का 50% सौर पैनलों से आ रहा होगा।

7. सौर ऊर्जा के नुकसान

- सौर पैनल स्थापित करना थोड़ा महंगा है जबकि प्रारंभिक निवेश बिजली बिलों पर बचत के लिए समय-अंतराल होता है।
- यह देश की जलवायु द्वारा सीमित बिजली उत्पादन पूरी तरह से देश के सूर्य के प्रकाश के संपर्क में आने पर निर्भर करता है।
- सौर ऊर्जा का उपयोग बैटरी चार्ज करने के लिए किया जाता है। सौर ऊर्जा से चलने वाले उपकरणों का उपयोग सामान्य बिजली जाने के घंटों के दौरान किया जा सके। बैटरियां अक्सर बड़ी और भारी होती हैं, जगह घेरती हैं और समय-समय पर इन्हें बदलना पड़ता है।
- प्रदूषण पैदा करने वाले सौर-सेल को विघटित करने का कोई तरीका नहीं है सौर सेल का निपटान एक पर्यावरणीय खतरा है।
- ऊर्जा के भंडारण के लिए उपयोग की जाने वाली बैटरी पर्यावरण प्रदूषण भी पैदा करती है।

8. नए विकास

सौर वृक्ष

एक सोलर ट्री एक पोल के साथ ग्राउंड माउंटेड स्ट्रक्चर है जो हवा में कई अलग-अलग पैनलों को सपोर्ट करता है। यह एक पेड़ के तने की तरह एक खंभे पर सौर ऊर्जा प्रौद्योगिकी को इकट्ठा करने वाली संरचना है, इसीलिए इसे 'सौर वृक्ष' कहा जाता है। सौर वृक्षों का उद्देश्य सौर प्रौद्योगिकी को दृश्यता प्रदान करना और भू-दृश्य और वास्तु कलाकृति को बढ़ाना है। इसका उद्देश्य नवीकरणीय ऊर्जा के बारे में जागरुकता फैलाना, समझ और अपनाने को बढ़ावा देना है। सौर पेड़ सौर प्रौद्योगिकी में जागरुकता और रुचि पैदा करते हैं और छाया व बैठक स्थान भी प्रदान करते हैं।

जीव विज्ञान के संदर्भ में फाइलोटैक्सी एक तने के ऊपर पत्तियों की व्यवस्था है। इसी प्रकार एक सौर पेड़ में सौर पैनलों की व्यवस्था सौर ऊर्जा के दोहन में अधिकत्तम दक्षता सुनिश्चित करने के लिए होती है; एक पैनल को ऊपरी पैनल की छाया से ढका नहीं जाना चाहिए। यह सुनिश्चित करने के लिए एक सरल डिज़ाइन कि यह घुमावदान फाइलोटैक्सी है तथा भारतीय रेल में भी कुछ स्थानों पर सोलर ट्री का प्रावधान किया गया है।

दक्षिण मध्य रेलवे में इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन ट्रेनिंग सेंटर/विजयवाड़ा के सामने 5 किलो वॉट पॉवर का एक सोलर ट्री लगाया गया है।

सौर ऊर्जा, हमारे संगठन को शक्ति प्रदान करने का स्मार्ट तरीका है।



दिनांक 7 दिसंबर, 2017 को ईटीटीसी/विजयवाड़ा के सामने सोलर ट्री का उद्घाटन किया गया।



आपको यह **अंक कैसा लगा**
हमें जरूर बताएं

ई-मेल : editorbhartiyarailrb@gmail.com

पत्र लिखें ▶ **संपादक,** भारतीय रेल, कमरा नं. 411, रेल भवन, नई दिल्ली-110 001



रेल भवन
की रोचक जानकारी

श्री विमलेश चन्द्र

भवनों का शहर दिल्ली : दिल्ली में जितने भी महत्त्वपूर्ण भवन हैं, वह किसी न किसी विभाग के नाम पर बने हुए हैं। कृषि भवन, संचार भवन, डाक भवन, रेल भवन, विज्ञान भवन हो या श्रम शक्ति भवन, निर्माण भवन, सेना भवन, परिवहन भवन, अटल अक्षय ऊर्जा भवन, राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, मंत्रालय या विभाग के नाम से हैं, जिनके बारे में जानना या पढ़ना या सुनना बहुत इंटरेस्टिंग लगता है। स्वाभाविक रूप से यहां रेल भवन होना ही था। रेल भवन दिल्ली के अच्छे भवनों में से एक है लेकिन अफसोस रेल भवन के बारे में कहीं कुछ इंटर नेट पर या किसी पुस्तक में ज्यादा लिखा नहीं है। रेलवे के लोगों के लिए यह भवन एक मंदिर के समान है। जिसका रेलवे के सभी लोग आदर सम्मान करते हैं। एक तरह से रेलवे का प्रशासन यहीं से पूरे देश में चलता है।

भारत की राजधानी : तत्कालीन कलकत्ता में ईस्ट इंडिया कंपनी के आगमन के बाद वर्ष 1727 में इंग्लैंड के राजा जार्ज द्वितीय के आदेशानुसार यहाँ एक नागरिक न्यायालय की स्थापना की गई। फिर कोलकाता नगर निगम की स्थापना की गई थी और फिर पहले मेयर का चुनाव हुआ। वर्ष 1772 में वारेन हेस्टिंग्स ने इसे ब्रिटिश शासकों की भारतीय राजधानी बना दी। भारत पर अंग्रेज शासनकाल के दौरान वर्ष 1911 तक कोलकाता भारत में अंग्रेजों की राजधानी बनी रही। लेकिन रोचक बात यह है कि गर्मी शुरू होते ही राजधानी बदल जाती थी और वह दूसरी राजधानी होती थी शिमला। शिमला वर्ष 1864 से 1947 तक मतलब भारत की स्वतंत्रता तक यह भारत में ब्रिटिश राज की ग्रीष्मकालीन राजधानी हुआ करती थी। शिमला उत्तर भारत के सबसे लोकप्रिय हिल स्टेशन में से एक है और इसे 'पहाड़ों की रानी' भी कहा जाता है। फिर अंग्रेज शासकों ने यह महसूस किया कि देश का शासन बेहतर तरीके से चलाने के लिए कलकत्ता की जगह यदि दिल्ली को राजधानी बनाया जाए तो बेहतर होगा क्योंकि यहां से शासन का संचालन अधिक प्रभावी और सुविधाजनक होगा। इस पर विचार करने के बाद अंग्रेज महाराजा जॉर्ज पंचम ने देश की राजधानी को दिल्ली ले जाने के लिए आदेश दे दिए।

तत्कालीन रेलवे बोर्ड (रेल भवन) शिमला की रोचक जानकारी : जैसा कि हमने अभी पढ़ा है कि कोलकाता के बाद, देश की दूसरी राजधानी अंग्रेजों ने शिमला को बनाया हुआ था तो स्वाभाविक रूप से रेलवे का कामकाज संभालने के लिए शिमला में रेलवे बोर्ड या रेल भवन बनाना

ही था और वह बनाया भी गया था और अंग्रेज लोग वहीं से रेलवे का संचालन करते थे। स्वाभाविक रूप से जब सब कुछ दिल्ली में स्थापित हो गया तो रेल भवन को भी दिल्ली में स्थापित होना ही था। काफी पहले मैं शिमला घूमने गया था, तब वहां एक भवन में रेल भवन का नाम लिखा देखा और पढ़ा तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि रेल भवन यहां कैसे हो सकता है, फिर तो बहुत सारे फोटो खींचे और जितना संभव हो पाया उसके अंदर जाकर घूमा और बहुत अच्छा लगा। उसी के याद मैंने यह एक छोटा सा लेख लिखा।

शिमला दुनिया भर में अपनी प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक इमारतों के लिए प्रसिद्ध है। इसलिए शिमला को पहाड़ों की रानी भी कहा जाता है। शहर की खूबसूरती में ब्रिटिश काल के दौरान बनी इमारतें भी शामिल हैं।

भवन का निर्माण और लागत : यह भवन शिमला के मालरोड के नजदीक स्थित है। इस खूबसूरत भवन की वास्तुकला देखने लायक है। रेलवे बोर्ड की इस बिल्डिंग का निर्माण ब्रिटिशकाल में वर्ष 1896-97 में बॉम्बे बेस्ड फर्म रिसचर्डसन एंड क्रुडास कंपनी द्वारा किया गया था। भवन का पूरा स्ट्रक्चर आर्यन कास्ट और स्टील से बनाया गया है। आर्यन कास्ट स्टील से बना यह भवन वास्तुकला के अद्भुत नमूने के रूप में जाना जाता है। उस समय इस भवन की लागत लगभग ₹5 लाख आई थी। रेलवे बोर्ड की इस बिल्डिंग को हरबेट हाउस एंड लॉ विला के नाम से भी जाना जाता था। इसी भवन में वर्ष 1905 में लार्ड कर्जन के नेतृत्व में रेलवे बोर्ड का गठन किया गया था। उस समय रेलवे बोर्ड, कामर्स एंड इंडस्ट्री विभाग के अधीन आता था। उस समय रेलवे के उच्च अधिकारी रेलवे बोर्ड के चेयरमैन होते थे, जबकि तत्कालीन रेल मैनेजर लोग इंग्लैंड से आते थे।

भवन की विशेषताएँ : शिमला में स्थित इस ऐतिहासिक भवन की खासियत यह है कि ब्रिटिश काल में बना यह ऐसा पहला भवन है जिसे भूकंप रोधी तकनीक से बनाया गया था। अग्निकांड जैसी घटना से बचाने के लिए इस भवन को आर्यन कास्ट-स्टील से बनाया गया था। उस समय शिमला के पहाड़ी क्षेत्र में भूकंप रोधी भवन नहीं थे। फिर भी अंग्रेजों ने इस भवन को भूकंप रोधी तकनीक से बनाया था। जिससे कि भूकंप आने पर भी लोहे के स्ट्रक्चर से बना ये भवन सुरक्षित रहे। निश्चय ही यह भवन वास्तुकला का अद्भुत नमूना है। ब्रिटिश काल में बना यह भवन आज भी ज्यों का त्यों सुरक्षित है। यह भवन अपनी विशेष संरचना और डिज़ाइन के कारण शिमला का एक गौरव प्रतीक है।



भवन में अग्नि कांड की घटना : इस भवन में 2 बार आग लगने की घटना हो चुकी है, लेकिन इस भवन को जिस प्रकार से बनाया गया है उसके कारण इस अग्निकांड से इस भवन को कोई नुकसान नहीं पहुँचा। इसका कारण इसके आर्यन कास्ट और स्टील के बने स्ट्रक्चर थे। पहली बार 10 फरवरी 2001 को इस भवन की सबसे ऊपरी मंजिल में आग लगी थी। दूसरी बार इस भवन में 3 मार्च 2010 को आग लगने की घटना हुई। फिर भी बिना किसी नुकसान के यह भवन सुरक्षित है।

भवन की सुंदरता : भवन की खूबसूरती पर्यटकों को अपने तरफ आकर्षित करती है। भवन में चार तल हैं। स्वाभाविक रूप ऊपर चढ़ने के लिए लोहे की बेहद खूबसूरत सीढ़ियां बनाई गई हैं। ये सीढ़ियां वास्तुकला का सुंदर नमूना पेश करती हैं। ब्रिटिश शासन के दौरान यह एक महत्त्वपूर्ण भवन था। यह भवन बाहर से जितना आकर्षक व खूबसूरत है उतना ही अंदर से भी खूबसूरत है। इसमें बाहर से रोशनी आने का बेहतर प्रबंध है।

भवन को दूसरे विभाग को दिया जाना : अंग्रेजों के समय के इस भवन को सरकार की तरफ से लोक सेवा विभाग को चलाने के लिए इसे किराए पर लिया गया था और उसके बाद रेलवे बोर्ड और कॉमर्स विभाग को भी इस भवन में चलाया गया था। वर्तमान में यहां केंद्र सरकार के कुछ कार्यालय चल रहे हैं। जिसमें आयकर विभाग, सीबीआई, पासपोर्ट ऑफिस जैसे कार्यालय शामिल हैं।

रेल भवन नई दिल्ली की रोचक जानकारी : मैं इस रेल भवन में कम से कम 10 बार गया हूँ। लेकिन मुझे हमेशा यह एक भूल भुलैया जैसा खूब मजेदार भवन जैसा ही लगा। जहाँ से चले वहीं घूम फिर कर फिर आ जाता था। फिलहाल नई दिल्ली का रेल भवन पाँच तल वाली बिल्डिंग है और प्रत्येक तल पर 75 कमरे हैं। इसके भवन का कमरा संख्या 3 अंक (डिजिट) में हैं। उसका पहला डिजिट उसका तल को प्रदर्शित करता है। स्वाभाविक रूप से इसमें कान्फ्रेंस हाल और स्टाफ कैंटीन हैं ही



एक बहुत बड़ा पुस्तकालय भी है। स्वाभाविक रूप से यहां हिंदी और अंग्रेजी की किताबें, पत्रिकाएं, अखबार उपलब्ध रहते हैं। रेल भवन के प्रशासनिक अधिकारी और पर्सनल अधिकारी, रेलवे बोर्ड के सेक्रेटरी होते हैं। रेल भवन के ग्राउंड तल पर एक पोस्ट ऑफिस भी स्थापित है और स्टाफ की सुविधा के लिए एक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की ब्रांच भी है। जब इतने सारे लोग हैं तो स्वाभाविक रूप से रेलवे का कंप्यूटर रिजर्वेशन सेंटर भी स्थापित है। साथ ही साथ खरीदारी करने के हिसाब से एक कोऑपरेटिव दुकान भी है। सबसे इंटरेस्टिंग बात है कि यहां पर एक पीएमओ ऑफिस की ब्रांच भी है, जिससे कि कागजी कार्यवाही आसानी से इस पीएमओ ब्रांच से हैंडल की जा सके। इसे बहुत प्लानिंग से और जानकारी के हिसाब से बनाया गया था। अब हेरिटेज की बात करें तो पहले यहां पर दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे का एक स्टीम इंजन रखा गया था। अभी-अभी इसे शिफ्ट कर के राष्ट्रीय रेल संग्रहालय में भेज दिया गया है और इसके स्थान पर वंदे भारत इंजन का मॉडल रख दिया गया है। साथ ही साथ गार्डन और तालाब और फौव्वारा को भी विकसित किया गया है। यह रायसीना रोड पर है। राष्ट्रपति भवन और संसद भवन इसके पास ही हैं। रेल भवन पूरी तरह से बनकर वर्ष 1962 में तैयार हुआ था, जबकि इसमें कार्यालय के कामकाज की शुरुआत 30 दिसंबर, 1960 से हो ही गई थी इसका उद्घाटन 30 दिसंबर, 1960 को उस समय के रेल मंत्री स्वर्गीय श्री जगजीवन राम जी ने किया था। स्वर्गीय श्री जगजीवन राम जी वर्ष 1956 से 1962 तक रेल मंत्री थे। उस समय श्री करनैल सिंह रेलवे बोर्ड के चेयरमैन थे। संसद भवन और राष्ट्रपति भवन पास में होने से रेल भवन की खूबसूरती भी अपने आप बढ़ जाती है।



झाँसी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और रानी लक्ष्मीबाई

श्री सुरेन्द्र अग्निहोत्री

भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का साक्षी झाँसी के ऐतिहासिक किले का निर्माण ओरछा नरेश वीर सिंह ने बंगरा की पहाड़ी पर सन् 1613 में कराया था। झाँसी का किला उत्तर प्रदेश ही नहीं भारत के सबसे बेहतरीन किलों में एक है। झाँसी को बलवंत नगर नाम से जाना जाता था। सन् 1742 में किले पर मराठा सूबेदार नारू शंकर का आधिपत्य हो गया। महारानी लक्ष्मीबाई के ससुर व महाराजा गंगाधर राव के पिता शिवराम हरि ने सन् 1794-1814 के दौरान नगर के चारों ओर परकोटा बनवाया। सन् 1853 में महाराजा गंगाधर राव की मृत्यु के बाद किला रानी के अधिकार में आ गया, लेकिन उन्होंने अंग्रेजों से स्वतंत्रता की खातिर किला छोड़ दिया तो अंग्रेजों ने अपना अधिकार कर लिया। साहित्यकार जानकी शरण वर्मा के अनुसार मराठी लेखक गोडसे ने अपनी पुस्तक 'माझा प्रवास' में लिखा है कि उत्तर हिंदुस्तान में झाँसी बड़ा ही सुंदर व रमणीक नगर है। पश्चिमी भाग में पहाड़ी पर किला बना है। उसके चारों ओर पानी से भरी खाई है और अंदर जाने का केवल एक रास्ता है। मुख्य महल सबसे ऊंचा है। बुर्जों के नीचे बड़े-बड़े तहखाने हैं। 15 एकड़ में फैला झाँसी दुर्ग सुदृढ़ एवं युद्धक रणनीति की दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है। 15 एकड़ भूमि पर मुख्य दुर्ग व दुर्ग प्राचीर निर्मित है। इसके दो तरफ रक्षा खाई तथा कुल 22 बुर्ज है। दुर्ग का निर्माण तीन चरणों में हुआ। बुन्देल कालीन, मराठा कालीन निर्माण के बाद अंग्रेजों ने कुछ छोटे-मोटे परिवर्तन अंग्रेजी वास्तुकला के अनुसार कराये थे। दुर्ग को बारादरी, शंकरगढ़ व पंचमहल भागों में विभाजित माना गया है। नगर के चारों ओर बनाए गए परकोटे में 10 द्वार व चार खिड़कियां बनाई गई हैं। इन दरवाजों को खन्डेरा गेट,दतिया, उन्नाव, झरना, लक्ष्मी, सागर, ओरछा, सैनवर और चांद दरवाजों के नाम से जाना जाता है। किले में रानी झाँसी गार्डन, शिव मंदिर और गुलाम गौस खान, मोती बाई व खुदा बक्श की मजार देखी जा सकती है। किले के अन्दर फांसी घर, तोप खाना, भण्डार गृह के अलावा एक गुप्त चोर रास्ता भी है इस रास्ते का प्रयोग युद्धकाल में किले से सुरक्षित बाहर निकलने के लिए किया जाता था। यह किला प्राचीन वैभव और पराक्रम का जीता जागता दस्तावेज है। लेखक दत्रात्रेय बलवंत पारसनीस ने सन् 1857 का युद्ध देखा था। उन्होने अपनी पुस्तक 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' में लिखा कि किले में जगह-जगह 51 बड़ी तोपें रखी थीं। अंग्रेज अफसर ह्यूरोज ने लिखा कि किले में युद्ध की तैयारी का काम जैसे मोर्चा बांधना, बारूद व गोला देने का काम स्त्रियां करती थीं। बलवंत नगर से झाँसी तक का इतिहास अपने आप में एक अलग इतिहास रहा है। झाँसी एक ऐसा अपभ्रंश शब्द है जिसे झांईसी कहा जाता था। यह नाम ओरछा नरेश ने दिया था। वक्त के कई थपेड़े सहने वाली झाँसी

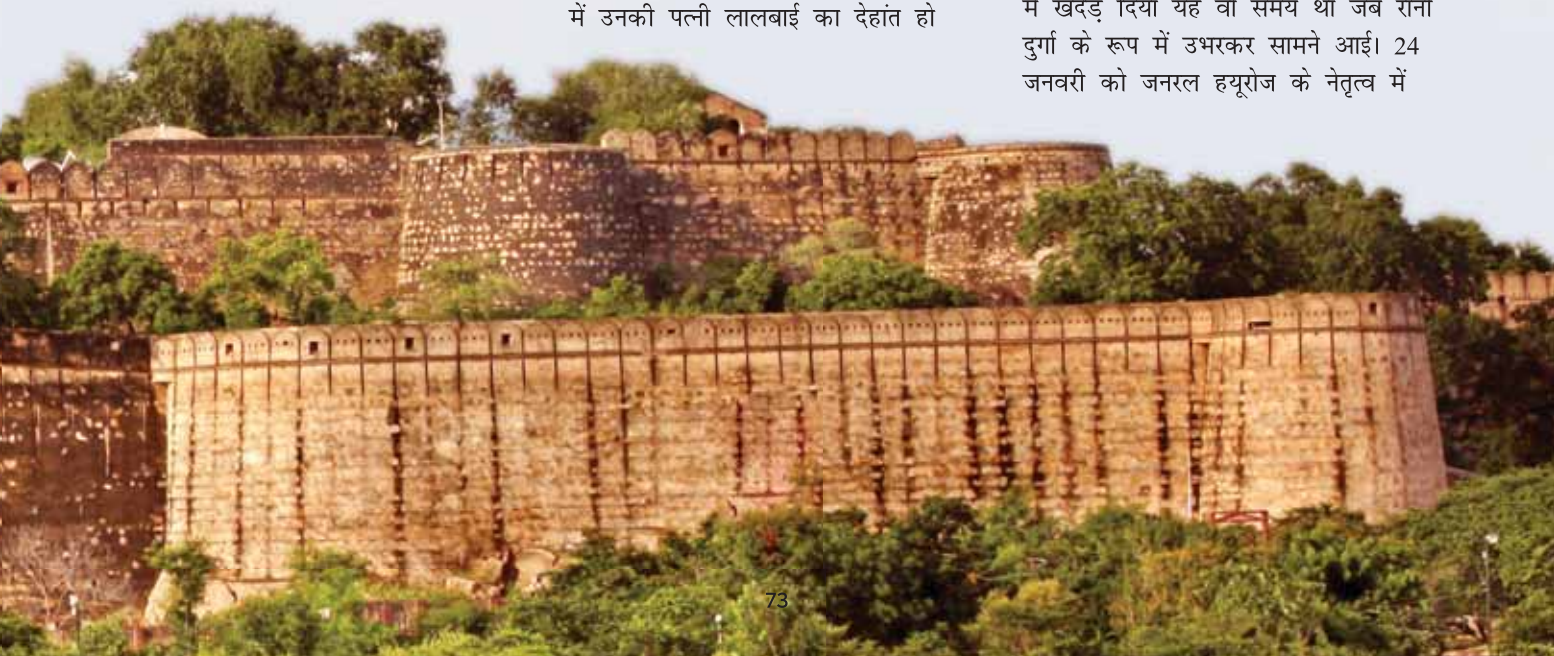




में कभी जंगली आदिवासी रहा करते थे। पाँचवी शताब्दी में झाँसी राजा हंस के अधिकार में आया और उनके पुत्र मिहिष गुला को हराकर एवं मारकर यहां पर राजा हर्षवर्धन ने अपना अधिकार जमा लिया। उस समय उत्तर भारत राजा हर्षवर्धन के अधीन था। सन् 1605 में अकबर की मौत के बाद वीर सिंह जू देव ओरछा के राजा बने जिन्हें झाँसी के नामकरण का संस्थापक कहा जाता है। झाँसी के नामकरण की कहानी भी काफी रोचक है। इतिहास कहता है कि एक दिन ओरछा के राजा वीर सिंह जू देव अपने मित्र जैतपुर नरेश के साथ किले के शिखर पर बैठे हुए थे तो वहां से उन्होंने झाँसी का किला इशारे से बताया जिस पर जैतपुर महाराज बोले कि यह किला तो झाईसी (परछाई सी) दिख रहा है। यह वह समय था जिससे किले के इर्द गिर्द क्षेत्र का नाम झांईसी पड़ गया था और अपभ्रंश होते-होते झाँसी हो गया।

मराठा शासन और विद्रोह

1822 में रामचंद्र राव को सूबेदार के पद से बदलकर अग्रेजों ने राजा कहलाने की उपाधि दी किन्तु उनका शासन वेहद कमजोर रहा और वह 20 अगस्त, 1835 को बिना किसी संतान के परलोक सिधार गए जिनकी समाधि आज खण्डेराव गेट बाहर तहसील के पास जीर्णशीर्ण हालत में पड़ी हुई है। रामचंद्र के मरने के बाद उनके दत्तक पुत्र कृष्णराव रिश्तेदार नारायण राव शिवराम भाऊ के दो उत्तराधिकारी रघुनाथ राव और गंगाधर राव थे। गंगाधर राव का शासन बहुत अच्छा रहा इसी दौर में उनकी पत्नी लालबाई का देहांत हो गया था। वह बेहद सदमे में थे झाँसी नरेश की दूसरी शादी बिठूर के मोरोपंत की लड़की छबीली मनूबाई से हुई। अपना राजवंश चलाने के लिए झाँसी नरेश ने गुरसराय के नेवालकर परिवार से एक लड़का गोद लिया जिसका नाम दामोदर राव रखा गया। 21 नवम्बर, 1853 में गंगाधर राव की मौत हो गई और झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई पर एक बार फिर तुषारापात हो गया। अंग्रेजों ने दामोदर राव को झाँसी का राजा मानने से इंकार कर दिया और झाँसी पर कब्जे की बात कहने लगे तभी रानी ने कहा कि मै अपनी झाँसी नहीं दूंगी। कोई उत्तराधिकारी न होने की वजह से झाँसी राज्य को ब्रिटिश सरकार ने ले लिया और रानी लक्ष्मीबाई को खर्च चलाने के लिए पाँच हजार रुपये मासिक पेंशन बांध दी। सन् 1854 से 57 तक झाँसी में अशांति का दौर रहा। 1 जून, 1857 से झाँसी में विद्रोह शुरू हुआ। 6 जून को रानी और विद्रोहियों की एक सभा हुई जिसमें तय किया गया कि महल में रहने वाले अंग्रेजों को मार दिया जाए। बारहवीं रेजीमेंट कैप्टन डनलप के संरक्षण में थे। जेल गार्ड बक्शीश अली ने कैप्टन स्केन को मार गिराया पूरे नगर में कत्लेआम मचा था। जहाँ आज पुराना बस स्टैंड है वहां पर अंग्रेजों का मेमोरियल बना हुआ है 11 जून तक यह विद्रोह चला। 10 अगस्त को ओरछा के दीवान ने झाँसी पर चढ़ाई कर दी बानपुर के राजा के हस्तक्षेप पर दीवान नत्थे खां को धेराबंदी हटाना पड़ी। 1 मार्च को ओरछा की फौज पर आक्रमण करके बेतवा और धसान के क्षेत्र में खदेड़ दिया यह वो समय था जब रानी दुर्गा के रूप में उभरकर सामने आई। 24 जनवरी को जनरल हयूरोज के नेतृत्व में



अंग्रेजी सेना ने एक बार फिर झाँसी पर चढ़ाई शुरू की और 21 मार्च से हयुरोज ने झाँसी का घेरा शुरू किया। अंग्रेजी सेना के सर्जन डॉक्टर सिल्वेस्टर ने लिखा है कि ग्यारह मील क्षेत्रफल के परकोटे पर हर तरफ तोपें थीं। 21 मार्च को एक और दस्ता चन्देरी से आया। बेगम भोपाल ने तोपखाना भेजा। अंग्रेजी सेना ने खाइयां खोदकर तोपों को लगाया। आक्रमण दो ओर से किया गया। शहर के पश्चिम की तरफ से जीवनशाह के टीले पर तोपें चढ़ाकर किले में आक्रमण किया गया जिनके गोले झाँसी के किले के भीतर गिरते थे। नत्थे खां के आक्रमण का भी यही रुख था। रानी का एक ही नारा था–''मैं अपनी झाँसी ना देहौं'' (मैं अपनी झाँसी नहीं दूंगी) 'लक्ष्मी बाई रासो' के रचयिता मदनेश जी ने उनकी निष्ठा, लक्ष्य और समर्पण को इन शब्दों में लिखा है–

ना जान रानी मोय, सब राज तुमरो होय।

मोय दूर भये दियौ खान, अख्यार तुमहि सबान।।

सुन बाई लक्ष्मी बैन, भर आये सबके नैन।

ना मातु बिलखुं होउ, हमे जान निज सुत सोउ।।

22 मार्च को किले की घेराबंदी कर आक्रमण कर दिया गया। इस हमले में रानी के कई जांबाज सिपाही मारे गए जिसमें गुलाम गौस खां, खुदा बख्श, मोतीबाई जैसे वीर और वीरांगनाएं शामिल थे हमले के बाद रानी बची हुई फौज को लेकर कालपी की ओर निकल गई और ग्वालियर पहुँच गई यहां पर उन्होंने सिंधिया नरेश से अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई में सहयोग माँगा जिसे सिंधिया ने इंकार कर दिया और ग्वालियर में युद्ध छिड़ गया और सिंधिया आगरा की ओर भाग गए। इसके बाद फूलबाग में एक शानदार जश्न मनाया जा रहा था, जिसको देखकर रानी क्रोधित हो गई और उन्होने कहा कि यह समय नाचने गाने का नहीं है बल्कि रणनीति बनाने का है। उसी समय अंग्रेजों ने एक बार फिर रानी की सेना पर हमला कर दिया। रानी पूरी बहादुरी के साथ लड़ी। उनका घोड़ा सोना नाले के पास जख्मी होकर गिर गया और अंग्रेजों की रानी से काफी मुठभेड़ हो गई। रानी जख्मी हो गई जिससे उनकी मौत हो गई। ''बुन्देलों हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी'' सुभद्राकुमारी चौहान की ये पंक्तियाँ बुन्देलखंड के गढ़ माने जाने वाले झाँसी के संघर्षशील इतिहास को सटीक परिभाषित करती हैं। झाँसी नगर के घर-घर में रानी लक्ष्मीबाई की वीरता के किस्से सुनाए जाते हैं।

रानी लक्ष्मीबाई-एक गाथा

खलक खुदा का, मुल्क बादशाह का और अमल लक्ष्मीबाई का उद्घोष करके अंग्रेजों को भारत से भगाने के लिए 1857 की क्रान्ति की चिंगारी 5 जून को झाँसी में फूटी। इस क्रान्ति की महान नायिका झाँसी की रानी ने अपनी वीरता और अदम साहस के बलपर भारतीय इतिहास में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में सदा सदा के लिए अंकित करा दिया। डी0बी0 पारसणीस की मराठी पुस्तक के आधार पर पहले रानी लक्ष्मीबाई की जन्मतिथि 19 नवम्बर 1835 मानी जाती थी जो भारत सरकार के प्रकाशन-डॉ. पी.एन. चोपड़ा की पुस्तक 'हू इज हू आफ इण्डियन मार्टर्स' में भी अंकित है। मनु बहुत छोटी थी तभी उनकी माँ नही रहीं। परिणामत: मोरोपन्त ने विशेष जतन से मनु का पोषण किया। उधर उनके आश्रयदाता चिमनाजी काशी में बीमार पड़ गये। नाना साहब से मेल हो जाने पर वे कानपुर के पास बिठूर में आकर रहने लगे। मोरोपंत भी उनके साथ बिठूर आ गये और चिमनाजी के देहान्त के पश्चात् वे नाना के आश्रय में हो गये। इस प्रकार मनु के बचपन का अधिकांश भाग बिठूर में नाना साहब, राव साहब, तात्या टोपे आदि के साथ कटा। रानी को उनके साथी स्नेह से 'छबीली' कहते थे क्योंकि बालिका शस्त्र विद्या, युद्ध संचालन तथा घुड़सवारी में सदा आगे रहना चाहती थी। उसकी शिक्षा-दीक्षा इन्हीं नर-पुंगवों के साथ हुई जो बाद में अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में उसके साथ रहे। नौ वर्षो तक रानी का वैवाहिक जीवन सुख पूर्वक बीता। सन् 1851 में रानी को एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। राजा गंगाधर बड़े गुण ग्राहक एवं कला पारखी थे। पुत्र जन्म पर खूब उत्सव हुए परन्तु यह भाग्य की विडम्बना थी कि तीन माह बाद नवजात शिशु चल बसा। राजा इस शोक को न सह सके और उनकी अवस्था बिगड़ती गई। उस समय देश आक्रान्ता फिरंगियों की साम्राज्यवादी नीति खुलकर खेल रही थी। गवर्नर

जनरल लार्ड डलहौजी ने जिन राजाओं को सीधी सन्तान न थी, उन्हें हड़पने का अभियान चला रखा था। अत: झाँसी के सम्बन्ध में ऐसा ही निर्देश उसने 11 नवम्बर, 53 को दे दिया था। उसे हिन्दू शास्त्रों के दत्तक पुत्र विधान का कोई सम्मान न था। रानी को विदेशियों की नैतिकता में किंचित आस्था शेष थी। अत: 21 दिसम्बर, 1854 को उन्होंने इंग्लैंड के कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स को अपने दत्तक पुत्र की ओर से आवेदन पत्र भेजा। किन्तु उसे भी ठुकरा दिया गया। इस पैरवी में रानी का झाँसी गजेटियर के अनुसार साठ हजार रुपया व्यर्थ चला गया। राजा की मृत्यु के पश्चात जब रानी ने विधवा की भांति काशी जाकर केश मुड़ाने की अनुमति चाही तो यह अस्वीकृत हो गया। अंग्रेजों को संदेह था कि रानी रास्ते में अन्य





मराठों तथा देशी राजाओं से सम्पर्क कर सकती है। राज्य के विलय के समय राजा गंगाधर राव के कोष में 6 लाख रुपये थे जो दामोदर राव के नाम से जमा किए गये। रानी इसमें से एक लाख रूपये कुमार के यज्ञोपवीत संस्कार हेतु माँगा। हीला-हवाली के बाद यह राशि इस शर्त पर स्वीकार हुई कि रानी चार जमानतदार प्रस्तुत करें और बालिग होने पर कुमार यदि रुपये माँगे तो रानी को देना होगा। रानी के खजाने के लिए यह शर्तबन्दी खुल्लम-खुल्ला रानी को अपमानित करने के लिए की गई। झाँसी में अंग्रेजी राज होते ही गोवध आरम्भ हो गया। इससे रानी और प्रजा को मर्मान्तक पीड़ा हुई। नागरिकों द्वारा प्रेषित गोवध निषेध का प्रार्थना पत्र फिरंगियों ने ठुकरा दिया। विद्रोही सेना ने रानी महल में रानी को घेर लिया और नेतृत्व एवं धन माँगा। रानी के पास पैसा न था तथापि उन्होंने अपने आभूषण उन्हें दे दिए। ''जून को 500 विद्रोही युद्ध सामग्री और खजाना लेकर झाँसी पर रानी के राज की घोषणा करते हुए दिल्ली कूच कर गये।'' इस प्रकार रानी को झाँसी का शासन सूत्र प्राप्त हो गया। रानी ने प्रबल शत्रु के होते हुए भी सरफरोशी की पूरी तैयारी कर ली थी। उनका उद्देश्य क्या था और तैयारी किस प्रकार की थी इसका आभास बानपुर के राजा मर्दन सिंह को कुवार सुदी 14 संवत 1914 (1857 ई.) के उनके पत्र से मिलता है जो इस प्रकार है-श्री महाराजा श्री राजा मर्दन सिंह बहादुर जू देव एते श्री महारानी श्री रानी लक्ष्मीबाई जू देवि कै बाचनै आपर अपुन के समाचार भले चाहिजें, इहां के समाचार भले है, आपर पाती दिवान गनेश जू ल आये सो पढ़कर खुई भई। आपर अपुनकी व हमारी राजा शाहगढ़ और नाना साहब व तात्या टोपे की जो सलाह परी थी कै सुराज भयो चाहिजें, अंग्रेजन को शासन न भओं चाहिजें, ऐसी हमारी राय है के सुराज होवो चाहिजें, भारत अपनी ही देश है और बानपुर के किले में अपुन ने तोपें व गोला ढरवाये है। ई बात का विदेशियों का जाहर नही भजो चाहिजें आपसे टीकमगढ़ की रानी लड़ई सरकार व नत्थे खां दीवान विदेशियों की मदद में है, ई बात में ज्यादा खियाल रखने है और इह बात जो है सो दिवान गनेशजू जाहर कर हे सो जानवी, पाती समाचार देवे में आवे-मु. झाँसी'' मुहर।

उक्त पत्र से स्पष्ट है कि पूर्ण राष्ट्रीयता की भावना से रानी अन्य क्रान्तिकारियों से परामर्श कर रही थी और युद्ध की तैयारी की इच्छाशक्ति कितनी उच्च थी इसका परिचय कालपी से राजा मर्दन सिंह को लिखे पत्र की इन पंक्तियों से मिलता है-''सो आप सीधे नोटघाट पर सर हयूरोज की फौज को मारत खेबड़त कालपी कूच करें इहां से हम आप सब जने मिल के ग्वालियर में अंगेरजन पर धावा करें, जब देर न करना चाहिजें।'' उस उदात्त मना रानी ने झाँसी वासियों में प्राण फूँक दिए थे। छोटी समझी जाने वाली जातियों के लोग क्षत्रियों की भांति लड़े। देश प्रेम एक नशा बन गया था। पुरुषों के साथ स्त्रियों की सेना खड़ी हो गई थी। जिनके नाम इतिहास बनकर झाँसी के गली कूंचों में आज भी गूँज रहे हैं। उपन्यास सम्राट वृन्दावनलाल वर्मा तथा क्रांतिवीर डॉ. भगवान दास माहौर ने लिखा है-कहते हैं जूही, मोती बाई, सुन्दर-मुन्दर आदि राजा गंगाधर राव के दरबार की नर्तकियां थी जिनको रानी के सानिध्य ने मरना-मारना सिखा दिया और वे सब स्वतंत्रता की वेदी पर बलिदान हुई। मथुरा, बेनी आदि दूसरी सहेलियां थी।

सूचना

'भारतीय रेल' पत्रिका में लेखक के नाम के साथ प्रकाशित हुए लेख (फोटोग्राफ के साथ), लेखक द्वारा उपलब्ध करवाए जाते हैं। भविष्य में लेख तथा फोटोग्राफ्स से सम्बन्धित कॉपी राइट्स के उल्लंघन तथा अन्य किसी भी प्रकार के विवाद के लिए लेखक संपूर्ण रूप से जिम्मेदार होगा। रेल मंत्रालय या संपादकीय टीम किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होगी। लेख में व्यक्त किए गए विचार लेखक के निजी विचार हैं, इनसे संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है। *-संपादक*

अपना ज्ञान टटोलें

1 हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित हुए जी-20 सम्मेलन में इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध करवाने वाली भारतीय रेल की कम्पनी ?

(क) रेलटेल | (ख) क्रीस | (ग) आर.वी.एन.एल | (घ) डी.एफसी

2 19वें एशियाई खेलों में भारतीय रेल के खिलाड़ियों ने कुल कितने पदक अपने नाम किया था ?

(क) 12 | (ख) 15 | (ग) 22 | (घ) 26

3 हाल ही में भारतीय रेल के किस क्रिकेटर ने सबसे तेज 50 रन बनाए हैं ?

(क) रवि कुमार | (ख) आशुतोष शर्मा | (ग) कपिल सिंह | (घ) बजरंग पुनिया

4 15 अक्टूबर, 2023 को कौन-से स्टेशन ने अपना 115वां स्थापना दिवस मनाया ?

(क) हरिद्वार | (ख) नई दिल्ली | (ग) शिमला | (घ) उटी

5 हाल ही में रेलमंत्री ने इस Concept train के स्लीपर वर्जन की तसवीरें ट्वीटर पर साझा की थीं ?

(क) वंदे भारत | (ख) तेजस | (ग) विस्टाडोम | (घ) गरीब रथ

6 विदेशी पर्यटक कितने दिन पहले अपनी ऑनलाइन टिकट बुक कर सकते हैं ?

(क) 90 | (ख) 200 | (ग) 365 | (घ) 45

7 आर.पी.एफ द्वारा बच्चों को बचाने के लिए चलाये जाने वाला अभियान-ऑपरेशन.....

(क) बच्चे | (ख) नन्हे फरिश्ते | (ग) सेव चिल्ड्रन | (घ) सेवा

8 इस क्षेत्रीय रेलवे का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है ?

(क) पूर्वोत्तर रेलवे | (ख) उत्तर मध्य रेलवे | (ग) उत्तर पश्चिम रेलवे | (घ) उत्तर रेलवे

9 रायबरेली स्थित रेल डिब्बा कारखाना का नाम ?

(क) आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना | (ख) बनारस लोकोमोटिव | (ग) आर.डी.एस.ओ. | (घ) आर.सी.एफ.

10 भारतीय रेल के अराजपत्रित कर्मचारियों को कितने दिन का बोनस दिया गया है ?

(क) 30 | (ख) 45 | (ग) 78 | (घ) 90

1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ख) 5. (क) 6. (ग) 7. (घ) 8. (ख) 9. (क) 10. (ग)

सही उत्तर

रेल, पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोए

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र हिंदी मासिक पत्रिका



भारतीय रेल

की सदस्यता अब ऑनलाइन भी उपलब्ध

विज़िट करें

www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home/hn

क्यूआर कोड स्कैन करें

सदस्यता शुल्क

मद		ऑफलाइन सदस्यता शुल्क (₹)	ऑनलाइन सदस्यता शुल्क (₹)
एक प्रति (मासिक अंक)		20	-
एक प्रति (विशेषांक)		70	-
वार्षिक सदस्यता (सर्व साधारण)	एक वर्ष	250	263
	दो वर्ष	460	483
	तीन वर्ष	675	709
वार्षिक सदस्यता (रेलकर्मी)	एक वर्ष	200	210
	दो वर्ष	370	389
	तीन वर्ष	540	567
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) सी-मेल द्वारा		1,250	1,313
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) एयर-मेल द्वारा		2,500	2,625

(वार्षिक सदस्यता शुल्क विशेषांक के साथ)

भुगतान का माध्यम

ऑनलाइन सदस्य www.irctctourism.com/IRBRMag पर सदस्यता शुल्क का भुगतान कर सकते हैं।

ऑफलाइन डी.डी./चेक/म.ओ./पो.ओ./नगद देय-'व्यापार प्रबंधक, भारतीय रेल, नई दिल्ली'

सदस्यता फॉर्म

नाम .....

पता .....

पोस्ट..... जिला.....

राज्य..... पिन कोड .....

मोबाइल ..... ई-मेल .....

रेल कर्मचारी: हाँ/नहीं वर्तमान सदस्यता (यदि हो तो) संख्या ..... तारीख .....

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: व्यापार प्रबंधक, कमरा नं. 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001,
टेलीफोन: 011-47845089, 45089 (रेल) **bmpr310rb@gmail.com, irbrhelp@gmail.com**

प्रिय विज्ञापनदाता

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र मासिक हिन्दी पत्रिका

भारतीय रेल

में अपने विज्ञापन देकर लाखों उपभोक्ताओं तक अपने उत्पादों की पहुँच बनाए

विज्ञापन दरें

(विज्ञापन चार कलर में)

नीचे दी गई दरों के साथ 5 प्रतिशत की जीएसटी/आइजीएसटी प्राप्य होगी

विवरण	विशेष दर (वार्षिक अंक) (₹)	सामान्य अंक (मासिक दरें)	
		सामान्य दरें (₹)	अनुबंधित दरें (₹)
बैक कवर	13,300	11,400	10,450
सेकेण्ड कवर	12,350	10,450	9,500
थर्ड कवर	11,400	9,500	8,550
पूरा पृष्ठ (विशेष स्थिति, जैसे टेक्स्ट के बाद में)	9,500	8,550	7,600
पूरा पृष्ठ	8,550	7,600	6,650
आधा पृष्ठ	6,650	5,130	4,180
सेंटर स्प्रेड	17,000	15,000	13,300
सेंटर स्प्रेड (दो पेज इकट्ठे) (स्पेशल पोजीशन)	18,500	16,500	14,700

* तीन महीने या ज्यादा समय के लिए लगातार अथवा बारी-बारी देने पर अनुबंधित दरें लागू।

तकनीकी विवरण

पत्रिका का आकार

28 X 20.5 सेमी

छपाई क्षेत्र

23 X 16.5 सेमी

भुगतान का माध्यम

'व्यापार प्रबंधक, भारतीय रेल, नई दिल्ली' के पक्ष में डिमाण्ड ड्राफ्ट अथवा नकद राशि रूम नं. 310, रेल भवन, नई दिल्ली-110 001 में जमा की जा सकती है

विज्ञापन सामग्री

ई-मेल, आर्टपुल, सीडी

पत्रिका का प्रसार

समग्र देश में

संपर्ककरें:

व्यापार प्रबंधक

310, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001,

टेलिफोन: 011-233822531, 23303665, 23304456

bmpr310rb@gmail.com

FLUID CONTROLS®
ENGINEERING CONNECTIONS EVERYDAY



PERFORMANCE ENGINEERING FOR RAIL & METRO BRAKE PIPING CONNECTIONS



Fluid Controls Private Limited has over 45 years of experience in engineering connections for Rail & Metro brake piping assemblies. Certified for the International Railway Industry Standard (IRIS – ISO/TS 22163:2017), Aerospace AS9100 and ISO/IEC 17025:2017 for our laboratory, Fluid Controls offers comprehensive solutions – from design, engineering, testing and on-site installation services to the supply of high-performance connectors, isolating cocks, cleats and tube & hose assemblies.

WE HAVE HERITAGE

45+ YEARS OF EXPERIENCE • IRIS & AS9100 CERTIFIED
IN-HOUSE R&D • OVER 30 MILLION CONNECTORS INSTALLED
APPROVED BY MAJOR ROLLING STOCK MANUFACTURERS

+91-22-68238000 railways@fluidcontrols.com fluidcontrols.com

पंजीयन संख्या : दिल्ली पोस्टल नं. डी.एल. (एन.डी.)-11/6031/2021-22-2023
आर.एन.आई. रजिस्टर्ड नं. 14427/1960
आई.एस.एस.एन. 2457-0001
दिनांक 08 को प्रकाशित तथा दिनांक 10-11 को प्रेषित

The Future of
Wheel Machining is here

CNC Underfloor Wheel Lathe



Capable of machining

- Individual wheels
- Loose Bogies
- Wheelsets of Locomotives, Coaches, Wagons, Trams & Metros

Available with Industry 4.0 features like -

- Real time monitoring.
- Digital Record Keeping.
- Remote maintenance support.
- Wheelset database management system, etc.

CNC Integrated measurement
for enhanced accuracies & economical depth of cut.

Capable of Brake Disc Machining

Tandem Version
(Simultaneous reprofiling of two wheelsets) also available on request.

hyt

HYT ENGINEERING COMPANY PVT. LTD.

Sales Office: 17-18, Ground Floor, Hans Bhawan, Bahadur Shah Zafar Marg, I.T.O., New Delhi - 110 002, India. Phone: + 91 11 4320 2200/01

Work: 29/10, 29/10/1, 29/10/2, D-II Block, MIDC, Chinchwad, Pune - 411 019, India. Phone: + 91 20 6634 3900

www.hytengineering.com I info@hytengineering.com

मुद्रक व प्रकाशक : **ललित कुमार धनकड़** द्वारा रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के लिए मैसर्स जे.के. ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा.लि., बी-278, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-20 में मुद्रित व 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली से प्रकाशित। संपादक : **योगेश अवस्थी**